श्री रत्नचन्द्र पद्य मुक्तावली

रचनाकार

आचार्यप्रवर श्री "रत्नचन्द्रजी" महाराज

श्री मोतीलालजी शातीलालजी गांधी
पीपाड वालो की ओर से सादर भेंट

प्रकाशक
सम्यग्-ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

प्राप्ति स्थान—
जिनवाणी कार्यालय जयपुर
सम्यग्-ज्ञान प्रचारक मण्डल
शाखा कार्यालय जोधपुर

प्रतियाँ १०००

मूल्य-बारह आना

वीर सं० २४८६
विक्रम सं० २०१६
फरवरी १९६०

मुद्रक—
जिनवाणी प्रिन्टर्स
जयपुर

दो शब्द

प्रस्तुत पद्यावली के रचयिता स्वनामधन्य पूज्य आचार्य श्री रत्नचन्द्रजी म० हैं। आप का जन्म वि० स० १८३४ वै० सुद पचमी को जयपुर राज्यान्तर्गत कुड नामक एक छ टे से गाव में हुआ था। आप के पिता का शुभ नाम लालचन्द्रजी तथा माता का नाम हीरादेवी था। आप वड़जात्या गोत्रीय श्रावगी थे। आपकी शरीर रचना सुन्दर और आकर्षक थी, जिससे पारिवारिक जनों एवं कुटुम्बियों को बड़ा ही गौरव था। यही कारण था कि आपका नाम रत्नचन्द्र रक्खा गया।

जब आप कुछ बडे हुए तो नागोर निवासी सेठ गगारामजी बड़जात्या पुत्र न होने के कारण आपको दत्तक के रूप से अपने यहा ले आए और बड़े लाड़ प्यार से रखने लगे।

कालकी गति विचित्र है-यह लाड़ प्यार कुछ अधिक दिनों तक भी नहीं चल पाया कि एक दिन अकस्मात् आपके पिता गगारामजी का देहावसान हो गया। रत्नचन्द्रजी की उस समय अवस्था बहुत छोटी थी और वे प्राथमिक पाठशाला में पढ़ने के लिए भर्ती हुए थे। किन्तु पढ़ने के बजाय खेल कूद में ही मन अधिक लगता था।

उस समय नागोर में पू० श्री गुमानचन्द्रजी म० सा० विराजमान थे। समय २ पर आप सन्त सेवा में भी आया जाया करते और अवस्था के अनुकूल धर्मकार्यों में रसलेते थे। एकरात में आप सन्त

सेवा में गए वहां प्रतिक्रमण के बाद किसी ने—"हरिया ने रंग भरिया हो कीजा जिन निरखू नैणा सू । मार दिल बसीया जिन देव" यह स्तवन पढ़ा । इसको आपने एकबार सुनकर दुबारा सुस्वर में गाया । आपका स्वर इतना मीठा और सुभावना था कि म० साहब ने आपका परिचय पूछा। आपने अपना परिचय और नाम बताया गुरुमहाराज ने कहा कि तुम्हारे जैसे साधु बने तो जिन शासन की बड़ी प्रभावना कर सकते है । यह सुनकर आप बोले कि महापुरुषों का यही आशीर्वाद है तो मैं साधु अवश्य बनूंगा।

आपको यह अच्छी तरह मालूम था कि साधुता ग्रहण की आज्ञा माताजी नहीं दे सकती, क्योंकि उनके निर-संतान होने के कारण ही आप यहां दत्तक आए थे और आपसे उनकी बड़ी २ आशाएं थी; जो किसी माता को अपने पुत्र से हो सकती है । अब आपने अपने काका माधूरामजी से पूछा कि आपकी आज्ञा हो तो मैं आचार्य श्री गुमानचन्द्रजी म के पास संयम ग्रहण करू । यह सुनकर माधूरामजी ने कहा संयम साधना कोई आसान काम नहीं है । बड़े २ हिम्मतवाले भी उसकी आराधना में सिहर उठते हैं । तुम्हारी क्या अवस्था और व्यवस्था है कि तुम इसे पार करोगे । इस पर आपने कहा कि आप आज्ञा देवें तो मैं इस कार्य में अवश्य सफलता प्राप्त करूंगा ऐसा मेरा विश्वास है । आपके दृढ निश्चय और साहस को देखकर माधूरामजी ने आज्ञा प्रदान करदी । उन का पूरा सहयोग रहा । उन्होंने कहा पीछे का मैं निपट लूंगा ।

चाचाजी की उत्साहवर्धक बात सुनकर आपका मन मयूर नाच उठा। आप अपने सकल्प को पूर्ण करने चल दिये। जोधपुर के पास मडोर मे जो कभी मारवाड़ की राजधानी का स्थान था मुनि श्री लक्ष्मीचन्द्रजी म० के पास वि० स० १८४८ वैसाख शु० पचमी को नागादरी के स्थान पर आपने श्रमण दीक्षा ग्रहण करली। दीक्षा के समय आपकी अवस्था मात्र चौदह वर्ष की थी। ऐसी छोटी आयु में जो खेल कूद की आयु होती है, आपने मबसे मुह मोड कर योग का कठिनतम जीवन धारण कर लिया। यह पराकाष्ठा का साहस और अनुपम त्याग का अनूठा उदाहरण है।

आपकी बुद्धि बड़ी प्रखर थी। किसी भी विषय का अभ्यास आपके लिए सरल और सहज था। बहुत थोड़े समय में ही आपने साधु जीवन के विधि विधान का ज्ञान प्राप्त कर लिया।

दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात मडोर से विहार कर आप जोधपुर पहुँचे, जहाँ पू० श्री दुर्गादासजी म० कुछ वर्षों से स्थिरवास विरजमान थे। परमस्थविर मुनि श्री दुर्गादासजी म० ने मुनि श्री लक्ष्मीचन्दजी म० के साथ आपको मेवाड मालवा की ओर विहार की आज्ञा प्रदान की, तदनुसार गुरु महाराज की सम्मति पाकर सब सन्तों ने सोत्सव होकर मेवाड की ओर विहार किया और वि० स० १८४६ का चातुर्मास आपने भीलवाड़ा (मेवाड़) में किया। वहा पर आपने भगवान नेमनाथस्वामी की स्तुति रचना की।

आपको बचपन से काव्य कला का शौक था जो आपके जीवन में क्रमशः बढ़ता ही गया। इस पद्यावली के अतिरिक्त भी आपने कई छोटे मोटे चरित्र लिखे। जो संख्या में १३ से अधिक हैं। वि० सं० १८८२ में आषाढ़ शु० १३ को आप आचार्य पद पर आसीन हुए और वि० सं० १९०२ ज्येष्ठ शुक्ला चतुर्दशी को जोधपुर नगर में आपका स्वर्गवास हुआ। लघुवय में दीक्षित होकर भी आपने जैनधर्म की बड़ा प्रभावना की एवं एक महान प्रभावशाली आचार्य हुए। वस्तुतः रत्न और चन्द्र की तरह आपका रत्नचन्द्र नाम सदा सार्थक और अनमोल रहेगा।

आपके पदों को तीन भागों में बांटा गया है—स्तुति औपदेशिक और धर्म कथा। स्तुति प्रकरण में अवसर्पिणी काल में होने वाले तीर्थंकर जैसे भगवान ऋषभदेवजी, धर्मनाथजी शान्तिनाथ जी नेमनाथजी पारसनाथजी, महावीरस्वामीजी तथा महाविदेह में विचरण करने वाले वर्तमान तीर्थंकर सीमंधरस्वामीजी आदि के स्तुति पद हैं। इनमें नेमीनाथजी और पारसनाथजी के पद विशेष संख्या में हैं।

भाव विभोर या तन्मय होकर भगवान का गुणगान करना यह वास्तविक या गुणस्तुति है। इस स्तुति के द्वारा भक्त अपनी सपूज्य की महनीय की महत्ता विशेषता और अतिशयता के सम्मुख सकोप भावों से समर्पण कर उस हृदय बन जाता है। भावविह्वल भक्त अपनी एकान्त भक्ति और निर्मलभक्ता से उस विराट चिरन्तन और शुद्ध बुद्ध

मुक्त के प्रति अपना तादात्म्य या स्नेहानुबन्ध प्रगट करते हुए विराटता की कामना करता है । जैसे बिन्दु सरित् प्रवाह के द्वारा सिन्धु में मिलकर सिन्धुत्व का पद पालेती है वैसे भक्त भी अपनी निश्छल भक्ति रूप स्तुति से भगवान बन जाता है। जब लौकिक स्तुति भी फलदायक होती है तब अलौकिक स्तुति की तो बात ही क्या ? स्तुति द्वारा भगवत् सान्निध्य लोह का पारस-मणि के स्पर्श तुल्य है। इस प्रकार स्तुति प्रकरण में आपने गुणातीत के अलौकिक गुणों का मधुर गायन प्रस्तुत किया है जो हृदयाकर्षक और मधुरता से ओत प्रोत है।

दूसरा औपदेशिक भाग है। इसमें आपने उपदेशों के द्वारा पुण्य पाप और आत्मा परमात्मा तथा बन्ध मोक्षादि भावों का सुन्दर चित्रण किया है। साधु संघ की आचारशुद्धि के लिए भी, आपने प्रबल प्रेरणा की है। जिस प्रकार शुभ कर्म का परिणाम शुभ और अशुभ का अशुभ होता है तथा कषायादि सेवन से आत्मा की ज्योति मंद पड़ती और त्याग से ज्योति प्रज्वलित होती है आदि भावों का प्रदर्शन बड़े ही सुन्दर ढंग से किया है। आचार-निष्ठ साधक के उपदेश का प्रभाव मन पर गहरा असर डालता है क्योंकि वह एक अनुभूत सत्य और शिवरूप होता है। यही कारण है कि आपके औपदेशिक पद अर्जुन के तीर की तरह मन पर गहरे असर डालने वाले हैं। गहन से गहन विषयों को भी आप अपने उपदेश के द्वारा सरलता से हृदयगम कराने में सफल सिद्ध हुए हैं वस्तुतः आपकी पैनी दृष्टि और सद्भावना सराहनीय है।

तीसरा धर्मकथा विभाग—जीव को आदर्श और वैराग्य बनाने वाली पद्यात्मक कथाएं हैं। एक तो योंही कथाएं रोचक होती है और अगर वह पद्य में हो तो फिर क्या कहना ? इस विभाग में भी आपने लोकहित एवं आत्महित के लिए ऐसे २ रोचक कथाओं का चित्रण किया है जो एक से एक बढ़कर आत्म कल्याण में सहायक सिद्ध हैं।

इस तरह यह पद्यावली आपकी साधु भावना का एक त्रिरत्न पिटक है जो पद्य प्रेमी पाठकों के लिए परम उपयोगी सिद्ध होगा। विशेष इस की समीक्षा तो पाठक का अन्तःकरण ही करेगा किन्तु इतना मुझे कहने में कुछ संकोच नहीं कि यह पद्यावली उस साधु हृदय की वाणी या भावना है जिसका उद्देश्य सदा लोकहिताय ही रहा है। अतः यह मुमुक्षु जनों के लिए हितावह और लाभदायक सिद्ध होगी इसमें कुछ संशय नहीं।

पांडुलिपि—जैन स्तुत, श्रावक नित्य नियम सामायिक मंगल प्रार्थना आदि पुस्तकों में आचार्य श्री रत्नचन्द्रजी म० के कुछ स्तुति रूप आध्यात्मिक पद प्रकाशित हुए हैं जिनको भक्त लोग सामायिक व नित्यनियम के समय भक्ति रस में विभोर होकर पढ़ते हुए देखे जाते हैं—उनको देखकर मनमें संकल्प पैदा हुआ कि आचार्य श्री के सभी पदों को एक साथ संकलन कर प्रकाश में लाया जाय तो पाठकों को पढ़ने के लिए सुलभ हो जायगा। वि० सं० २ १६ का चातुर्मास भीनासर गंगासर में समाप्त कर जब फाल्गुण बदी में वयोवृद्ध गणेशीलालजी म० तथा

उपाध्याय श्री हस्तिमलजी म० सा० आदि अजमेर में विराजते थे तब स्थविर मुनि श्री अमरचन्दजी म० के साथ अजमेर जाने का अवसर मिला। उस समय वहाँ पर विराजमान स्वर्गीय महासतीजी श्री छोगाजी म० की सुशिष्या श्री केवलकु वरजी तथा सु दरकु वरजी से पूछताछ करने पर ज्ञात हुआ कि आचार्य श्री के रचित सब ही स्तवनों का संग्रह उनके पास विद्यमान है। वि० स० २६१४ के अजमेर चातुर्मास के समय इसकी पाण्डु लिपि कराने का विचार हुआ। इसी विचार को कार्य रूप मे परिणत करने के लिए स्थानीय 'जीत ज्योति' के सपादक श्री जीतमलजी चौपडा को कहा गया उन्होंने प्रतिदिन एक घटा अवकाश देकर तदनुसार लगभग ३ महीने में इस समह को तीन विभागों (१) स्तुति विभाग (२) औपदेशिक विभाग एव (३) चरित्र विभाग—लिखकर तैयार किया।

प्रतियों का परिचय—

(१) आचार्य श्री के पदों की एक प्रति (उपाध्याय श्री हस्तीमल जी म० के पास है जिसमें ६० स्तवनों का सुन्दर सग्रह उपलब्ध है। पत्र सख्या १८—स्वयं आचार्य श्री रत्न चन्द जी म० की हस्त लिखित प्रति भी है तथा इनके अतिरिक्त आचार छतीसी उपदेश छतीसी आदि ४ छतीसींया है प्रति प्राय. शुद्ध है—लेखक का नाम निर्देश नहीं हैं।

(२) दूसरी प्रति महासती जी की—पत्र सख्या १६—स्तवन सख्या ११४—इसमें दो पद अपूर्ण है। लेखक का निर्देश नहीं है स० १६६२ का चैत्र शु० थिरवार को सम्पूर्ण।

वि० सं० २०१६ के चातुर्मास में जयपुर लाल भवन के शास्त्र भण्डार का निरीक्षण करते हुए आचार्यश्री के कुछ नवीन पद भी प्राप्त हुये जैसे—गौतम स्वामीजी का रास जो स्तुति विभाग में जोड़ दीया गया है। आचार्य श्री गुमानचन्द्रजी म० की जीवनी तथा पूज्य दुर्गादासजी म० की जीवनी—जिनको चरित्र विभाग में जोड़ दिया गया है।

साथ में परिशिष्ट विभाग भी जोड़ा गया है जिसमें आचार्य श्री के सम्बन्ध में रचित अन्य पद जो भिन्न भिन्न समय पर भिन्न भिन्न कवियों के द्वारा श्रद्धांजलि रूप में अथवा प्रशंसा रूप में लिखे गए हैं—पाठकों के पठनार्थ जोड़े गए हैं। इनमें प्रमुख हैं आचार्य श्री हमीरमलजी म० महासतीजी श्री संगतुजी श्री सगनाजी व सभुनाथ सेवक आदि के हैं।

आचार्य श्री के जीवन की विशेष बात का उल्लेख करना जो शेष रह गया है वह निम्न प्रकार है—

आचार्यश्री ने वि० सं० १८८८ में दीक्षा ग्रहण की। और दीक्षित होकर पहले ही वर्ष १८८१ से आपने काव्य रचना प्रारम्भ कर दी। आपके द्वारा रचित विरासत संग्रह में श्री नमीश्वर जिन स्तुति पद जिसका चौमासा वि० १८८१ में रच जाने का उल्लेख है (देखिए पद संख्या ४०) ६१–६०।

महाराज श्री के अनेक पद हिन्दी साहित्य के संत कवि कबीरदास व सूरदास सदृश छोटे किन्तु मानस को हिला देने वाले हैं। आपकी रचनायें राजस्थानी (ढूंढाड़ी—मारवाड़ी

मिश्रित) भाषा का उत्कृष्ट नमूना है। साधु की अथवा निस्पृही त्यागीजन की भाषा में जो स्पष्ट वादिता होनी चाहिए वही आपकी रचनाओं में वर्तमान है। आप जिस प्रकार वेश से साधु थे, विचारों के अक्कड़ एवं स्पष्टवादी थे-जो साधु की भाषा में होना अनुपयुक्त नहीं। साधु को संसारी जीवों से, उनके विशेषणों से लगाव भी नहीं होना चाहिए। कह सकते हैं जिस तरह हिन्दी साहित्य में संत कबीरदास ने अपनी साधुवकड़ी एवं अक्खड़ भाषा में संसारी प्राणियों को अपनी अमूल्य निधि भेंट की है इसी प्रकार आचार्यश्री ने भी साधु जीवन, संयमित जीवन को श्रीजिनमार्ग पर सीधे सच्चे रूप में चढ़ने को चैलेंज (challenge) दिया है। आप आचार्य गुमानचन्द्रजी म० के शिष्य थे। इसलिए आप प्राय प्रत्येक पद में गुरुदेव के पुनीत नाम का संस्मरण करते हैं साथ में बहुत से पदों में संवत और रचना स्थानों का भी उल्लेख किया है।

आप विशेष समय गुरुदेव की सेवा में रहे। गुरुदेव का स्वर्गवास होने के पश्चात् पूज्य दुर्गादासजी म० की सेवा में रहे। और सम्प्रदाय की व्यवस्था करते रहे। पू० दुर्गादासजी म० के स्वर्गवास के पश्चात् चतुर्विध संघ ने आपको आचार्य पदारूढ़ किया।

लाल भवन, जयपुर
श्री पार्श्वनाथ-जयन्ति
सं० २०१६

—लक्ष्मीचन्द्र
मुनि

प्रकाशकीय

श्री रत्नचन्द्र पद मुक्तावली (आचार्य श्री रतनचन्द्रजी म० के पदों का संग्रह) पाठकों की सेवा में रखते हुवे अति हर्ष हो रहा है। पुस्तक का प्रकाशनकार्य गत चातुर्मास में ही प्रारंभ कर दिया गया था और पुस्तक पूर्ण रूप से शुद्ध प्रकाशित हो इस बात का ध्यान रखने के कारण कार्य धिमी गति से चलता रहा फिर भी पुस्तक में काफी अशुद्धियां रह गई हैं। जिसका शुद्धि-पत्र अलगसे दिया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशन में धूलिया निवासी श्री भीकमचन्दजी गणेशदासजी चौधरी द्वारा २००) श्री सुगनचन्दजी श्रीश्रीमाल मद्रास निवासी द्वारा १०१) श्री अमरचन्दजी भंवरलालजी मेहता वालों द्वारा ५०) एवं एक गुप्तदानीजी जयपुर द्वारा २००) कुल रुपया ५५१) सहायतार्थ प्राप्त हुवे हैं। एतदर्थ सहायता दाताओं को धन्यवाद।

निवेदक

जयपुर — मंत्री की ओर से—

भंवर लाल बोथरा

श्री रत्नचन्द्र पद मुक्तावली

पदानुक्रमणिका

स्तुति विभागः—

क्रम स०	टेर पद	पृ० स०
१	जीव रे, तू जाप जपो नवकार	१–२
२	जाण्यो थारो भाव प्रभु जी	२–३
३	अब मोरी सहाय करो जिनराज	३
४	निठुर थयो साहिब सॉवरियो	४
५	नेमीश्वर मुझ अर्ज सुणी जे	५
६	प्रात उठ श्री शाति जिनन्द को सुमिरन कीजे घड़ी २	५–६
७	तूँ धन, तूँ धन, तूँ धन, तूँ धन, शाति जिनेश्वर स्वामी	६–७
८	वाणी थारी वीरजी, मीठी म्हाने लागे हो	७
९	म्हाने अमिय समाणी लागे रे जीव, श्री जिनवाणी	८
१०	एक आस भली जिनवर की	९
११	इम किम छोड़ चले मोय, जादव दीन दयाल	१०–११
१२	सतगुरु मत भूलो एक घड़ी।	११
१३	आज नेण भर गुरु मुख निरख्यो · ·	११–१३
१४	वामानन्दन पार्श्व जिनन्दजी, सेवे थाने सुर नर वृन्द	१३–१४
१५	सुखकारी जी थापर वारीजी सावरियां सायब।	१४–१५
१६	वारी हो सतगुरु की वाणी ···	१५–१६
१७	चन्दा प्रभु मो मन भावे रे।	१७–१८

१८ जिनेश्वर वन्दिये श्री पोह ऊगंते सूर	१८–१९
१९ सुज्ञानी नर वंदो श्री महावीर ने जिनराज	१९–२१
२० भवजीवां हो वन्दो भगवन्त ने	२२–२३
२१ हो सुखकारी हो जिनजी धन धन क्षेत्र विदेह	२४–२५
२२ मोने एक पार्श्व को आधार	२५–२६
२३ सांवलियो साहिब सुखदायक सुणजो अर्ज हमारी	२६–२७
२४ सांवलियो साहिब है मेरो मैं चाकर प्रभु तेरो	२७–२८
२५ प्रभुजी थारी चाकरी रे	२८–२९
२६ प्रभुजी दीनदयाल सेवक शरणे आयो	२९–३०
२७ रहो रहो रे सांवलिया साहिब	३०–३१
२८ वीरजी सुणो	३१–३२
२९ जिनराज सदा ही वंदिए	३३–३५
३० श्री सीमंधर सुण अलवेसर	३५–३६
३१ वाणी सतगुरु की सुणो सुणो हो भविक मन लाय	३६–३८
३२ जिनराजजी महिमा अति घणी	३८–३९
३३ मिलया गुरु ज्ञान तणा दरिया	३९–४०
३४ मन सतगुरु सीख कदा भूल	४०
३५ गुरु सम कुण जग में उपकारी	४१
३६ ध्यान लगा लाग दे श्री गुरु उपदेश	४२
३७ सांवलिया सूरत थारी प्रभु मो मन लागे प्यारी	४३–४४
३८ जिनवर जन्मियो ललना	४४–४५
३९ वामा रे जी रा नन्द	४७

४० शान्ति जिनेश्वर मोलवा ४८
४१ श्री सीमंधर जिनदेव प्रभु म्हारो
दरसण देखण हियड़ो उमगेजी ४६-५०
४२ साहिब सामलो हो प्रभुजी ५०-५२
४३ म्हारो मन लाग्यो धर्म जिनद सु रे ५२-५४
४४ श्री युगमन्दिर साहिब मेरो ५५-५६
४५ मनडो उमायो दरसण देखवा ५६-५७
४६ प्रभु म्हारी विनतडी अवधारके
दरसण दीजिये ग राज ५८-५६
४७ नेमिश्वर जिन तारो हो ५६-६२
४८ नेम नगीनो रे, तोरण थी रथ फेर सयम लीनो रे ६२-६४
४६ सुख कारी हो जिनजी महर करी ने दरशन दीजिये ६४-६६
५० श्री सिद्धार्थनन्द जिनेसर जगपति हो लाल ६६-६७

औपदेशिक विभाग

क्रम संख्या	टेर स्तवन	पृष्ठ संख्या
१	अरजी सुणो एक हमारी, विनवें सुमता नारी	६६
२	मत ताको नार विराणी	७०-७१
३	चचल छैल छबीला भंवरा, पर घर गमन न कीजे रे	७१-७२
४	कर्म तणी गत न्यारी, प्रभुजी	७२-७३
५	जीवड़ला यों ही जनम गमायो	७४

६	जगत में बड़ो समझ को फन्दो	७५
७	भेष धर यूं ही जनम गमायो	७६
८	कठिन लगन की पीर रे	७७
९	मिरग्या मोरी कोई करो रे	७७—७८
१०	मत कोई करियो प्रीत दुःख के फन्द पड़ेला	७८
११	तू क्यों ढूंढे बन बन में तेरा नाथ बसे नैनन में	७९
१२	नम जिनन्दा मोन बिन कापरापे कोडी की	८०
१३	घर त्याग दिया अब क्या करना	८१
१४	म्हारा प्रभुजी हो कर्म गत टाय न टाणी	८२—८३
१५	थारे जीया भूल पडी रे	८३—८४
१६	रसना विगर विचारी मत बोल	८४—८५
१७	विषया वश जन्म गमो रे	८५—८६
१८	पिन बे सुमता नारी घर आवोगी प्यारा	८६—८७
१९	कर्म तणी गत न्यारी कोई पार न पावे	८७
२०	मानव को भव पायने मत आस रे निराशा	८८
२१	समता रस का प्याला पीवे सो ई आवे	८९
२२	थोड़ो जनम जीरणो थोड़ो सेवट मन में बरिय रे	९०—९१
२३	कर गुजरान गरीबी सु मगरूरी किस पर करता है	९१—९२
२४	जग जंजाल सपन की माया इस पर क्या गरभाणा रे	९३—९४

२५ थांरी फूल सी देह पलक में पलटे, ६४–६५
२६ इण काल रो भरोसो भाई रे को नहीं ६५–६७
२७ कथलो मांड्यो रे, साधुजी करे वखाण ६७–१००
२८ सुकृत करले रे मूंजी, थारी पड़ी रहेला पूंजी १००–१०२
२९ नगरी खुब वणी छे जी जिणरा सिद्ध धणी छे जी १०२–१०४
३० संगत खूब मिली छे रे १०५–१०६
३१ निर्मल शुद्ध समकित जिण पाई १०७–१०९
३२ चेत चेत रे चेत चतुर नर मिनख जमारो पाय रे१०९-१११
३३ जगत सहु सपने की माया रे ११२
३४ गाफिल केम मुसाफिर,ठग लागा तेरी लार ११३
३५ त्याग नहीं पार की नारो, ते श्रावक किम उतरे पारो ११४–११६
३६ अब घर आवोजी ··· म्हारा मन गमता महाराज ११७–११८
३७ तू किण रो कुण थारो रे चेतनिया ११९
३८ जोवनिया की मोजा फोजा जाय नगारा देती रे १२०
३९ उलटी चाल चल्यो रे जीवडला १२१
४० निन्दा न करिये रे चेतन पारकी १२२
४१ समझ नर साधु किन के मिन्त १२३
४२ बुढापो वैरी आवियो हो १२४
४३ सीख शुद्ध मानो रे संतगुरु की १२५–१२६

४४　काया पिंड घाषो राज वाघो　१३०
४५　थो तो गढ़ बांको राज बांको　१३१
४६　भाटो कर्मा को राज भांटो गाढ़ो म्हारे पड़ियो　१३२
४७　कुबे भांग पड़ी रे मंतो भाइ कुबे भांग पड़ी रे　१३३

चरित्र विभाग

क्रम सं	२२ पद	पृ० सं०
१	धन्ना मैं वारी हो वारी देह तणी ढ़िब मिरस	१३५
२	वन्दू नित गजसुकुमाल मुनीश	१३६
३	मुनिवर धमरुचि रिख वंदूं	१३७–१३९
४	मादी जग मैं मोहनी	१३९–१४१
५	धन धन धन सती चन्दनबाला	१४१–१४३
६	शुद्ध पौषध प्रतिमा पालिए हो	१४४–१४६
७	धन धन श्रावक पुरुष प्रमाणिक विजय सेठ न सेठानी	१४६–१४८
८	धर्म भावाधिक रे भरताक श्रावक जाण	१४८–१५१
९	तुम पर वारी हूँ, वारी सौ वार हजारी	१५१–१५३
१०	सुख सुख सुन्दर रे म्हारी भवसा भी भरवास	१५३–१५४
११	म्हारा ज्ञानी गुरु नी वाणी हो अमृत भारतीजी	१५५–१५७
१२	तुम पर वारी श्री वीरजी बलाणी हो	१५७–१५८
१३	ऋषभदत्त ने देवानन्दा मार रथ पर रे बैसी मे वंदन सचरया	१५६–१६२

१४ वीर बखाणयो हो श्रावक एहवोरे १६१
१५ पूज्य गुमानचन्दजी महाराज १६३
१६ पूज्य दुरगादासजी महाराज 'रा' गुण १६८–१७०
१७ ,, ,, १७०–१७२

परिशिष्ट

१ रतनमुनि म्हारे मन बसे
(पू० हमीरमलजी म०) १७४–१७६
२ रतनमुनि री वाणी रे माने लागे प्यारी
(पू० हमीरमलजी म०) १७६
३ रतनचंद मुनि दीपता म्हारा सारे वंछित
काज जी (मु० दौलतरामजी म०) १७७–१७८
४ सतगुरु उपगारी ए, पूज्य रतनमुनि श्रैन
(सतीजी श्रीमगतुलाजी मगना जी) १७८–१७६
५ धनदिहाड़ो ने सुभरी घड़ी, (सतीजी श्री
मगतुलाजी) १८०–१८१
६ मूसा तोय नेक लाज नहीं आइ रे (ले सिंभुनाथ) १८१
७ शुभ गति शरण तिहारो ,, १८२
८ कब कर हो मन मेरो, ऐसो ,, १८२
६ रहो मन रतन मुनी के पास ,, १८२–८३
१० सतगुरु कब आवै सुनरी ,, १८३
११ वारी हो रतनेस पूज, वैण सुखकारी ,, १८३–१८४
१२ रतन मुनि है जू गुणधारी ,, १८४

श्री रत्नचन्द्र पद मुक्तावली

शुद्धि पत्र

पृष्ठ संख्या	पंक्ति संख्या	अशुद्ध	शुद्ध
१	२	एइज	एहिज
१	६	बन्धु	बन्धूँ
१	१६		
४	१०	'सी'	क्या के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।
४	१२	एर-समोरस	परस-मोरस
५	४	रूपर	ऊपर
६	६	संपत	संपद
१०	१०	दूसरे पद 'अधर' के साथ से जोड़कर पढ़ें	
११	भजन संख्या (१२) की दूसरी	पर	घट
१४	१२	पाम्पा	पाम्या
१५	अंतिम	अन्नत	अनन्तो
१५		मिरथा	मिथ्या
१६	११	उपारिया	बपारिया
१७	७	धीरे	सभे
१७	१०	गया	पया
१८	१	गयो	पयो

१८	२	१८५० में	अठारा पचास में
१६	१	समग्रहाजी	ने समग्रहाजी
१६	६	सुमेहणी	सि मेहणी
१६	६	तुम	तू
२२	१२	समझेहो	समझे हो आप
२४	१०	मिथ्यात	मिथ्यात
२४	१२	उच्छाह	उचाछह हो
२६	६	पारसनाथा	पारसनाथ
२७	३	तरी	तारी
२७	४	सहरत्र	सहस्र
२७	१२	आप	आए
२८	१८	हीजिरे	दीजिये
३१	११	अपना	आपना
३२	३	पण	तो पण
३४	२	घर	धर
३५	७	आख डाली	आंखडली
३५	७	तुभ	तुम
३६	३	ऽ त. प्रात	ऽ ात प्रात
३६	८	कपिलपुर	कंपिलपुर
३८	अतिम	मृत्य	मृत्यु
३६	३	रया	रह्या
४१	१४	पाश्रो	पावो

४२	४	देस	देश
४२	७	सिथ्यात	मिथ्यात्व
४७	६	मिरमता	विषमता
४५	१०	अतिपक्षा	अति पक्षा
४६	१	कर	करे
४६	७	तपिरया	तपिया
४६	१५	पू	पूज्य
४६	१७	पीपक	पीपाड
५१	२	मोक्षसया	मोक्षस्या
५२	४	निरधनियों	निरधनियो
५२	४	कहता	कहतां
५३	६	क	के
५४	१२	जीनवर	जिनवर
५५	१२	रां	रा
५८	अंतिम	जग	जगत
६०	७	माखियो	माखियो हो
६१	१३	आयो	आयो हो
६२	१२	आभूपण	आभूषण
६३	७	बणया	बणया
६३	३	करुणी	करुणा
६३	५	रस	रय
६३	१०	पुग	पूत

६४	४	उतराध्यन	उतराध्ययन
६५	४	ग्रह	ग्रहे
६५	१०	निखरी	निरखी
६६	१३	मभी	समी
६६	१४	दुधनी	दूदनी
७०	४	काजेण	काजे
७४	२	धर्म तणो	धर्म तणो सो
७४	१०	वैरतणी	वैतरणी
७४	११	जनमत	जन्म तैं
८०	१	ईद	इन्द
८०	८	कुड	कूड
८१	५	हुआ	हुआं
८५	६–७	उपाद	उपाध
८७	८	तीरयो	तिरियो
८७	१०	आने	आवे
८६	६	चेलापति	चेलायति
६१	२	सू ख	सू स
६१	५	खदा	खड़ा
६२	१३	चकदोल	चकडोल
६४	५	अन	अन्त
६५	८	शीव	शिव
६५	अंतिम	ढेटा	ढेठा

९६	९	पहुँचे	पहुँचो
९६	११	आणो	आयो
९६	१६	अपसरा	अपसर
९६	१९	ऐसा	ऐसो
९७	८	भविजया	भवियणा
१००	९	सिढी	सीढी
१०८	७	नरपति	नरपति
११४	४	मारने	मारे ने
११४	१३	धारे	धार
११५	१	ममर्मास	मदमांस
११५	५	सयो	समो
११५	१०	अणपारो	अणपारो
११५	१२	क ठ	क ट
११५	१५	गरपंतो	गरजंतो
११६	३	पच्चखाण	पच्चखाण
११६	४	डुट	छूट
११७	८	रहो	रही
११७	९	विहरो	विहारो
११७	९	सारिवा	साहिबा
११७	१४	सहिबा	साहिबा
११८	१	सुमके	सुम के
११८	२	ममारिबो	ममाबियो

१२०	८	ज्यों भरियो	ज्यों जल भरियो
१२४	५	देव	देवे
१२६	१७	जीवढला	जीवडला
१२७	८	जीवडल	जीवडला
१२७	१०	जलस	जलूस
१२८	४	चढ़	चढ़.
१२६	१०	सभी	समी
१३६	५	कगरया	करगया
१४६	१०	केह	के
१५०	२	धम	धर्म
१५४	७	धरणी	घरणी
१५५	१२	छुटे	छूटे
१५७	११	से	हो
१५८	७	म	में
१५८	६	पायो	पायो हो
१५६	शीर्षक	अविचन्ह	अविचल प्रेम
१६०	३	धामी	पामी
१६२	५	हृयरा	रह्या
१६३	४	जहना	जेहना
१६५	३	जाणया	जाणिया
१६७	१	दशन	दर्शन
१६८	७	मर्म	भरम

स्तु

ति

स्तुति वि भा ग

भा

ग

(१)

महामंत्र महिमा

(तर्ज—वीरो तू शियल तणो कर सग)

जीवरे, तूं जाप जपो नवकार ॥टेर॥
ओर नाम असार है सघला, ए इज छे तंत सार॥जी०॥
चोंतीस अतिशय पेंतीस वाणी, सेवे सुर नर क्रोड़
चक्री हलधर अरु नरनारी, सेव करे कर जोड़ ॥जी०॥१॥
देव एक अरिहंत तेहीज, राग द्वेष त्तय कीन
प्रथम पद मांही ते वन्दु, टाले कर्म मलीन ॥जी०॥२॥
सिद्ध सोही जाय विराजिया, मुगति महल मझार
कर्म काया भर्म फाटने, निरजन निराकार ॥जी०॥३॥
तीजे पद आचारज वंदू, गुण छत्तीसे सोभ
साधु साध्वी श्रावक श्राविका, निर्भय तिणथी होय ॥जी०४॥
चोथे पद उवज्झाय मुनिवर, ज्ञान तणां भंडार
चार संघने प्यार धरने, सूत्र ना दातार ॥जी०॥५॥
पांच में पद साधुजी नमे, पाले पंचाचार
दोषण टाले कर्म बाले, ले निर्दोषण आहार ॥जी०॥६॥
पंचही परमेष्टी समरूं, पंचम गति दातार
बोध कमल प्रबोध कारणे, ये छे दिनकार ॥जी०॥७॥

इच्छयी हुवे नर देव सुरपत पामीये रिद्ध वृद्ध
सुख करता दुःख हरता, प्रकटे आठों ही सिद्ध ॥जी॥८॥
व्याल हुए मृणाल* माला मृगपत मृग समान
दोषी दुश्मन सज्जन हुवे, लहीये केवल ज्ञान ॥जी॥९॥
घोर अंध समान हुवे विष अमृत जेम
दुःख दाई काम मांही, वरते कुशल अरु षेम ॥जी॥१०॥
शेष सहस जीभ करिने सुरपति आप विसेक
गुण गावे तो पार न पावे म्हारी जीभ छे एक ॥जी॥११॥
कोन गिणे अम्भर तारा मेरू कुण तोलंत
सर्व उदधी पार लहीय पिण तुम गुण पार न लहंत॥जी१२
पूज्य गुमानचन्दजी प्रसाद किधी ढाल रसाल
प्रात प्रात उठी नित सिंवरू नमो नमो त्रिकाल ॥जी१३॥
सवत अठारे बरस चोपने, पोस मास मझार
पडलू मांही शुक्ल पष में, संथन्यो नवकार ॥जी॥१४॥

---

(२)
गुरु प्रेम
(तर्ज—पनामी)

आपज्यो थांरो मान प्रभुजी, आपज्यो थांरो मान ॥टेर॥
गोतम अर्ज करे प्रभु सेती मन्यो इण प्रस्ताव हो ॥आ०॥१॥

---

* कमल दण्ड।

शिव नगरी कायम की विरिया, मोसुं कर गया डाव हो ॥जा॥२॥
बालक भाव करी तुम सेती, करतो नहीं अटकाव हो ॥जा॥३॥
एक रूखी प्रीत करे किम चेतन, इण में लाव न साव हो॥जा॥४
करी केवल निज रूप 'रतन' नित, मेट चपल चित्त चाव हो॥जा॥५

---

(३)

भक्त प्रार्थना

(तर्ज—धनाश्री)

अब मोरी सहाय करो जिनराज ॥अब॥टेर॥
काल अनंत रूल्यो भव भव में, अब मेटिया महाराज॥अ॥१॥
ओ संसार दुःखां रो सागर, कर्म करे वेकाज
आपो भूल आप दुःख पावे, भूल न आवे लाज ॥अ॥२॥
कारण विन कारज सिद्ध नाहीं, तुम गुण कारण जहाज
भव दरियाव मांही बूडंतां, हाथे आई पाल ॥अ॥३॥
दीन, अनाथ, दुरबल जाणीने, राखीजो मुझ लाज,
'रतन' जतन सुध संजम गुण विन, सरे न एको काज ॥अ॥४॥

---

(४)

सती का स्नेह

(तर्ज—निठुर भयो गोकुल मथुरा विच)

निठुर भयो साहिब साँवरियो, छिन में ही छिटकाई जी ।।टेर।।
मन की बात रही मन मांहीं, पूछ सकी नहीं कांई जी ।।नि।।१।।
जगत शिरोमणि यादव के पति, कृष्ण सरिखा भाई जी
तिनकी लाज रही कहो कैसे, यादव जान लजाई जी ।।नि।।२।।
जो कोई खून हुवे मुझ अन्दर तो देऊ सख मराई जी,
पिण जग में कहो न्याय करे कुण, जो होवे राय अन्याई जी।।३।।
जो विरक्त रस भाव विशेषे तो क्यों जान बणाई जी
पशुवन के सिर दोष दई गए, ये लागी कपटाई जी ।।नि।।४।।
तुमने सीख दिये कहो कैसी, कहतां होवे लघुताई जी,
सब सज्जन की सी रही सूनी, क्या देखी चतुराई जी ।।नि।।५।।
नेम बिना तो नेम जिहां लग, प्राण रह घट मांही जी,
सज्जन भाव करी तुम सेती, कहुँ छु वचन दुखाई जी ।।नि६।।
एर समोरस वयणे गायो, ताकी ए अधिकाई जी
'रतनचन्द' कहे धन्य सतवंती जगत गिरयो सहु भाई जी।।नि७।।

---

(५)

राजमती प्रार्थना

(तर्ज—काफी होली री)

नेमीश्वर मुझ अर्ज सुणीजे,
वालेसर मुझ अर्ज सुणीजे ४ ।।ने।।टेर।।
घर में हाण लोक में हांसो, एहवो काम न कीजे,
किम आए किम फिर गए पाछे, इनको ऊत्तर दीजे ।।ने।।१।।
त्याग तणो फल उत्तम जाणी, तिणसु संजम लीजे,
मांग गयां सहु महातम बिगड़े, सो गिणती न गणीजे।।ने।।२।।
पशुअन पीड़ दया दिल धरने, जिण सु रथ फेरीजे,
तो हूँ अबला भूलूं अलवेसर, तिणरी गिणत न कीजे ।।ने।।३।।
अबला आश निराश किया सु, छिनक छिनक तन छीजे,
निर्मोही के मोह न व्यापे, किणने जाय कहीजे ।।ने।।४।।
राजल एम विलाप कियो अति, मुख सु कह न सकीजे,
'रतन' जतन सुध नेम निभायो, जिणसु कीरत कीजे ।।ने।।५।।

---

(६)

शांतिनाथ प्रार्थना

(तर्ज—प्रभाती)

प्रात ऊठ श्री शान्तिजिणंद को सुमिरन कीजे घड़ी घड़ी।।टेर।।
संकट कोटि कटे भवसचित, जो ध्यावे मन भाव धरी ।।१।।

जन्मत पाप जगत दुख टलियो, गलियो रोग असाध्य मरी
घट घट अंतर आनन्द प्रगट्यो, हुलसियो हिवड़ो हरप भरी॥२॥
आपद व्यंत्र पिसुन भय भाजे, जैसे पेखत मृग हरी॥
एकण चित शुभ मन घ्याता, प्रगटे परिचय परम सिरी ॥३॥
गये विलाय भ्रम के बादल, परमारथ पद पवन करी
अवर देव एरंड क्यूं रोपे, जो मन्दिर सुरतरु फली ॥४॥
प्रभु तुम नाम जग्यो घट अन्तर, तो सु करिय कर्म करी
रतनचन्द' शीतलता व्यापी, पातक ताप पलाय टरी ॥५॥

---

(७)

शान्तिनाथ स्तुति

(तर्ज—प्रभाती)

तू धन तू धन तू धन तू धन शान्ति जिनेश्वर स्वामी
मिरगी मार निवार कियो प्रभु, सर्व भयो सुख गामी ॥१॥
अचरिया अचलादे उदरे, माता साता पामी
शांति शांति जगत बरताई, सर्व कहे सिर नामी ॥२॥
तुम प्रसाद जगत सुख पायो, भूले मूढ हरामी
कंचन डार काँच चित दधे, बाँकी बुद्धि में खामी ॥३॥

कुबुद्धि ।

अलख-निरंजन मुनि-मन-रंजन, भयभंजन विसरामी
शिवदायक लायक गुण खायक वायक है शिव गामी ॥४॥
'रतनचंद' प्रभु कछुअ न माँगे, सुन तू अन्तरयामी
तुम रहवन की ठौर बता दो, तो हूँ सहु भर पामी ॥६॥

---

(८)

वीर वाणी

(तर्ज—राग काफी)

वाणी थारी वीरजी, मीठी म्हाने लागे हो ॥टेर॥
गणधर वाणी सुणी निज श्रवणे*, उभा ही घर त्यागे हो ॥
वा ॥१॥
मोह मिथ्यात्व की नींद अनादि, सुण सुण वाणी जागे हो,
मोह महीपत चोर लुटेरो, सो तो तत्क्षण भागे हो ॥वा२॥
रागद्वेष अनादि तणो मल, भरियो पूरण अथागे हो,
सो तुम वेण औषध सुं तत्क्षण, निर्मल हुवे महाभागे हो
वा ॥३॥
ठाकर सबल जाणने चाकर, 'रतन' अमोलक मांगे हो,
इधकी रीझ रही अलवेसर, राखीजे निज सागे हो ॥वा४॥

---

*कानों से ।

(६)

जिनवाणी

म्हान अमिय समाणी लाग र जीव, श्री जिनवाणी ।।टेर।।
श्री जिनवाणी अमृत वाणी, परम पीयूष॰ समाणी रे जीव श्री।।१।।
क्रोध कषाय की लाय बुझवण निर्मल अमृत पाणी रे जीव श्री।।२।।
ज्ञान ध्यान शीतलता व्यापी, रोम रोम हुलसाणी र जीव श्री।।३।।
रोग असाध्य विषम ज्वर मटन, अमृत अडीप व्हाणी(समाणी) र जीव श्री।।४।।
करम मरम की घटिय विषमता, मन की तपत मिटाणी र जीव श्री।।५।।
अक्षय खजानो अगणित दौलत, घट ही में प्रकटानी र जीव श्री।।६।।
'रतनचन्द' धन्य सतगुरु वाणी घट गई दुमत पुराणी र जीव श्री।।७।।

॰अमृत।

(१०)
सच्ची आशा

एक आश भली जिनवर की ।।टेर।।

छांड़ कृपानिधि करुणा-सागर, कुण करे आश अवर की ।
एक ।।१।।

अमृत छांड विषय जल पीवे, ज्यांकी अकल हिया की सरकी
टुक भर महर हुवे जिनजी की, तो पदवी देय अमर[1] की
एक ।।२।।

सूकर[2] कूकर[3] टुक के कारण, सेरी तके घर घर की
पेट भरे, न मिटे मन तृष्णा, अन्तर लाय फिकर की।।एक३।।
कुण पितु मात पिता भ्रात (सुत) जोरू, किणने लड़का लड़की
जम के द्वार तणां अगवाणी, तूं खोल हिया की खिड़की
एक ।।४।।

कृपा होय मो पर जिनजी की, निज संपत आकर[4] की
"रतनचन्द" आनंद भयो अब, चाह घटी पुद्गल की
एक ।।५।।

---

१ देवता २ गदसुग ३ कुत्ता ४ खजाना

(११)

राजुल पुकार

(तर्ज—राग काफी)

इम किम छोड चले मोय, साहब दीन दयाल ॥टेर॥
छप्पन कोड यादव मिल आये, लाए आन रसाल ॥इम१॥
हिए हार कानों विच कुंडल, गल मोतियन की माल॥इम२॥
सांवली सूरत मोहनी मूरत, इंदर्चंद रया मास्त ॥इम३॥
देख पशुवन दया दिल उपनी, रथ फेरयो तत्काल ॥इम४॥
राजुल सुण मुरछागत पामी, जिम छेदी चम्पक नी डाल
॥इम५॥
सखी सहलियां लागी समझावी, राजुल पडीए अंजाल
॥इम६॥
चय उठे, बैठे, चय लोटे, चय नभ[1] चय पाताल[2] ॥इम७॥
बिन जोगुण मोय किम छिटकाई, बिलविले राजुल बाल
॥इम८॥
सखी कहे इम किम मुरझावे, अवर अमर[3] पाल ॥इम९॥
आप अथिर न ग्रहया करे दुख, "रतन" अमोलख राल॥इम१०॥
सहस्र पुरुष सु संजम लीधो, हुआ पद् आप अविपाल
॥इम११॥

---

१ आकाश २ पाताल ३ के

घणी सखियां सु राजुल चाली, भेट्या जाय कृपाल ॥इम१२॥
नेम कंवर राजुल शिव पहुँच्या, जन्म मरण दुःख टाल॥इम१३॥
"रतनचन्द" धन्य नेम जिनेश्वर, पाय वन्दु त्रिकाल॥इम१४॥
पूज्य गुमानचन्दजी गुरु पाया, फलिय मनोरथ माल॥इम१५॥

---

(१२)

सतगुरु सेवो

सतगुरु मत भूलो एक घड़ी २ ॥टेर॥
बोध बीज भयो घर अन्दर, जीव अजीव री खबर पड़ी॥सत१॥
क्रोध कषाय री लाय बुझावण, दीधी एक संतोष जड़ी॥सत२॥
संजतिराय भेट्या सतगुरु ने, ततक्षण त्यागी राज सिरी॥सत३॥
पापी पूर हुतो परदेशी, केशी तार्यो हर्ष धरी ॥सत०४॥
"रतनचन्द" कहे सतगुरु सेवो, जो थे चावो मुगतपुरी ॥सत५॥

---

(१३)

गुरु दर्शन

आज नेण भर गुरु मुख निरख्यो, हर्ष हुवो मन मारो ए माय ॥टेर॥
रोम रोम शीतलता व्यापी, उपसम रस नो क्यारो ए माय आज ॥१॥

गुण भरियो दरियो सुख सागर, नागर नवल उजारो ए माय
पूरण गुण कह सके न सुरगुरु, जो होवे जीभ हजारो ए माय
आज ॥२॥
कामधेनु चिन्तामणी सुरगुरु, पुद्गल सर्व असारो ए माय
ऐसी चीज नहीं इण जग में, करिये गुरु मनुहारो ए माय
आज ॥३॥
मूल मिथ्यात अनादि तणी मर्म, घट में घोर अन्धारो ए माय
परम उद्योत कियो इक छिन में प्रकट वचन दिनकारो ए माय
आज ॥४॥
क्रोध कषाय परम दावानल, भरीयो विषय विकारो ए माय
परम आह्लाद कियो इक छिन में, बरस सघन घन धारो
ए माय ॥ आज ॥५॥
परम ज्योत प्रकटी समता की, हुओ हर्ष अण पारो ए माय
निज गुण अक्षय सम्पत आफ्णी, ओ मन गुरु उपकारो
ए माय ॥ आज ॥६॥
प्रेम प्रसाद कियो मुझ ऊपर, हूँ होतो निरधारो ए माय
धाकर जाख समग्र रिध सौंपी, छोड्यो, सर्व संसारो ए माय
आज ॥७॥
पूरण उदय हुये कुल गुरु सु, आगम में अधिकारो ए माय
गुरु पद कमल धरो सिर ऊपर, जो धासो निस्तारो ए माय
आज ॥८॥

मोती सा मलिन खांड सा खारा, आत्म सम अपियारो ए माय
अल्प कर्मी गुण कर कर हर्षे, निरखे नहीं य गिवारो ए माय
आज ॥६॥
एक जीभ सूं गुण कुण गावे, कर कर बुध विस्तारो ए माय
"रतनचंद" कहे गुरु पद मुझ शिर, क्रोड़ क्रोड़ हूं वारो
ए माय ॥ आज ॥१०॥
आज नेण भर गुरु मुख निरख्यो, हर्ष हुवो मन मारो ए माय

---

(१४)
पार्श्वनाथ स्तुति

(तर्ज—रिडमल री देसी)

वामानन्दन पार्श्व जिनदजी प्रभूजी सेवे थांने सुरनर वृन्द ॥टेर॥
संयम लेई ने वन में आविया हो, हां ए दर्शन देवरो हे
हिया नो सेवरो हे पारसनाथ ॥ हां ॥१॥
कोप्यो कमठ अति विकराल जी प्रभूजी आयो जहां दीनदयाल
हे काली काठल कर आभो छावीयो हे ॥ हां ॥२॥
गाजे वादल विज चमकत, मेघ अखंडित धार वरसन्त
नदियां पुराणी पाणी मावे नहीं हे ॥ हां ॥३॥
जल कर ढाकी प्रभूजी नी देह, तो पिण वरसत नहीं रहे मेंह
है मेरू अचल जिम मनसा स्थिर रहे हे ॥ हां ॥४॥
धरणेन्द्र पदमावति आविया लिधा थांने शीस चढाय

नाटक करसी निरखे हर्ष आनन्द सु हे ॥ हां ॥५॥
करतो कमठ आय लागो पांव जी श्री जिन परखे शीस नवाय
भव भव संचित पाप निकन्द सु हे ॥ हां ॥६॥
क्षिणने दियो निर्मल ज्ञान जी, किनो आप इन्द्र समान
हे हैं थाकर परचां रो चाऊ चाकरी हे ॥ हां ॥७॥
लोहन करदे कनक[1] समान, ते पारस जग मांही पाषाण
हेतु पारस कर देव पदवी आखरी है ॥ हां ॥८॥
चिन्तामणी हु पारस रूप, मेटो म्हारा भव जल कूप
ह जग दु खां सु सेवक ने तारजो रे ॥ हां ॥९॥
गिरवा सागर गुणा रा गंभीर, राखो म्हाने परचां री सीर
हे 'रतनचन्द' री भव भव तारजो रे ॥ हां ॥१०॥
पाली में किनो सुख चोमासजी, पाम्पा सहु हुल्लास जी
ये सवत अठारा ने वर्ष विहोतरे हे ॥ हां ॥११॥

---

(१५)
नेमनाथ स्तुति

(तर्ज—थारी तो नीरू चर हा पलकी रे, थारी मामनेल)

समुद्र विजय जी रा लाडला हो प्रभुजी यादव कुल सिणगार हो
सुखकारी जी, हांजी थां परमारी जी सांवरिया सायब
म्हारो है प्यारो प्राण आधार ॥टेर॥

---

१ सोना

तज राज संयम लियो हो प्रभूजी, चढ़िया गढ़ गिरनार ।।सु१।।
राजल मन इम चिन्तने हो प्रभूजी, एह वो सून न कियो होय
किम आव्या किम फिर चल्या जी हो प्रभुजी, येह अचरच
छः मोय ।।सु२।।
आशा अलुफी सखी हूँ रही हो प्रभुजी, गई मनोरथ माल हो
बिन गुनहे वनिता तजी हो प्रभुजी थाजो छो दीन दयाल हो
।।सु३।।
संयम ले गिरवर चढी हो प्रभुजी, प्रतिबोध्यो रहनेम हो
कर्म खपावी सिद्ध गती लही हो प्रभुजी, पूर्ण कियो प्रेम।।सु४
मुगत वधु साहब वरी हो प्रभुजी, फिरत रही जग छाय
"रतनचन्द" करे वन्दना, निचो शीस नवाय ।।सु५।।

---

(१६)

सद्गुरु वाणी

(तर्ज—रमो २ हे चले कड्या फु दा री डोरी)

मीठी अमृत सारखी सतगुरु की वाणी, उपजे हर्ष अपार
वारी हो सतगुरु की वाणी निर्मल धर्म दिखावियो मेट्यो
मिथ्यात अंधकार ।।वा१।।
शीतल चन्दन सारखी, सद्गुरु की वाणी, निर्मल खिरोदक नीर
काल अन्नते श्रद्ध ही सद्गुरु की वाणी, मेटी मिथ्या मत पीर
।।वा२।।

आईके रमवा गयो, सतगुरु की वाणी, भेट्या हो श्री मुनिराज
वाणी सुण वैरागियो,सतगुरुकीवाणी,दीधो जग छिटकायाावा३।।
पापी परदेशी हुँतो, किधा जिन पाप अनेक
केशी गुरु मेट्या थका, सतगुरु की वाणी, पायो पूर्ण विवेक
।।वा४।।
चोर चिलापती चालियो, सतगुरु की वाणी, लिया छेदयो
कन्या रो शीस
वन में गुरु उपदेश थी, सतगुरु की वाणी, मेटी जिन मन री
रीस ।।वा५।।
इन्द्रभूती अहंकार जी सतगुरु की वाणी, आया श्री वीर ने पास
संजम छेद्री छिनक में सतगुरु की वाणी दीधो शिव ने
मुक्ति आवास ।।वा६।।
मेघ मुनि मन डोलियो, चाल्यो चारित्र ने चूर
वीर वचन सुण सुभियो, सतगुरु की वाणी, हुवो सत्यवादी
शूर ।।वा७।।
एम अनेक उधारिया, सतगुरु की वाणी, जिणरी आगम में साख
संगत शिव सुख दायनी, सतगुरु की वाणी, सुणिए मन ने
दृढ राख ।।वा८।।
रूपनगर में विहोचरे, सतगुरु की वाणी आयो हो सेखे काल
"रतनचन्द" आनन्द में, सतगुरु की वाणी, किधी आढाल
रसाल ।।६।।

(१७)

श्री चन्द्रप्रभ स्तुति

(तर्ज—बड़े घर ताल लागी रे)

चन्दा प्रभु मो मन भावे रे, दूजो देव दाय न आवे रे ॥टेर॥
चंदपुरी नगरी भली रे, महासेण राय उदार ।
लिखमा राणी दीपती, ज्यांरी कूख लियो अवतार ॥चंदा१॥
संसार ना सुख भोगवी रे, जाण्यो ससार असार ।
मन वैरागज आणनै, प्रभु लीधो सजम भार ॥चंदा२॥
चंद आनंद सदा करे रे, पातिक जावे दूर ।
चद भजे संसार तीरे तो, जावे कर्म अंकुर ॥चंदा३॥
सुर नर असुर विद्याधरूरे, इन्द्र करे जांरी सेव ।
मोटा राणा राजवी ज्यांने, नमे असंख्याता देव ॥चंदा४॥
अवर देव गणा देखिया, जठे घणा जीवां री घात ।
कहोजी कांकरो कुण लहे, ज्यांरे लागो चिन्तामणी हाथ॥चंदा५॥
वाणी अमृत सारखी, जाणे खीर समुद्र की नीर ।
वाणी सुण हिया में धरे तो, उतरे भवजल तीर ॥चंदा६॥
चन्द्र सरीखो को नहीं, मैं जोयो सरब संसार ।
और डूबावे संसार में जी, मोने चंद उतारे पार ॥चंदा७॥
चंद प्रभु सरण आवियो, हाथ जोड़ करूं अरदास ।
किरपा करी सिव दीजिये, "रतनचंद" तुमारो दास ॥चंदा८॥

पूज्य गुमानचंदजी गुरु मेरिया, गयो पाम्यो हरक हुलास ।
समत १८५० मों कियो सापपुर शहर चोमास ॥पदा६॥

---

(१८)

श्री शीतलनाथ स्तुति

(तर्ज—करलला गीत नी देशी)

श्री शीतल जिन सायबा जी सुन सेवक अरदास ।
शिवदाता विरद तादरो सो दो शिवपुर वास ॥
जिनेश्वर वंदियेजी मोह ढगंते हर जिनेश्वर वंदियेजी २ ।
पामे परमानंद जिनेश्वर वंदियेजी दुख टल जावे ॥
दूरक पाप निकंदिये जी, पामे सुख भरपूर जिनेश्वर वंदियेजी॥टेर॥
छेदन भेदन तर्जना जी, मैं तो सही अनन्त ।
इण दुसमी आरे आयने, अब भेट्या भगवन्त ॥जि०१॥
थारो श्री जिनराय जी, टालो म करो कोप ।
केवे सम्पो किम छुटसी जी, हिये विमासी जोय ॥जि०२॥
जैसे चन्द्र चकोर सु-जी, मेह मगन जिम मोर ।
तुम गुण हृदा में बसे हैं, नितप्रत करूं निहोर ॥जि०३॥
काम भोग नी लालसाजी, फिरता न भरे मन ।
पिया तुम भजन प्रताप थी, दासे दुरमतिवन ॥जि०४॥
लोह अड़े पारस अड़जी, सोनो न हुवे तेह ।
लोहनो सु भीगके पिया, पारस पड़े संदेह ॥जि०५॥

चिंतामणि संग्रहाजी, नर सुखियो नहीं होय ।
जद मनमें शंका पड़े, श्रो रतन न दीखे कोय ।।जि०६।।
निशदिन सेवा सारता जी, साम सारे जो काम ।
जिणरी इधकाई किसी, पिण हुँ तार्या को नाम ।।जि०७।।
सेवक साहब ने कयांजी, काम न सारे कोय ।
चाकर ने सुमेहणी, पिण मोटा ने होय ।।जि०८।।
बालक जो हट ही करे, जी तो हारे साईत ।
हूँ बालक तुम आगले, बोलु छुं इण रीत ।।जि०६।।
चेतन तु ही तारसी जी, तुम परमेश्वर रूप ।
पिण प्रभुना गुण गावता जी, प्रगटे निज स्वरूप ।।जि०१०।।
संवत अठारे पंचावने जी मेदनीपुर शुभ ठोर ।
पूज्य गुमानचंदजी प्रसाद सें, "रत्न" कहे कर जोर।।जि०११।।

---

(१६)

श्री महावीर स्तुति

(तर्ज—निंदड़ली वैरण)

सुज्ञानी नर वंदो श्री महावीर ने, जिनराज ।।टेर।।

हांजी प्रभु चम्पानगर समोसरया, जिनराज,
हांजी थाने कोणक वंदन जाय ।
हांजी प्रभु नरनारी मेला थया, जिनराज,
हांजी थांरे लुल लुल लागे छे पाय ।।सु१।।

प्रभुजी रो आनन[1] नयन[2] निरखियां, जिनराज,
हांजी कांई सरद पूनम को चंद ।
हांजी प्रभु भविक चकोर विकसे हियो,
जिम भमरो पिये मकरंद[3] ॥सु२॥
प्रभुजी रा नयन कमल दल पांखड़ी, जिनराज,
प्रभुजी री कनक वरण[4] सम देह ।
हांजी प्रभु शुभ पुद्गल सहु जगत ना, जिनराज,
हांजी कांई खांच लिया सहु तेह ॥सु३॥
प्रभुजी रे चांवर चार चारू दिसे, जिनराज
हांजी थारे छत्र रया सिर छाय ।
हांजी प्रभुजी इन्द्र नरेन्द्र सुख आगले, जिनराज
हांजी कांई चाकी लुली म गुलाम ॥सु०४॥
प्रभुजी रा शिष्य मुक्ताफल सेहरा, जिनराज
हांजी केई गुण रत्नारा निधान ।
हांजी केई पूरवधर दृष्टि धरा, जिनराज
हांजी कोई पाम्या है केवलज्ञान ॥सु५॥
हांजी प्रभु नायक लायक तुम भला, जिनराज,
हांजी कांई टाल दे वैर विरोध ।
हांजी भव भव तपत मिटावणा, जिनराज
उपनो है प्रबल पयोद[5] ॥सु६॥

---

१ मुख	२ नेत्र	३ फूलों का रस	४ शोभा	५ मेघ

प्रभुजी ने देख देख हरषे हियो, जिनराज
हांजी थांरी सांभल अमृत बाण ।
प्रभुजी रे गणधर गौतम नित कने, जिनराज
हांजी थारा वचनारे परमाण ।।सु७।।
प्रभुजी थे श्रेणिक ने कर दियो सारखो, जिनराज,
मेघ[१] ने लियो समझाय ।
प्रभु थाने दुःख दिया, ज्याने तारिया, जिनराज
हांजी थारी महिमा रही महकाय ।।सु८।।
हांजी प्रभु हूँ चाकर चरणां तणो, जिनराज
हांजी तुम सम मिलिया नाथ ।
हर्ष आनंद हुओ घणो जिनराज
हांजी जिम विछड़ियो मिले निज साथ ।।सु९।।
प्रभुजी रो वर्णन उवाई उपांग में, जिनराज
हांजी थारा गणधर किया गुण ग्राम ।
"रतनचन्द" गुण गाविया, जिनराज
हांजी कांई बडलू ग्राम मझार ।।सु१०।।

---

१ श्रेणिक के सुपुत्र मेघकुमार

(२०)

भगवद् वन्दना

(तर्ज—म्हा मोरे जी गा वाणो)

भवजीवों हो वन्दो भगवन्त ने ।।टेर।।

दोष अठारा परिहरे, ते आप्यो हो एक देव जगदीश ।
पूर्व पुण्य प्रकाश सु, ज्यारे हुवे हो अतिशय चौंतीस।।भव१।।
रोग रहित जिनवर हुवे, माम लोही हो चले मधुर सफेद ।
आहार निहार दीसे नहीं, सासोस्वास हो चले सुरभि[1] देव ।।
।।भव२।।
ये अतिसय गृह वास में, कर्म चूरिया होय जे प्रकटे इग्यार ।
योजन क्षेत्र मांहो रहे, क्रोड़ा क्रोड़ी हो सुर-खग[2]-नरनार ।।
।।भव३।।
रोग वैर दुर्भिक्ष मरी, नहीं होवे, हो चले साढ़ ईत ।
अल्प वर्षा निरना नहीं, स्वचक्र परचक्र ईत ।।भव४।।
ए नव न हुवे सौकोस में, सहु समझे हो आपरी भाषा ।
घनघाती कर्म क्षय किया, अतिशय हो एकादस साख ।।भव५।।
चक्र-चामर सिंहासने, तीन छत्र हो नमन करे अहलाद ।
कनक-कमल मार्गमले, गढ तीने हो सुर-दुदुभि नाद।।भव६।।

१ सुगन्ध २ पक्षी

सिर अशोक सुहावणो, पूठ लारे हो हुवे साय सुभाय ।
पंखी करे प्रदक्षिणां, छहुँऋत हो वरते सुखदाय ।।भव७।।
पाखंडी क्रिष्ट होई नमें, फूल पाणी हो वरसे निर्जीव ।
कंटक सहु ऊंधा पड़े, ऐसी दीधी हो शुभ पुण्यरी नींव।। भव८।।
नख केश अशुभ वधे नहीं, सुर पासे हो थोड़ा तो एक क्रोड़ ।
ये उगणीस पुण्य प्रकट्यां, सब मिलिया हो चोंतीस ।।भव९।।
गुण पेंतीस वाणी तणां, शुभ लक्षण हो एक सहस्र ने आठ ।
पुद्गल-छवि सुखकारणी, प्रभु संच्या हो बहुपुण्य रा ठाठ ।।
।।भव१०।।

निज-गुण अलख लखे नहीं, भववासी हो समझे व्यवहार ।
नियत न्याय कर निरखतां, जिन न्यारा हो पुद्गल विस्तार ।।
।।भव११।।

कारण सूं कारज हुवे, भवि पावे हो निरखी प्रतिबोध ।
भक्तवच्छल जिनराजजी, सहु मेटे हो प्रभु वैर विरोध।।भव१२
अष्टादश बहोतरे, चोमासो हो कीधो अजमेर ।
"रतनचन्द" करे विनती, म्हारा दीजो हो प्रभु कर्म निवेर ।।
।।भव१३।।

---

(२१)

महाविदेह महिमा

(तर्ज—मिमुझा री देशी)

हो सुखकारी हो जिनजी, धन धन क्षेत्र विदेह ॥टेर॥

आप विराजो आजे क्षत्र सुहावणो रे लाल, वाणी अमिय झरेय,
मानो पावस रितु ना बादल बरसना रे लाल, मिलिया सुर नरनार ॥हो१॥
देवांगना मिल गावे धवल मनोहरू रे लाल, नाटक ना झनकार हो ।
केसर क्यारी खिल रही, हर्ष सहु धरे रे लाल ॥हो२॥
सिर पर वृक्ष अशोक हो सु० षट्रितुनो सुखदायक बाय झकोरही रे लाल,
सुर तज आवे देवलोक हो सु० मूल मिथ्यात्व नो दम दिया नो खोलखा रे लाल ॥हो३॥
मो मन अधिक उच्छाह सुखकारी० वाणी सुधा-रस पिऊ हप भरी हियो रे लाल,
मेटू भव भव दाह, हो सुखकारी० एह मनोरथ फलसी लेखे बद जियो रे लाल ॥हो४॥
धन धन ते नरनार हो सुखकारी० दरसन देखी हम करी नेतर भरे रे लाल,

भव निध अगम अपार हो सुखकारी,
तुमची आण प्रमाणकरी छिनमें तिरे रे लाल॥हो५॥
जग तारण जिनराज हो सुखकारी,
म्हारी विरिया आलस साहेब किम करो रे लाल।
६ राखो अविचल लाज हो सुखकारी,
परम कृपाल दयाल भरोसो आपरो रे लाल॥हो६॥
"रतनचन्द री अरदास हो सुखकारी,
चरण समीपे राखो तो सफली चाकरी रे लाल।
दीजो शिवपुर वास हो सुखकारी,
चन्द चकोर ज्यूं चाऊं सेवा आपकी रे लाल॥हो७॥

---

(२२)

श्री पार्श्वनाथजी का स्तवन

पास प्रभू आस पूरो, देवो शिवपुर वास ॥ टेर ॥
त्रास गर्भावास मेटो, हूँ चरणारो दास
उठत बेठत सोवत जागत, बसरह्या हृदय मझार, माने ॥ १ ॥
मात तात अरु नाथ तूंही, तूं खाविंद किरतार।
सज्जन वल्लभ मित्र तूंही, तूंही तारणहार प्रभु ॥ २ ॥
कई पर्वत पहाड रु खाल तरवर, सरवर न्हावत गंग।
माने तो तन मन वचन करने, एक तुमडं रंग माने ॥ ३ ॥

हूँ मतहीन लेलीन जगमें, पुद्गल ने परपंच ।
अवगुण भरियो देख साहिब, आप मांही खंच । माने ॥४॥
भवसागर में बहुविध भटक्यो, पुद्गल पूर अनेक ।
छेदन भेदन बहुत पामी, अब तो साम्हो देख । माने ॥ ५ ॥
शरण आतां जेह कितनी, जो साहिब शिर हाथ ।
लोह कंचन होत छिनमें, फरस्यां पारसनाथ । माने ॥ ६ ॥
काष्ठ फाडी नाग काढयो, सभलायो नवकार ।
धरणीन्द्र पद्मावती हुवो, ओ प्रभुनो उपकार । माने ॥ ७ ॥
गरीबनवाज बिरुद ताहरो, तारीजो महाराज ।
सेवक निज शरण आयो, आपने अब लाज । माने ॥ ८ ॥
कमठमान भंजन सुखदाता, भय-भंजन भगवंत ।
"रतनचन्द" करजोड विनवे, नीचो नमावी शीष । माने
॥ ९ ॥

---

(२३)

सांवलिया सु प्रार्थना

सांवलियो साहब सुखदायक, सुणजो अर्ज हमारी ॥ टेर ॥
अगमागर करागर सरिखो, विषसेती मोय) तारी ॥ १ ॥
नमनत नयन कमल दल निरखी, हर्षी है मदतारी ।
पिता परमसुख पायो प्रभुको, सुरत मोहनगारी ॥ २ । सा ॥

जोवन वयमें जोर दिखायो, विस्मय थयो [1]मुरारी ।
सब सज्जन मिल व्याह मनायो, मोह दशा मनधारी ।।सा ३।।
व्याह विरुद्ध मे जीव छुड़ाए, तरी राजुल नारी ।
सहस्त्र पुरुष से सजम लीनो, आप रहे ब्रह्मचारी ।।सा० ४।।
प्रजन साव कुंवर को तारी, आठ कृष्ण की नारी ।
पांडव पांच को लिया उवारी, जादव वंश सुधारी ।।सा० ५।।
सहस्त्र अनेक पुरुष निस्तारी, पहुंता मुक्ति मझारी ।
"रतनचन्द" कहे अवतो आई, आज हमारी वारी ।। ६ ।।

---

(२४)

मैं चाकर प्रभु तेरो

सांवलियो साहिब है मेरो, मैं चाकर प्रभु तेरो ।
भवसागर में बहुविध भटक्यो, अब तो करो निवेरो
।। सा० १ ।।
आठ कर्म मोय विकट दवायो, दियो झटक घन घेरो ।
साहिब मेहर नजर कर मोपर, वेगी आप विखेरो ।। २ ।।
चौरासी की फांसी गालो, टालो भव भव फेरो ।
सेवक ने साहिब हिवे दीजे, मुक्ति महल मे डेरो ।। ३ ।।
भोलो हंसराज नहीं समझे, देत है काल दरेरो ।

---

१ कृष्ण

अविचल सुखरी चाह करे सो, ले शरणो जिन केरो ॥४॥
जगमें नाम चिन्तामणि तेरो, सो मैं कह्यो टेरो ।
"रत्नचन्द" कहे नित नित जिनको लीजे नाम सवेरो ॥५॥

---

(२५)

राग -गुजराती गीत

प्रभुजी थारी चाकरी रे ॥ टर ॥

श्री अभिनन्दन स्वाम न रे, सिंघरू शिव रमणीरा कन्त ।
इन्द्र चन्द्र आनन्द सु रे, हाजिर रहे एकन्त ॥ प्रभुजी १ ॥
सुर नर असुर विद्याधरो, हांरे सेवे श्री जिनवरजी रा पाय,
प्रभु जी
आमुरन-चन्द्र विलोकने रे, हांरे रहे नेण कमल लोभाय
॥ प्रभुजी २ ॥
आनन्दघन जिनराज जी रे, वरसे अमृत निर्मलवान
प्रभुजी
मोघराघ शुद्ध प्रभु र, हांरे रह नेण कमल लोभाय
॥ प्रभुजी ३ ॥
मर मर मगन मटिया रे, तिरण तारण जिनदर, प्रभुजी
मर मर माहिर दीजिए, हांजी थांई तुम चरणांरी सेव
॥ प्रभुजी ४ ॥

शिव सुख दायक सायबा रे, हांजी थे तो तीन भवन सिर
मोड़ प्रभुजी
चरण समीपे राखजो रे, हांजी प्रभु "रतन" कहे कर जोड
॥ प्रभुजी ५ ॥

---

(२६)

चरण शरण में

तर्ज—जैवतीनी देसी

प्रभुजी दीनदयाल, सेवक शरणे आयो ॥ टेर ॥
भव सागर में बहुविध भटक्यो, अब मैं छेडो पायो
॥ प्र० १ ॥

चेत्र विदेह विराजे स्वामी, श्रीमन्धर स्वामी,
हूँ चरणे आवी नहीं सकतो शूं छे मुज में खामी ॥प्र० २॥
निज चाकर निभाव करणने, सहु जन दीसे वाला,
सेवक ने सायब नहीं तारे, इम वरते अवहेला ॥ प्र० ३ ॥
शुक्ल पक्षी गंठी भव भेदी, जद तुम दरशन रुच जागी,
रात दिवस सुपनान्तर मांही, तुम सेती लिव लागी ॥प्र०४॥
कुगुरु कुदेव कुधर्म नी लिवल्या, हिवे सर्वथा में तोड़ी
तारक देव सुणी तुम सेती, पूरण प्रीत मैं जोडी ॥प्र०५॥
हूँ जड़ आतम कारज संगी, पुद्गल सूं बहुप्रीत,

पिया सोनो कहे पृथ्वी थी, चतुर कारीगर रीत ॥प्र०६॥
वारि बिंदु पड़े कज-पत्रे, लहके मुक्ताकार,
त पराक्रम नहीं ओम बिंदु में, [1]रम-पत्र उपकार ॥प्र०७॥
तेहज सूत्र पड़े [2]पदया नहीं, त मिर सेहरो सोहे,
ते पराक्रम नहीं सूत-सूत्र नो, माली महिमा मोहे ॥प्र०८॥
नीर असुच पड़े गगा में, ते गंगोदक वाजे,
हूँ अवगुण दरियो पूरण भरियो, पिण भेट्यो जिनराज ॥प्र०९॥
व्यसन इन्द्री करम ने भेदी, आरम सम्वत (१८७५) सुहावे,
पूज्य गुमानचन्दजी प्रसादे, 'रतनचन्द' गुण गावे ॥प्र०१०॥

१ कमली पत्र　२ सूत।

(२७)

राजुल विलाप

तर्ज —भैरवी

रहो रहो रे सांवलिया साहिब, बोलत राजुल राणी ।
विन परमारथ छोड़ चले मोय, प्रीत तुम्हारी जाणी
॥ रहो० १ ॥
बहुत बरात बनाय के आये, साथ [1]सारंग-पाणी ।
तोरण सु रथ फेर चले जब, आश्रम मान समाणी
॥ रहो० २ ॥
सहु की आश्या करी निराशा, एमी बात सयाणी ।

१ बल भद्र

पशुअन के सिर दोष दियो पीया, काढी रीश पुराणी
॥ रहो० ३ ॥

रही मनोरथ-माला मनमें, इम उभो पिछताणी ।
तुम छोडी पिण में नहीं छोडू, ए हमची अधिकाणी
॥ रहो० ४ ॥

किये विलाप अनेक विविध पर, मोह दशा मन आणी
धन धन नेम जिनेश्वर साहिब, राख्यो [1]मन्मथ ताणी
नेम संजम सुण लीधो संजम, पामी पद निर्वाणी ।
"रतनचन्द" कह धन सतवंती, अविचल प्रीत मडाणी
॥ रहो० ६ ॥

१ काम

(२८)

(तर्ज:— निजर हजो ए देशी)

वीरजी सुणो ॥ टेर ॥

त्रिशला-नंदन साहिबा, सांभल दीन दयाल ।
विरद विचारी ने किजिये, सेवक नी संभाल ॥ वी० १ ॥
आप अपना दासनी, सहु कोई पूरे आश ।
मैं शरणो लियो आपरो, करसो केम निराश ॥ वी २ ॥
दुःख देई थांने तिरिया तो हूँ तो जोरी रह्यो हाथ ।
दर्शन किम देस्यो नहीं, आ अचरज की वात ॥ वी ३ ॥

नयने मैं निरख्या नही, रही मोटी अन्तराय । श्री ॥
रागद्वेष माहरे कने मिलसन दे महाराय ॥ श्री ॥ ४ ॥
पण सुनजर साहिब तणी, ये स्यूं करसी कगाल । श्री ॥
मन मान्या मेह वरषतां, जावे दूर दुष्काल ॥ श्री ॥ ५ ॥
कजली वन नहीं वीसरे, जठों रहया गजराज । श्री ।'
इण विध हूं परवश पड़यो, पिण चित चरणां रे मांय । श्री ॥
६ ॥
पिण पुद्गल परचो गणो, निज गुण सु विपरीत । श्री ॥
निरमल विन तू नही मिले, मैं जाणी माहरी रीत ॥ श्री
॥ ७ ॥
क्यू पराक्रम सबक तणो, क्यू साहिब नो साथ । श्री ॥
गरीब अनाथ ल निरखहो, थे छो गरीबनवाज ॥ श्री ॥ ८ ॥
मात मात अरजा करी, कर कर मन विश्वास । श्री ॥
महरबानगी अधिकी नहीं, पिण जाणजो आपरो दास ॥ श्री
॥ ६ ॥
चरण समीप राखजो, मै अरपाया सहु थोक । श्री ॥
दुरबल-भूत तो बाड़ले, गजी कहे मदु लोक ॥ श्री ॥ १० ॥
जाधाणा में पमर आय लियो विश्राम ।
'रतनचद कहे वीरन, कोडी कोड सलाम ॥ श्री ॥ ११ ॥

(२६)

समवसरण महिमा

(तर्ज—श्री गोतमस्वामी में गुण घणा)

जिनराज सदा ही वंदिए ।। टेर ।।

श्री सिद्धार्थनन्दजी प्रभु भगवन्त श्री महावीर
उपसम संजम आदरिया हुवा सूर वीर ने धीरजी ।
ज्यांने दीठा हर्षे हीरजी, प्रभु सायर जेम गंभीरजी
हुवा छः काया रा पीरजी ।

देव तिहां त्रिगडो रचे, प्रभु चार कोस अनुमान,
भूम थकी ऊंचो कह्यो, गाउ अढाई को ज्ञानजी.
घणो ऊंचो ने असमान जी, जिणमें ध्यावे आतम ध्यान जी
पाखंडी मूके मान जी ।। जि ।। १ ।।

सिर अशोक-छाया करे, प्रभु मांजरी लुल लुल जाय,
वीर विराज्या तिण तले, भक झोले शीतल वायजी
ज्यांने दीठां आनन्द थायजी, ज्यांरी सोवन वरणी कायजी
प्रभु पाप पटल टल जायजी ।। जि ।। २ ।।

स्फटिक-सिंहासन विराजिया, प्रभु छत्र धरावे सार
भामण्डल भलके भलो, रलियामणो रुप अपार जी.
नहीं जग में इण आकारजी, ज्यांरे चमर वीजंता चारजी
ज्यांने दीठां उपजे प्यार जी ।। जि ।। ३ ।।

गगन में गाजे दुन्दुभि, प्रभु अमर मखे आकाश
नभ गामी नर तुमे, आवो इहां पर हुल्लास जी,
हाथ जोड करो अरदास जी, थांरी सफल करे प्रभु आशजी
थांने देवे शिवपुर-वास जी ॥ जी ॥ ४ ॥

देव मिल्या नम-मारगे, प्रभु देख्यां कोडा कोड
गगन विमान खड़ा किया, कोई अलगा ने कोई ओढ जी
इम अरज करे कर जोड़ जी, कई भव सागर थी छोड जी
म्हारी टालो भवतणी खोड जी ॥ जि ॥ ५ ॥

भविक-कमल प्रतिबोधवा, प्रभु उदया चल जिम सूर
अमित-पदार्थ युत गिरा, वाणी गंगाजल जिम पूरजी
सुणवा दु:ख जावे दूरजी, प्रभु कर्म किया चकचूरजी,
इन्द्र चन्द्र मुनि है हजूर जी ॥ जि ॥ ६ ॥

ए संसार असार छे, भवि चेतो चेतो नरनार
भवसागर में भटकतां, पाम्यो मानव नो अवतार जी
हिवे आदरो संयम भारजी, ज्यों श्रावक ना व्रत धार जी
ज्यों पामो भवजल पार जी ॥ जि ॥ ७ ॥

राजगृही नगरी मभ्क, प्रभु जिनवर कियो बखाण
वाणी सुण जिनराजरी, कई उठ्या चतुर सुजाण जी
संयम लीयो हित आणजी, केई पहुँचा विजय-विमानजी
कई पामिया पद निर्वाण जी ॥ जि ॥ ८ ॥

कर्म-खपाय मुगते गया, प्रभु जग वरत्या जयजय कार
पूज्य गुमानचंद जी प्रसाद थी, "रतनचंद" कहै सुविचार जी
घणी मीठी राग मल्हार जी, कीनो रियां गांव मझार जी
सुण हरष्या बहु नर नार जी ॥ जि ॥ ८ ॥

---

(३०)

श्रीमन्धर स्तवन

(तर्ज —कृपा करो श्री वालेसर ए देशी)

श्री सीमन्धर सुण अलवेसर,तुम दरशण की बलिहारी ॥ टेर ॥

ललाट-पाट कपाट है सोहन, नासा उत्तिंग[1] है सुख कारी ॥ श्री ॥ १ ॥

पूनमचंद विराजे आनन,[2] आंखड़ाली तुम अणियारी[3] ॥श्री ॥ २ ॥

छत्र तीन छाजे सिर ऊपर, चामर की छवि है न्यारी ॥ श्री ॥ ३ ॥

सिर अशोक विराजे नीको, भामण्डल भलके भारी ॥ श्री ॥ ४ ॥

---

१ ऊंचा २ मुख ३ शोभनीय, सुन्दरकारी

इन्द्र-चन्द्र-नागेन्द्र-मुनिंद सब, सुरनर ते तुम चरणे प्यारी
॥ श्री ॥ ५ ॥
सुर-नर-असुर विद्याधर-किन्नर, अहो निश सेव करे थांरी
॥ श्री ॥ ६ ॥
चरण आय सह नहीं साहिब, प्रात प्रातः वन्दना म्हारी
॥ श्री ॥ ७ ॥
"रतनचन्द" कहे दव निरंजन, भवसागर वेगो तारी ॥
श्री ॥ ८ ॥

---

(३१)

सतगुरु वाणी

(तर्ज— नेवर सोना की द वेरी)

वाणी सतगुरु की, सुणो सुणो हो भविक मन लाय ॥ वा
॥ टेर ॥ ॥
मीठी आख्यो अमृत-धार, मटे मिथ्यात्व अधार — वा —
सुपर्वा समकित पर उद्योत[1], बले प्रकटे आतम ज्योत ॥ वा
॥ १ ॥
कपिलपुर नो सजति राय, नित जीव-मारण ने जाय — वा
मृग हस्नी ने मारयो तीर, बींध्यो वास शरीर ॥ वाणी ॥२॥

१ प्रकाश

दाख-मंडप बैठा मुनिराय, आय पडयो तिण ठाम – वा –
हरिण लेतां देख्या मुनिराय, में तो कीधो बड़ो अकाज ॥
वा ॥ ३ ॥

हाथ जोड पडियो ऋषि पाय, निज–अपराध खमाय – वा -
बोल्या नहीं गर्दभाली साध, तद जाण्यो कोप अगाध ॥
वा ॥ ४ ॥

कोपियो रिख बाले सहु लोग, म्हें तो कीधो कर्म अजोग-वा
डरतो देख बोल्या रिख राय, मोसु अभय तोने महाराय
॥ वा ॥ ५ ॥

तू पिण मत हण जीव अनाथ, यो राज न चलसी साथ-वा
मात पिता नारी परिवार, थांरे कोइयन चलसी लार ॥ वा
॥ ६ ॥

रंग–पतंग संसार स्वरूप, यो तो कपट कूड नो कूप – वा ·
इन्द्र–जाल सुपना नो ख्याल, तुमे मत भूलो महिपाल
॥ वा ॥ ७ ॥

निर्मलज्ञान सुण्या ऋषि वेण, तद खुलिया अन्तर नेण–वा
ततक्षण त्याग दियो संसार, शुद्ध लीधो संयमभार ॥ वा
॥ ८ ॥

ज्ञान पूरव आज्ञा उरधार, हुआ एकल–मल अणगार–वा –
क्षत्रिय राजऋषीश्वर मेट, सहु संशय दीधा मेट ॥ वा ॥९॥
भरतादिक हुआ भूप अनेक, शुद्ध संयम धरियो विशेख – वा

धरजो शुद्ध समकित भाव, रहिजो पमाद मत सू दूर ॥ वा

॥ १० ॥

सील सुखी शुद्ध धर वैराग, अंत मुगत गया महा-भाग-वा-
उतराध्ययन में यह अधिकार, श्री वीर कियो विस्तार ॥

॥ वा ॥ ११ ॥

जयपुर में कीधो चोमास, सहु पाम्या हर्ष-उल्लास – वा –
"रतनचन्द्र" ए कीधी ढाल, वराणु दीपक माल

॥ वा ॥ १२ ॥

---

(३२)

जिनेश महिमा

(तर्ज —खारच राग)

जिनराज की महिमा अति घणी, कोई छद्मीप न आवे मोमणी

॥ टेर ॥

सुर नर असुर विद्याधर किन्नर, सवा सार तुम तणी ॥

जि ॥ १ ॥

काम धेनु चिन्तामणी, सुरतरु में लाधो चिन्तामणी ॥

जि ॥ २ ॥

अमर देव सहु कौंन बरोबर, तू छे हीरारी कणी ॥

जि ॥ ३ ॥

मृत्य, पाताल के मांही, तुम स्निग्ध जाने सुखी ॥ जि ॥ ४॥

ध्यान तुमारो सहु नर ध्यावे, ज्ञानी ध्यानी ने महामुनी
॥ जि० ५ ॥
रात दिवस तुम वस र्‌या मन में दरशन होसी कर्म हणी
॥ जि० ६ ॥
सेवक नी यह अर्ज सुणी ने, टालो मरण जरा अणी
॥ जि० ७ ॥
"रतनचन्द" कहै तारो साहेब, तूं तारक त्रिभुवन धणी
॥ जि० ८ ॥

---

(३२)

गुरु गुण महिमा

(तर्ज—जय बोलो पार्श्व जिनेश्वर की)

मिलिया गुरु ज्ञान तणा दरिया ॥ टेर ॥
सुण उपदेश रेस गई तन की,
भव भव के पातक झरिया ॥ मि ॥ १
सुमत गुपत चित्त दृढ कर राखे,
पाले शुद्ध निर्मल किरिया ॥ मि ॥ २
सप्तवीस गुण पूरण घट में,
चरण करण शुद्ध गुण भरिया ॥ मि ॥ ३ ॥
परम अह्लाद कियो घट अन्दर,

दरस देख नेत्र ठरिया ॥ सि ॥ ४ ॥
"रतनचंद" कहै गुरु पदपंकज,
मेट गई भवजल फिरिया ॥ ५ ॥

(२४)

गुरु वचन अमीरस

मन सतगुरु सीख कहा भूले ॥ टेर ॥

फरत अनाद लयो मानव भव,
धर्म बिना आगे कहा खुले ॥ मन ॥ १
अथल असेपद आवे छिन में,
सतगुरु वच के कुल खुले ॥ मन ॥ २
पुद्गल फंद रचियो इस जग में,
देख देख चित कहा फूले ॥ मन ॥ ३
"रतनचंद" गुरु वचन अमीरस,
आतमराम सदा झूले ॥ मन ॥ ४

(३५)

उपकारी गुरु

गुरु सम कुण जग में उपकारी ॥ टेर ॥

मेट मिथ्यात कियो चित्त निर्मल,
ससिशिरोमण सुखकारी ॥ गुरु ॥ १

आतम ज्ञान अपूर्व पायो,
भर्म मिथ्या मेटी सारी ॥ गुरु ॥ २

इन्द्रिय चोर किया ठग ठावा,
मन महिपत लीधो मारी ॥ ३ ॥

आगम वेद कुरान पुराण में,
गुरु महिमा सुविस्तारी ॥ ४ ॥

गुरुगुण कहतां जिन पद लहीये,
क्रोड क्रोड़ जाऊं वारी ॥ ५ ॥

गुरु गुण लोप लियो कुण शिवपुर,
अपछन्दा जे अहंकारी ॥ ६ ॥

शिवपुर चावो तो सत् गुरुसेवो,
रात दिवस हृदय धारी ॥ ७ ॥

गुरु गुरु करत जगत सहु भूल्यो,
सेवो गुरु शुद्ध आचारी ॥ ८ ॥
"रत्नचन्द" कहै सतगुरु दर्शन,
देख देख लू बलिहारी ॥ ६ ॥

---

(२६)

गुरु वाणी

(तर्ज-राग सोरठ गिरनारी)

म्हाने रूडो लागे छे श्री गुरु उपदेश ॥ टेर ॥
सत्य वचन सुधारस[1] प्रकटे, कूड नहीं लवलेश ॥ म ॥१॥
मूल मिथ्यात्व-तिमिर[2] दुःख टालण, गुरू उपदेश दिनेश[3]
पुद्गल-रुची विषम-ज्वर मेटन, समकित रस प्रकटेश
॥ म ॥ २ ॥
आठ कर्म को धान्य विषमता, टाले सकल क्लेश ।
अमत अमत पुद्गल सहु पूरे, अब सुख लियो विशेष
॥ म ३ ॥
धन-धन ग्राम नगर पुर पाटन, धन सुन्दर उपदेश,
जहाँ सद्गुरु सिंहासन बैठी, भाखे दया-धर्म रेश ॥ म ४॥

---

१ अमृत २. अन्धकार ३. सूर्य

निरखत नयण भविक-जन हरसत, पामित सुख असेस,
गुरू वायक सुण खायक भावे, पावे मुगत अवेस ।। म ५ ।।
कामधेनु चिन्तामण सुरतरु, सद्गुरु वचन अजेश
'रतनचंद' कहै गुरु चरणांबुज, मुझ मस्तक प्रवेश ।। म ६ ।।

---

(३७)

–सांवलिया साहिब–

(तर्ज–मां मेटो हमारी ममता देशी)

सांवलिया सुरत थांरी, प्रभु मो मन लागे प्यारी ।। टेर ।।
समुद्र विजय सुत नीको, जादव कुल मंडन टीको ।।सा १।।
थांने राणी सेवा देवी जाया, थांरे इन्द्र महोत्सव आया
।। सा २ ।।
प्रभु रूप अनूपम भारी, देखत रीझत नर नारी ।। सा ३ ।।
प्रभु तोरणथी रथ वाल्यो, प्रभु जीव-दया व्रत पाल्यो
।। सा ४ ।।
प्रभु करुणा रस मन धारी, थे छोडी राजुल नारी
।। सा ५ ।।
प्रभु तप जप खप बहु कीनी, थे शिव रमणी वर लीनी
।। सा ६ ।।

हूँ रात दिवस मन ध्याऊं, हूँ दरशन तुम चो पाऊं
॥ सा ७ ॥
महर करो महाराजे, म्हारा सारो वांछित काजे ॥ सा ८ ॥
तारक तुम बिन नहीं कोई, में सरण मुम्यु लियो जोई
॥ सा ९ ॥
हे प्रभु बिरुद तुम्हारो पालो, हिवे तारक म करो टालो
॥ सा १० ॥
म्हारी लिव साहिब सु लागी, सहु भ्रान्ति मिथ्यात री भागी
॥ सा ११ ॥
गुरु गुमानचन्दजी सुखकारी, मोलख मतोई तुम्हारी
॥ सा १२ ॥
चौपन बैसाख में गायो, "रतनचंद" आनन्द सुख पायो
॥ सा १३ ॥

---

(३८)

वीर जन्मोत्सव

(तर्ज—"हिरणी जब चरे ललना ए देशी)

धन्न सिद्धारथ राजवी ललना,
सलाबी हो धन त्रिसला दे मात
जिनवर जनमियो ललना ॥ टेर ॥

दसमा स्वर्ग थी चवकरी ललना, ललाजी हो उपना गर्भ मॅझार ।। जि १ ।।

ईति, भीति दूरे टली ललना, ललाजी हो मिट गई जगतनी पीर ।। जि २ ।।

शुभ लगन सुत जनमियो ललना, ललाजी हो नाम दियो महावीर ।। सा ३ ।।

छपन कुमारी मिल करी ललना, ललाजी हो गावे गीत रसाल ।। जि ४ ।।

घर घर रंग वधावना ललना, ललाजी हो घर घर मंगल गान ।। जि ५ ।।

इन्द्र पांच रूपे करी ललना, ललाजी हो मेरु शिखर ले जाय ।। जि ।।

आठ सहस्त्र चौसठ घड़ा ललना, ललाजी हो प्रभुजी ने दिया न्हवाय ।। जि ४ ।।

देव घणो महोच्छव करे ललना, ललाजी हो, थई थई शब्द उच्चार ।। जि ।।

वाजा बाजे अनिघणा ललना, ललाजी हो मादलना धोंकार ।। जि ५ ।।

ठम ठम पग ठमका करे ललना, ललाजी हो घम घम गुग्घर वाजंत, जि०

महोत्सव कर देवता घणा ललना, ललाजी हो माजी पास
सार्यंत ॥ त्रि ६ ॥
पास लीना छोधी घणी नम्नता, नम्नाजी हो परणिया एकत्र
नार, त्रि०
तीस वर्ष घर में रह्या ललना, ललाजी हो लीनो संयम भार
॥ त्रि ७ ॥
तप तपिया अति आकरा ललना, ललाजी हो ध्यायो[1]
निर्मल ध्यान। त्रि०
घातकर्म[1] चकचूर ने ललना, ललाजी हो पाम्या केवल ज्ञान
॥ त्रि ८ ॥
जिन मारग दीप्यो घणो ललना, ललाजी हो कियो घणो
उपकार ॥ त्रि०
नर नारी तार्‌या घणा ललना, ललाजी हो पहुँता मुक्ति
मेंझार ॥ त्रि ६ ॥
पू गुमानचंदजी परसाद सु ललना, ललाजी हो 'रतनचंद'
करे अरदास, त्रि०
समत् अठारे पचास में ललना, ललाजी हो पीपाड़ कियो
चौमास ॥ त्रि १० ॥

१–घातीक कर्म–ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय मोहनीय अन्तराय

(३६)

श्री वामाजी रा नंद

(तर्ज–बिलारी देशी)

वणारसी नगरी सुन्दर अति सोभे हो, वामादेजी रा नंद
वामादेजी रा नन्द ॥ टेर ॥
परदेशी लोग वटाऊ तणा, मन मोहे हो जिनंद ॥ वा १ ॥
भू-भामण[1] सिर तिलक अश्वसेन राया हो वा० राणी सुख
दायक पुत्र रत्न जिन जायो हो जिनंद ॥ वा ॥
इन्द्र चन्द्र मिल प्रभुजी नो महोछव कीधो हो, वा०
संसार असार तज सजम मारग लीधो हो ॥ जि० ३ ॥
मोर चकोर जलधर द्विजराज ने ध्यावे हो, वा०
पास जिनंद आनन्द सदा मन भावे हो ॥ जि० ४ ॥
जगतारण जोगीसर तुम सुखदाई हो, वा०
कामधेनु चिन्तामणी सूं अधिकाई हो ॥ जि० ५ ॥
भव भव नाम तुम्हारो ही आडो आवे हो, वा०
नाम थकी शिव मोच तणा सुख पावे हो । जि० ६॥
गुणवंत ज्ञानी ध्यानी तणा मन मोहे हो, वां०
हंस, इंदु सुरसमय इकी सोहे हो ॥ वा ७ ॥
पूज्य गुमानचंद जी पुण्य जोगे पाया हो, वा०
"रतनचन्द" मन हूँस धरी गुण गाया हो जिनंद ॥वा ८॥

१–पृथ्वी रूपी स्त्री

(४०)

श्री शान्ति जिन महिमा

(तर्ज करहलागी देशी)

शान्ति जिनेश्वर सोलवां
शान्ति करो शान्तिनाथजी
तुम सम जग में कोई नहीं, थे तीन भवन का नाथजी
॥ शां १ ॥

विश्वसेन राजा दीपतो अचलादे थांरी माय जी।
सर्वारथ सिद्ध थी चवी करी, थे उपना गर्भ में आयजी
॥ शां० २ ॥

शांति नाथ प्रभु जन्मिया, शान्ति हुई सहुलोक जी।
दुःख दोहग दूरे टल्या, मिट गयो जगनो शोकजी
॥ शां० ३ ॥

चोसठ सहस्त्र रमणी परणिया, आयो समता-भाव जी।
संसार नां सुख भोगवी, संजम लियो चर चावजी ॥ शां ४ ॥

एक मास छद्मस्थ रया, थे ध्यायो निर्मल ध्यान जी।
चार कर्म चकचूर ने, थे पायो केवल ज्ञानजी ॥ शां० ५ ॥

शान्तिनाथ साता कर, आपद् जावे दूर जी।
मन-वांछित सुख सम्पदा, रहे भंडार भरपूरजी ॥ शां० ६ ॥

भूत-व्यन्तर राक्षस डिके, डाकण साकण चोर जी।

पृ० ४८ का शेष—गाथा स० ६ से आगे।

नामथकी आपद टले, मिटे शत्रु को जोर जी ॥ शां. ७ ॥
शान्ति समान संसार में, अवर न बीजो देव जी।
तिरण तारण जिनराजजी, हूँ सेव करू नितमेव जी ॥ शां० ८॥

सवत अठारे इकावने, पीपाड शहर चोमास जी।
पूज्य गुमानचन्दजी रे प्रसाद थी, 'रत्नचन्द' करे अरदास जी
शां० ॥ ६ ॥

(४१)

श्री मंधर महिमा

(तर्ज—पन्नारी देशी)

श्री मन्धर जिनदेव, प्रभू म्हारो दरसण देखण हिवडो उमगेजी । जि०
सारे थांरी सुरनर सेव-प्र० चोसठ इन्द्र उभा ओलगे जी ॥ जि० १ ॥

सुण सुण अमृत वाण-प्र० निर्मल पाणीजी वाणी आपकी जी ।
प्रकटे समकित रयन प्र० ततक्षण नासे मनसा पापरी जी ॥ जि० २ ॥

प्रभू गुण गहर गंभीर प्र० दरसण देखी ने हरखे आंखडी, जी । जी०
हुलसे हिवड़ो जी हीर प्र० विकसे काया कमलनी पांखड़ी, जी ॥ जि० ३ ॥

जग तारण जिनराज प्र० हूं पिण चाऊं जी चरणा री चाकरी जी ।
सारो म्हारा वंछित काज प्र० लहर मिटावो हो मो मद छाकरी जी ॥ जि० ४ ॥

प्रभु मुख सुर विकास प्र० पाप पलासे हो भासे
शुभ मती जी । जि०
राखो मोने चरणा रे पास प्र० "रतनचन्द" री याही विनती जी
॥ जि० ५ ॥

---

(४२)

सेवक की अरदास

(तर्ज—मनोरथा मंगरवी हो साहिब म्हारो दयू घर मान)

साहिब सांभलो हो प्रभुजी, सेवक नी अरदास ॥ टेर ॥
पु डरिकनी नगरी भली हो, प्रभुजी श्रेयांस राय उदार ।
माता थारी सत्यकी हो, प्रभुजी रुक्मणी नामे नार
॥ सा० १ ॥

संसार ना सुख भोगवी हो, प्रभुजी, लीधो संजम भार ।
केवल ज्ञान प्रकाशियो हो, प्रभुजी दल मिथ्या, विचार
॥ सा० २ ॥

आप बसो विदेह में हो प्रभुजी, हूँ पड्यो अति दूर ।
विच में मंगी भखरी पड़ी हो, प्रभुजी किम कर आऊँ हजूर
॥ सा० ३ ॥

सुरनर तुम सेवा करे प्रभूजी, नर नारयां ना ठाठ ।
हूँ आवीसकतो नहीं हो प्रभूजी, विच में विपमी वाट
॥ सा० ४ ॥

श्री सीमंधर साहेवा हो प्रभूजी, अर्ज करूं कर जोड़ ।
भवसागर भटक्यो घणो हो प्रभूजी, अव बंधन थी छोड़
॥ सा० ५ ॥

नरक निगोद में हूँ भम्यो जी हो प्रभुजी, कुगुरु तणे संग वैठ
सुख रति पाम्यो नहीं हो प्रभूजी, हिंसा धर्म में वैठ
॥ सा० ६ ॥

ओ दुःखमी आरो पांचमो हो प्रभूजी, घणा फैल फितूर ।
मैं धर्म पायो आपरो हो प्रभुजी मिथ्या मत कियो दूर
॥ सा० ७ ॥

रतन चिन्तामणी नाखने हो प्रभुजी, कांकर कुण ले हाथ ।
अटवी मांहीं कुणे भमे हो प्रभुजी, छोडी सखरो साथ
॥ सा० ८ ॥

अमृत भोजन छोड़ने हो प्रभुजी, तुसिया कहो कुण खाय ।
देवलोक ना सुख देखने हो प्रभुजी, नरक न आवे दाय
॥ सा० ९ ॥

मन वचन काया करी हो प्रभुजी, तुम चरणे रयो राच।
अवर इण में ओलखया हो प्रभुजी, मणी मेरोसे काच
॥ सा० १० ॥

निरधनियों भमियो घणो हो प्रभुजी, फरसा न आवे पार।
अबको शरणो आपरो हो, प्रभुजी दीजो पार उतार
॥ सा० ११ ॥

तारक धर्मज आपरो हो प्रभुजी, पर मन में आधार।
जे हिरदा में राखसी हो प्रभुजी, जियारो खेवो पार
॥ सा० १२ ॥

संवत अठारे सेपने हो प्रभुजी, नागोर शहर चौमासि।
पूज्य गुमानचंद जी ग प्रसादथी हो प्रभुजी, "रतन" करे
अरदास ॥ सा० १३ ॥

(४३)

श्री धर्मनाथ प्रार्थना

(तर्ज—शंकर बसे रे कैलाश में)

म्हारो मन लाग्यो धर्म जिनंद सु रे ॥ टेर ॥
धर्मतीर्थ वरताय रे, भविक-जीव प्रतिबोधने रे।

मुगत-महल में जावेरे ॥ म्हा० १ ॥
विजय-विमान थी चव करी, रतनपुरी शुभ ठाम रे।
भानुराय सुव्रतामातजी, जन्म लियो अभिराम रे
॥ म्हा० २ ॥
राणी परण्या अति सुलक्षणी रे आयो मन वैराग ।
तन धन जोवन जाण्यो कारमो, ततक्षण दीनो छःत्यागरे
॥ म्हा० ३ ॥
शुभ परिणामें पदवी प्रकटी रे, हुआ तीर्थंकरराय रे ।
सुर असुर मिल्या सहु देवता, लुल लुल लागे हो पाय रे
॥ म्हा० ४ ॥
तेज प्रताप तिहुँ लोकज मेरे, रयो तीन छत्र में फाब रे।
परखदा सोभे जिन मुख आगले रे, बाड़ी खुली है गुलाब रे
॥ म्हा० ५ ॥
सिर अशोक छाया करे रे, शोक न रहे लिगार रे ।
धोली तो धारा जाणो गगनरी रे, चंवर बीजें ज्यांरे चार रे
॥ म्हा० ६ ॥
सोहन कमल रचे देवता रे, जठे धरे प्रभु पाय रे ।

जिन नयणे[1] निरंज[2] निरखियारे, अवर न आवे दायरे
॥ म्हा० ७ ॥

रूप अनूपम अधिक विराजतोरे, दीठां अधिक सुहात रे ।
तुम सम सुत नहीं जनमियोरे, अवर अनेरी कोई मात रे
॥ म्हा० ८ ॥

वाणी तो मीठी अमृत सारखीरे, आखे शुभ पिवात रे ।
सुणता तो तृपत थावे जीवड़ोरे, अवर सुहावे नहीं बात रे
॥ म्हा ९ ॥

काच नो खंड अने किहां मणिरे, किहां तारा किहां चन्द रे
विषने अमृत रस नीं आंतरोरे, तिम अन्य देव जिनंद रे
॥ म्हा १० ॥

घणा जीवने जीनवर तारनेरे, मुक्त गया महाराज रे ।
अब हूं सरणों साहिब आपरेर, सारो वंछित काजरे
॥ म्हा ११ ॥

संवत अठार वर्ष चोपनेरे, मोटो शहर नागोर रे ।
पूज्य गुमानचंद जी प्रसाद थी रे "रतन" कहे कर जोड़ रे
॥ म्हा १२ ॥

---

१ मेरु २ कालिमा

(४४)

श्री युग मंधर स्तवन

(तर्ज–कांइय तारीफ करु हो)

श्री युगमंदिर साहिब केरो, चित्त नित दरशण चावे हो
॥ टेर ॥

निर्धन रे एक धननी इच्छा, भाग्य विना किम पावे हो
॥ श्री० १ ॥

नन्दन-वन सुख छोड़ स्वर्ग थी, तुम दरशण आवे हो,
अमृत वाणी कर इन्द्राणी, तुम गुण मंगल गावे हो
॥ श्री २ ॥

छत्र धरे सिर चामर वींजे, सुरनर सहु हरसावे हो ।
वर्षा काल प्रबल घन प्रगटयो, भव भव तपत मिटावे हो
॥ श्री ३ ॥

भविजन मोर निहोर करी, धुन सन्मुख आन बधावे हो
वाणी रो तरंग जग प्रकटी, सूत्र सिद्धान्त सुणावे हो
॥ श्री ॥ ४ ॥

निरखण नयन[१] मनोरथ म्हारे, पिण पूरण किम थावे हो,
सज्जन वल्लभ सुर मित्र न म्हारें, तुम सुं आन मिलावे हो
॥ श्री ॥ ५ ॥

---

१ नेत्र

"रतनचन्द" चरणारो चाकर, तुम दरसण ने ध्यावे हो
पूज्य गुमानचंदजी गुण सागर, तुम पद शुद्ध बतावे हो
॥ श्री ॥ ६ ॥

(४५)

दर्श पिपासा

तर्ज सुन्दर तोलयणी गहेरी

मनड़ो उमायो दरसण देखवा, चपल होय रयो चित,
हृदय सरोवर हो उछटे रे नीसरे, भावना भावत नित
॥ म ॥ १ ॥

आपने म्हारे हो छेटी अति घणी, पिण बस रया मुझ मन,
नाम तुमारो हो राखूं तापस नी परे, तरूण पुरुष जिम तन
॥ म ॥ २ ॥

चंद चकोरा हो मेघ ध्यावे सखी चातक जलधर प्रेम ।
प्यासो पाखी हो हंस सरोवरां, जिम तुम देखण प्रेम
॥ म० ३ ॥

राग ने द्वेष हो दोय बाड़ा घणा, प्रबल चारों कषाय ।
पंच प्रमादजं[१] हो रोग अगाध छे किण बिध मेलो थाय
॥ म० ४ ॥

---

१ मदिरा (मद्य), विषय कषाय, निद्रा और विकथा

पुद्‌गल सेती हो रूच नहीं उतरे, जिन गुण थोथा रंग।
निर्मल संजम हो दुक्कर आराधना, अष्टवैरी[1] मुझ संग
॥ म० ५ ॥

संशय म्हारा हो सारा ही टाल सूं, गाल सूं मोह मद छाक
नयणे निरखी हो चरणज भेट सूं, मो मन यह अभिलाख।
॥ म० ६ ॥

मन हिलोला हो जल किल्लोलसा मांडे जी खेंचा तान
तरूण पुरुप रे हो सिर जिम केवडो, ज्यूं थारा वचन प्रमाण
॥ म ७ ॥

महर निजर कर मुझने निहाल जो, टालजो मत महाराज
सेवक चिन्ता हो साहिब ने छे, राखजो अविचल लाज
॥ म० ८ ॥

पीपाड माही हो वर्षज साठ में, सुखे कियो चोमास
जिनवर ध्यावे हो "रतनचन्द" यों कहे तिणने छे शाबास
॥ म० ६ ॥

---

१ आठ कर्म

(४६)

सेवक की विनती

(तर्ज लिमाकारी)

प्रभु म्हारी विनतड़ी अवधार के दरसण दिजीए ए राज ॥टेर॥
सहु सुख दायक स्वामी जगत ना अन्तर जामी
प्रभू म्हारा कृपा कर महाराज के शरणे लिजिए जी राज
॥ द० १ ॥

क्षेत्र विदेह विराजियाजी श्रीमंधर जिन देव
गुण मणी अतिशय भली, धारी सारे सुरनर सेवके
॥ द० २ ॥

पारस फरस्या थी हुवे जी लोहो कचन रूप
तुम दरसण थी साहबा, रंक हुवे पद भूप के ॥ द० ३ ॥
सिद्धस मिंहो हो रयो जी, निज पद थी प्रतिकुल
भेद पाया भावट मिटे, कटे कर्म को मूल के ॥ द० ४ ॥
मृग भुरे मद कारणे जी, आपो लखे न आप
सायर में तिस्यो रहे जी, पोते जियारे पाप के ॥ द० ५ ॥
निज–गुण संपत ना लखे जी, रहे रांक नी रीत
पड़े फजीती जग में, पर सु करतां प्रीत के ॥ द० ६ ॥

आगम अरथ पावे नहीं, वाक जाल ने भूल
रहे भगुल्या पात ज्यों, सहे भर्म की शूल के ॥ द० ७ ॥
नरक निगोद नी वेदना, भव-भ्रमण में कीध
वसु वरगणा हल्की पड़ी, तरे अबके ओलख लिध के
॥ द० ८ ॥
तुम दरशण विन सायवाजी, लही न आतम सोध
भ्रम जाल में भटको कांई, जिम रोही को रोज के ॥द० ९॥
सहु अर्जी नी एक छः जी, सांभलजो महाराज
जिम तिन कर निरभावसी, राखी निज पद लाज के
॥ द० १० ॥
अष्टादस छियांसियेजी, महामन्दिर चोमास
"रतनचन्द" साहिब बिना, मिटे न गर्भावास के ॥द० ११॥

---

(४७)

श्री नेमीश्वर जिनराज

(तर्ज—उमादे भटियाणी—श्री आदेश्वर स्वामी हो)

नेमीश्वर जिन तारो हो, तुम तारक शरणे आवियो,
थे मोटा देव महंत,

पर उपकारी आया हो, कृपा थांरी दिन दिन करे,
थांरी सूरज सरकी कन्त[1] ॥ ने० १ ॥
समुद्रविजय घर राणी हो, मीठी वाणी वल्लभ घणी,
सेवादेवी सुख कन्द
माता पिता सुख पाया हो, सांवलियारी सूरत देखने,
मुख पूरण पुनमचन्द ॥ ने० २ ॥
तोरण सी रथ वालियो, दया पाली रथ छोड़ने,
थे लीधो संयम भार
सहस्त्र पुरुष संगाते हो प्रभु दीक्षा लिधी दिपती,
लारे निकली राजुल नार ॥ ने० ३ ॥
चोपन दिन में नेमीश्वर हो, साहब छद्मस्थ पणे रया,
थे ध्यायो निर्मल ध्यान,
चार कर्म चकचूरी हो, निवारी आश्रव आतमा,
प्रभु पाम्या केवलज्ञान ॥ ने० ४ ॥
एक हजार वर्ष रो हो प्रभु, आयु परजा पालने,
थे चढ़िया गढ़ गिरनार,
पांच से छत्तीस हो मुनि दीसे साथ पाठ में,
थे पहुँचा मुक्त मझार ॥ ने० ५ ॥

१ क्रांन्ति

अन्तरजामी स्वामी हो, शिवगामी सांभल सायवा,
म्हारो जीव तुमारे पास,
दया करी शिव दीजे हो, प्रभू लिजे हाथ संभायने,
सफल करो मुजआश ॥ नें० ६ ॥
मोहन गारो प्यारो हो प्रभू ज्ञान तुमारो पामीयो,
म्हारो चित्त चकवो करे केल
जोगीश्वर अलवेश्वर हो, जिनेश्वर साहिब सांभलो,
मोने शिव रमणी रंग मेल ॥ नें० ७ ॥
प्रीतडली तुम ऐसी हो, छेती ऐती किम सायवा,
पिण तुम छ मन नहीं कोय,
म्हारे तो तुम सरिसो हो, जग में कोई नर दिसे नहीं,
स्वामी सेवक सामो जोय ॥ नें० ८ ॥
आस करी हूँ आयो, सुख पायो वाणी सांभली,
म्हारो मन हुवो प्रसन्न,
अविनाशी अविकारी हो, जगतारी महिमा थांयरी,
सहु कोई करे धन धन ॥ नें० ६ ॥
तुम नाम थकी सुख लहिया हो, सही पामे शिवपुर संपदा,
पातक सब जावे दूर,

मन वांछित सुख पायो हो तुम नामे वंछित सायवा,
रहे भडार भरया भरपूर ॥ ने० १० ॥
समत अठार गुणपच्चास हो चोमासे मिलाडे रया,
सहु पाम्या हर्ष हुलास,
पूज्य गुमानचदजी प्रसाद हो जोड करी प्रभु,
"रतनचद" तुमारो दास ॥ ने० ११ ॥

---

(४८)

नेम नगीनो रे

(तर्ज–कपजी मोडगोरे, साधुजी करे बखाण सुणजी छाडदो रे)

नेम नगीनो र गोरख थी रथ फर सयम लीनों र
॥ ने० टे० ॥
समुद्र विजय जी को नन्दन नीको, सांवल वरण शरीरो रे,
छप्पन क्रोड में शोभरयो जिम, सोवन मुद्रा मे हीरो रे
॥ ने० १ ॥
सिर पचरगी पाग विराजे आभूषण अग सोहेरे ।
हरी हलधर सा भानी बनिया, इन्द्र तमासो जोवेरे
॥ ने० २ ॥

गज[1] घटा उमडी चऊं दिश थी, अश्व[2] अनोपम भारीरे,
रथ थर विकट बणाया चऊं कानी, पैदल बहु नर नारी रे
॥ ने० ३ ॥

इण परवारे परवरयो स्वामी, पशुवारी सुणी छ पुकारो रे,
फरी करूणां रस पाछा वलिया, लीधो संजम भारोरे
॥ ने० ४ ॥

राजुल सुण मुरछागत पामी, बोले मधुरी वाणी रे,
आठ भवारो नेह हुँतो जे, तोड़ी प्रीत पुरानी रे ॥ ने० ५ ॥
जो तुम मन संजम लेवण रो, तो किम जान बणाई र,
तुम सा पुत पनोता होई ने, जादव जान लजाई रे
॥ ने० ६ ॥

मोह कर्म वश राजुल एहवा, बोले वचन सरागी रे,
हरी हलधर ना वचन सुणी ने, ततक्षण संसार दियो त्यागीरे
॥ ने० ७ ॥

गढ गिरनार चली वन्दन कु', उसरियो जलधारो रे,
वस्त्र भिजाणां सति तणा जब, पैठी गुफा मझारो रे
॥ ने० ८ ॥

१—हाथियों का समूह २—घोड़ा

वस्त्र रहित देखी ते बाला, रहनेमी चित चलियो रे,
ज्ञान वचन सतीना तत्वस्व, धर्म में सेंठो अति करियो रे
रहनेमी नेमीश्वर राजुल, तप जप खप बहु किनी रे,
उत्तराध्यन अध्ययन वावीस में शिव रमणी वर लीनीरे
॥ ने० ६ ॥

समत अठारे वर्ष तेपने, नागोर शहर चोमासो रे,
पूज्य गुमानचन्द जी प्रसाद "रतन" करे अरदासो रे
॥ ने० १० ॥

---

(४६)

दर्श पिपासा

(तर्ज—झल रही निंद हो मेवासा लोभी)

सुख कारी हो जिनजी महर करी ने दरशन दीजिए ॥ टेर॥
मनडो उमायो हो दरशन देखवा, जैसे चन्द चकोर हो, सु०
तुम गुण डोरी मुझ मन वस कियो, जिम चकरी वस डोर हो
॥ सु० १ ॥

दूर दिसावर आसो अति घणो बिच में संगी स्वाम हो, सु०

मन सु ं तो अन्तर मूल राखू ं नहीं, पिण मोटो मोह कर्म पहाड़ हो ॥ सु० २ ॥

श्री मंधर गुणनिधि जल भरया, मुनिवर हंस अनेक हो,सु०
मुक्ताफल निर्मल गुण ग्रह, कर कर बुध विवेक हो ॥ सु० ३ ॥

रींझ अमोलक सायव आपरी, कर देवो आप सरीखो हो, सु०
म्हारी तो इच्छा साहिब एहवी, नित रहूँ आप नजीक हो ॥ सु० ४ ॥

वाणी सुधारस जोजनगामिनी, बरसे अमृत वेण हो सु०
रूप अमोलक निखरी आपरो, सफल करें निजनेण हो ॥ सु० ५ ॥

काल अनन्त दुःख में भोगव्या, तुम गुण सम जिनराज हो सु०
पूर्व पुण्य थी आवी मिली, भव जल तारण जहाज हो ॥ सु० ६ ॥

काल विषम, सर्वज्ञ को नहीं, इण ही भरत मंझार हो, सु०
पिण दुःख मेटन तुमने भेटवी, जिनवाणी आधार हो ॥ सु ७ ॥

महर नजर किजो मोपरे, थें छो दीनदयाल हो, सु०

बिरद बिचारी ने शिवसुख दीजिये, ज्यु निज गुण दीपक
माल हो ॥ सु ८ ॥
संवत अठार वर्ष[1] तिहोत्तरे, चोमासो किशन दुरंग हो,
"रतनचद" री याहीज विनती, नित रहूं आपरे सग हो
॥ सु० ९ ॥

(५०)

वर्धमान स्तुति

श्री सिद्धार्थनंद जिनसर, जगपति हो लाल ॥
लीधो संजमभार, तजी त्रिय रिद्ध छती हो लाल ॥ १ ॥
उपन्यो केवल ज्ञान, त्रिगडो देवता कियो हो लाल ।
भेटे जिनवर पाय, हरखे सुरनर हियो हो लाल ॥ २ ॥
दे जिनवर उपदेश, भराउ गाजीयो हो लाल ।
मोह मिथ्यातरी तपत के, सगलो भाजीयो हो लाल ॥३॥
उमटी भवि असराल, माथी बसधर' समी हो लाल ।
मीठी तुषनी वात, भविक जन मन गमी हो लाल ॥ ४ ॥
बरसे अमृत रस मेन, सुखी सहु हरखीया हो लाल,

१ मेघ

ठर रया दोनूं ही नेण, जिनेसर निरखिया हो लाल ॥५॥
भूख तिरखा जावे भाग, हियो हर्षे घणो हो लाल ।
सुख वेदे वनमांहिं के, नंदन वन तणो रे लाल ॥ ६ ॥
सुणसुण जिनवर वेण, आशा मन आसता हो लाल ।
ले ले संजमभार, पाम्या सुख सास्ता हो लाल ॥ ७ ॥
मोर ध्यावे एक मेघ, चकोर ज चंद ने हो लाल ।
रात दिवस मन मांय, मैं ध्यावुं जिनंद ने हो लाल ॥८॥
तारक सुण जिनराज के, शरणे आवियो हो राज ।
मेटीयो दुःख जंजाल, परमसुख पावीयो हो राज ॥ ९ ॥
डेह ग्राम मझार-के, ढाल किधी भली रे लाल ।
पूज्य गुमानचन्दजी प्रसाद, सहु पुन्यरली हो लाल ॥१०॥
"रतनचन्द" अरदास, साहिब अवधारजो हो लाल
भवसागर थी वेग हिवे, मोय तारजो हो लाल ॥ ११ ॥

स्तुति विभाग समाप्त

औपदेशिक विभाग

(१)
सुमति की सीख
(तर्ज—राग काफी होली री)

अरजी सुणो एक हमारी, विनवै सुमता नारी ॥ अ० टेर ॥
सुमत सखी करजोड़ कहत है, हूँ छूं दासी तुमारी
आप विरह इचको दुःख पाऊं, मत राखो मुझ न्यारी
॥ अ० १ ॥
आज्ञा लोप चलूं नहीं उवट, हूँ नित आज्ञाकारी,
अपछंदी अविनीत कुपातर, कामण 'कुमत' लिगारी
॥ अ० २ ॥
मोह महामद पाय अभागण, ठगिया सहु संसारी,
ऊंडी देत नरक की नींवां, कर कर घोर अंधारी ॥अ० ३॥
मोसु केल मेल सुख करतां, जग कहसी ब्रह्मचारी,
"रतन" सीख सुमती की धरतां, शिव रमणी छें त्यारी
॥ अ० ४ ॥

(२)
परस्त्री–निषेध

(तर्ज—होरी)

मत ताको नार बिरानी[1], हेरी आ नरक निशानी
॥ म० टेर ॥

परनारी छे काली नागण, के विष-बेल समाणी ।
तेज पराक्रम पीलण अजेए, एयर मही पाणी,
क गुण-वन बालण छाणी ॥ म० १ ॥

रावण राय त्रिखंड को नायक, सीता हरी घर आणी, -
राम चढ्यो दल बादल लेकर, मारयो सारंग-पाणी,[2]
-ये जग में प्रकट कहानी ॥ म० २ ॥

पद्मोतर निज-राज गमाई, कीचक मीच लहाणी,
मणिरथ मोह्यो मैणरया वश, अपजस लियो मनाणी,
कथा आगम में आणी ॥ म० ३ ॥

गौ-ब्राह्मण ने बाल हत्या रिख, नार हत्या पिण आणी,
तिणथी पाप अधिक कह दाख्यो, मारयो कवल नाणी,
भनत दुखारी खानी ॥ म० ४ ॥

१—पराई, २—लक्ष्मण जी

"रतन" जतन कर मन थिर राखो, छोडो कुमत पुराणी.
मुगत महल की सहल अचल सुख, मुगत रमण सी राणी,
या वीर जिणंद बखाणी ॥ म० ५ ॥
साल छियासी महामन्दिर, में शील कथा सु बखाणी,
शील विना सहु जन्म अकारथ, क्या राजा क्या राणी,
शील जस उत्तम प्राणी ॥ म० ६ ॥

(३)

परस्त्रीगमन निषेध

(तर्ज—राग-घट)

चंचल छैल छबीला भँवरा, परघर गमन न कीजे रे
॥ चं० टेर ॥
जिण पाणी थी, माणक निपजै, सो पर-घर किम दीजे रे,
लोक हंसे अरू सिर बदनामी आव[१] घटे तन छीजे रे
॥ चं० १ ॥
संकट कोटि सहे जग जेला, आगमवेण सुणी जे रे।
अमृत रूप ये विष हलाहल, सो रस कबहु न पीजे रे
॥ चं० २ ॥

१—इज्जत

परनारी को संग किया सु, पापे पिंड भरीजे रे।
छ ड़ी ढेर नरक की निखरी, सिख में साय पड़ीजे रे
॥ पं० ३ ॥

"रतन" जतन कर शील अराधो, मन वांछित सुख लीजेरे,
मुगत महल की सहल अचल सुख, अविचल राज करीजे रे
॥ प० ४ ॥

---

(४)

कर्म फल

(तर्ज—राग परवणा लावणी)

कर्म तणी गत न्यारी, प्रभुजी, कर्म तणी गत न्यारी
॥ प्र० टेर ॥

अलख निरंजन सिद्ध स्वरूपी, पिण होय रयो ससारी
। प्र० १ ॥

कबहुक राज करे मही-मण्डल, कबहुक रंक भिखारी,
कबहुक हाथी समचक होता, कबहुक खर[१] असवारी
॥ प्र० २ ॥

१—गधा

कबहुक नरक निगोद बसावत, कबहुक सुर अवतारी,
कबहुक रूप कुरूप को दरसन, कबहुक सूरत प्यारी
|| प्र० ३ ||

बड़े बड़े वृक्ष ने छोटे छोटे पतवा[1], बेलड़ियांरी छवि न्यारी,
पतिव्रता तरसे सुत कारण, फुहड़ जण जण हारी
|| प्र० ४ ||

मूर्ख राजा राज करत है, पंडित भए भिखारी,
कुरंग[1] नेण[3] सुरंग बने अति, चूंधी पदमण नारी
|| प्र० ५ ||

"रतनचन्द कर्मन की गत को, लख न सके नरनारी,
आपो खोज करे आतम वश, तो शिवपुर छे त्यारी
|| प्र० ६ ||

१-पत्ता, २-हरिण, ३-नेत्र

जन्म गमायो

(तर्ज–बिहाग राग)

(५)

जीवड़ला यों ही जनम गमायो ॥ टेर ॥

धर्म तणो मरम न जाण्यो, भ्रम में दिवस गमायो ।
कर्म कठिन कर नरक पहुँचो, बहुत कष्ट तन पायो
॥ जीव० १ ॥

नरक मांहि जम दोला फिरने, मालासु अधर उठायो ।
पकड़ टांग शिला पर पटकी, चिहुँ दिस मांहि भमायो
॥ जीव० २ ॥

सर्प, स्वान,[1] सिंह रूप करीने, पकड़ पकड़ तोने खायो ।
ऊंधे माथे कुम्भी[2] मांहि, अग्नि मांय होमायो रे ॥जी० ३॥
लोही-राध भरी वैतरणी[3], तिण मांहि तोने डुबायो ।
मिनख जनमते पायोर मूरख, हाथ कछुयन आयो
॥ जीव० ४ ॥

धर्म-ध्यान गुरु ज्ञान न मान्यो, आतम ज्ञान गमायो ।
तारण-धर्म जिनेश्वर केरो, हाथ कछू ना आयो ॥ जी० ५ ॥
धन धन धर्म करे जग मांहि, मिनख जनम भल पायो ।
कहत "रतन" धन जगत सिरोमणि, जिन धरमे चित
लायोरे ॥ जी० ६ ॥

१–कुत्ता, २–पाथी, ३–नदी

(६)
समझ का फेर

(तर्ज–)

बड़ो समझ को आंटो[1] जगत में, बड़ो समझ को आंटो
|| टेर ||

सुण सुण धर्म, शर्म नहीं उपजत, विषम कर्म को कांटो
|| ज० १ ||

संवर त्याग, उपावत आश्रव, कष्ट करे उफराटो।
मन वच काय कमावत सावज्ज[2], पड़ रही भूल निराटो
|| ज० २ ||

जग दुःख टाल हिये सुख माने, रूक्यो ज्ञान गुण घाटो।
आपो भूल पड़यो इन्द्रियवश, मिटे न मोह को फाटो[3]
|| ज० ३ ||

श्री जिन-वचन दिवाकर[4] प्रकटया, उड्यो भर्म को टाटो।
''रतनचंद'' आनन्द भयो अब, लख्यो साररस लाटो
|| ज० ४ ||

१–फेर, २–पाप करणी, ३–पगड़ी, ४–सूर्य।

(७)

कपट का भेष

(सर्व विहाग राग)

भेष धर यूं ही जनम गमायो ॥ टेर ॥

सज्जन स्वांग, सांग धर सिद्ध को, खेत सोवतां¹ को खायो ॥ भे० १ ॥

घट घट कपट निपट चतुराई, आसवा हद² समायो,
अतर मोग, योग की बतियां, बग ध्याली छल छायो ॥भे०२॥

घर मर नार निपट निम रागी, दया धर्म मुख गायो ।
सावद्य-धर्म सपाप³ परूपी, जग सबलो भरमायो ॥भे०३॥

वस्त्र-पात्र-आहार-थानक में, मुरखो दोष लगायो ।
संत दशा बिन संत कहायो, को कांई कर्म कमायो ॥भे०४॥

हाथ सुमरणी, हिये कतरणी, लटपट होठ हिलायो,
जप तप संयम आतम गुण बिन, गाडर सीस मुंडायो॥भे०५॥

आगम वेद अनूपम सुणने, दया-धर्म दिल भायो,
"रतनचन्द" आनन्द भयो अब, आतम राम रमायो ॥भे०६॥

१-दूसरों का, २-मर्यादा, ३-पाप सहित ।

(८)

लगन की पीड़ा

(तर्ज–राग काफी)

कठिन लगन की पीर[1] रे, कोई लागी सो जानी ॥ टेर ॥
बाहिर घाव कबहु नहीं दीखे, दाभ्रत हिवडो[2] हीर रे ॥१॥
संकट पड्यां निकट कुण आवे, सुख में सहु को सीर,[3]
नेम कृपाल दयाल के उपर, सद के उवारुं शरीर ॥ २ ॥
परभव प्रीत करी पीतल सी, कंचन रेख कथीर,
अवला केअत जी अलवेसर, क्या हम में तकसीर ॥ ३ ॥
राजा राम विलाप किए अति, विकल भाव अधीर,
त्याग सुणी वैरागण हुयगी, ओढ "रतन" शुद्ध चीर ॥ ४ ॥

---

(९)

निन्दक उपकार

(तर्ज–)

निंदा मोरी कोई करो रे, दोष बिना सोचन कोय ॥ टेर ॥
निर्मल संजम सुद्ध परणामें, कासुं कहसी लोय ॥ नि० १॥
आप तणा गुण कर कर मैला, निर्मल करदे मोय,

१–पीड़ा, २ हृदय का हीर-सार, ३–हिस्सा

निंदक सम उपकार करे कुण, अंत करे ना जोप
|| नि० २ ||

बिन साबुन रुजगार दियां बिन कर्म मैल दे धोप।
"रतन" जतन कर मन शुद्ध राखो सोने काट न होय
|| नि० ३ ||

---

(१०)

विषयासंग का परिणाम

(तर्ज—)

मत कोई करियो प्रीत, दुःख के फंद पड़ेला ॥ टेर ॥
प्रीत सखे वश प्राण दिया तज, हिरण सुण सुण गीत
|| म० १ ||

दीप पतंग पड़े नेणा वश, मधुकर[१] मरे सुगंध,
रस रसना वश मीन[२] मरत है, कुंजर[३] होय फजीत
|| म० २ ||

दुश्मन पांच जोरावर जोधा, कपटी करे कुरीत,
"रतन" जतन कर जो वश राखो, मोह कर्म ल्यो जीत
|| म० ३ ||

१—भंवरा २—मछली ३—हाथी

(११)
भ्रमना छोड़ो
(तर्ज–मुखड़ा क्या देखे दर्पण में)

तूं क्यों ढूंढे वन वन में, तेरा नाथ वसे नैनन में ॥ टेर ॥
कई यक जात प्रयाग बणारसी, कइयक वृन्द्रावन में
प्राण वल्लभ वसे घट अंदर, खोज देख तेरा मन में
॥ तूं० १ ॥
तज घर वास वसे वन भीतर, छार[1] लगावे तन में,
धर बहु भेष रचे बहु माया, मुगत नहीं छे इन में
॥ तू० २ ॥
कर बहु सिद्धि, रिद्धि, निधि आपे, बगसे राज बचन में,
ये सहु छोड़ जोड मन जिनसुं, मुगति देय इक छिन[2] में
॥ तूं० ३ ॥
मूल मिथ्यात मेट मन को भ्रम, प्रकटे ज्योत "रतन" में,
सद् गुरु ज्ञान अजब दरसायो, ज्यों मुखड़ा दरपण[3] में
॥ तूं० ४ ॥

१–राख २–क्षण ३–मुख देखने का कॉच

(१२)

राजुल विलाप

(तर्ज—)

रूप, स्वरूप, अनूप, अमूरत, मोही रया ईद चंदाजी
नेम जिणदा मोने, बिन अपराधे छोडी जी

॥ टेर ,। ने० १ ॥

अबी बरात चिखेर ने चाल्या, ये बालक ना छंदाजी[1]

॥ ने० २ ॥

पूर ओलभो कहन सकी थी, समुद्रविजयजी ना नंदाजी

॥ ने० ३ ॥

पूर सताप मरि अमदा हु, कही न सके दु ख इन्दाजी

॥ ने० ४ ॥

पशु नो पाप देखी परमेश्वर, कुन रच्यो ये फंदाजी

॥ ने० ५ ॥

राजुल एम विलाप किए अति, मोह कर्म मत मंदाजी

॥ ने० ६ ॥

"रतनचंद" धन्य नेम जिनेश्वर, छोड दिया सब फंदाजी

॥ ने० ७ ॥

१—खेल

१३

प्रतिज्ञा पालन

तर्ज—

घर त्याग दिया जब क्या डरना ॥ टेर ॥

कर केसरिया रण उतरिया, पूठ दिखाय के क्या फिरणा
॥ घर० १ ॥

सन्मुख आय अडे रण जोधा, कायर होकर क्यों मरणा ।
कायर हुआ पिण गरज न सरसी, लाजसी सतगुरु का शरणा
॥ घर० २ ॥

वचन कही पलटे पल पल में, ते नर पशु पद में गिणना ।
सत पुरुषा को वचन न पलटे, सुख दुःख ले निज अनुसरणा
॥ घर० ३ ॥

चहुँ गति मांही भटक दुःख पायो, अब झाल्या सतगुरु
चरणा ।
'रतन' जतन कर सत सुध राखो, जग सागर सुख सुं तिरणा
॥ घर० ४ ॥

१४

कर्म फल

(तर्ज—राग काफी)

म्हारा प्रभुजी हो, कर्म गत जाय न जाणी ॥ टेर ॥

जग में थाणी चन्दनबाला, सतियाँ में इधकाणी
पापक हाथ पड़ी परवश जब, चोहटे हाट बिकाणी
॥ म्हा० १ ॥

पतिव्रता सीता सतवन्ती, जग सबला में जाणी
अग्निकुण्ड नाखी रघुपतजी, तत्क्षण हो गयो पाणी
॥ म्हा० २ ॥

त्याग वनिता पर वश भमियो, बेची सुतारा राणी,
हरिश्चंद्र राजा महा सतवतो, नीच घर आणयो पाणी
॥ म्हा० ३ ॥

मुंज भूप धारा धिप[1] कहीजे, गोली भीख लगाणी,
ठीकरा हाथ ले फिर्यो घर घर में घणी मोत सहाणी
॥ म्हा० ४ ॥

बरस दिवस अन्न पाणी न मिलियो, आदि जिनेश्वर नाणी

---

१ धारा नगरी का स्वामी

बारे वरस वीर दुःख पायो, जग में प्रकट कहानी
॥ म्हा० ५ ॥

नगर द्वारिका करी सोवन मय, इन्द्र तणो अगवाणी,
कृष्ण देखतां सुर दीपायन, बाल करी धूलधाणी
॥ म्हा० ६॥

'रतनचन्द' कर्मन की गतिका, अनंता अनंत कहाणी,
आपो खोज करे आतम वश, तो ले पद निरवाणी
॥ म्हा० ७ ॥

१५

सांची सीख

तर्ज—

थारे जीवा भूल घणी रे ॥ टेर ॥

आल पंपाल मांही रहे रातो, तज जिनराज धणी रे
॥ थारे२ १

कुमत कुपातर महा दुःख दायक, ते कीनी निज घरणी रे
सुमत सखी रो वचन न मांने, आ भूल अनादि तणी रे
॥ था० २ ॥

अल्प सुख ने दुःख बहुतेरो आखित¹ श्री वीर भणीरे
परमाधामी सखत मारा सु, पींचे एक भणी रे
॥ अ० ३ ॥
पुद्गल प्रीत करे तु निश दिन, आ नर्क तणी करणी रे
राग द्वेष छोड़े तन मन स, तो हाजिर शिवरमणी रे
॥ आ ४ ॥
विषय तणां सुख स्वपरे कारण, हारे "रतन" भणीरे
सुमत सीख माने नहीं मूरख, कुमत बधू परणी र
॥ आ ५ ॥

१६

रसना इन्द्रिय निग्रह

तर्ज—

रसना विगर विचारी मत बोल ॥ टेर ॥
विगर विचार्यां वचन बदूयां सु, घटसी थारो तोल
॥ रसना० १ ॥
वचन उचार चतुर नर करले, मान सही को मोल

१ आखित–कहा

आल पंपाल वढे अविचार्यो वाजे अपजस ढोल
॥ रसना० २ ॥

बीजा में एक दोष दोय तोमें¹, स्वाद बिगारे अमोल
जो कोई धर्म बने मुख बोल्यां, झट दे तालो खोल
॥ र० ३ ॥

जो कोई आण उपाद उठावे, वचन वदे डमडोल
तो तूं जाण उपाद करे नर, देत कर्म झकझोल
॥ रस० ४ ॥

सतगुरू वचन कुठार करीने, कर्म काठ को छोल
"रतनचन्द" कहे इतनो में तोइं, कर लीधो छे कोल
॥ रसना० ५ ॥

१७

विषय विडंबना

(तर्ज—पूर्ववत्)

विषया वश जन्म गयो रे ४ ॥टेर॥

सूखो करक* स्वान सुख मानत, अमृत आहार लह्यो रे,
अपनो रुधिर आप सुख मानत, मूरख राच रयो रे ॥वि॥१॥

१—तेरे में *सूखी हड्डी ।

राजा आवे तो घर लूटे, मग में कुवस लग्यो रे,
खर पाडे वसि मस्तक मूंडे, फिट फिट सर्व कह्यो रे॥वि२॥
अलतो धम्म करे जम राजा, घर हर कंप रयो रे,
परनारी प्यारी कर धारी, परवश दु:ख सह्यो रे ॥वि॥३॥
"रतन" अतन कर शील आराधो, नीठ नीठ मग लह्यो रे
अब के चूक पड़ी जीव तो में, तो विरथा जन्म भयो रे॥वि४॥

१८

सुमति विचार

(तर्ज—राग खमाच)

विनवे सुमता नारी घर आवोनी प्यारा ॥ टेर ॥
कुमत कुपातर कुटिल सरी संग छोड़ो नी सेथ हमारा
॥ वि० १ ॥
राग द्वेष दोय कुवर कुपातर, मचिया करे विकारा ॥वि० २॥
नरक निगोद री सेज लुटाये, कर कर घोर अंधारा
॥ वि० ३ ॥
सुमत सखी सुविनीत सुकोमल, निज सुख अमृतधारा
॥ वि० ४ ॥

समकित सेज संतोष सुलाई, ज्ञान दीपक उजियारा
॥ वि० ५ ॥
कीजे सहल महल शिवपुर की, सहु जग दास तुम्हारा
॥ वि० ६ ॥
"रतनचंद" कहै सीख सुमतकी, मानो नी अकन कुंवारा
॥ वि० ७ ॥

१६

कर्म गतिका

(तर्ज—)

कर्म तणी गत न्यारी कोई पार न पावे ॥ टेर ॥
पुंडरीक तीरयो तीन दिवस में, कुंडरिक नरक सिधावे
॥ क० १ ॥
गुरु वेमुख थयो गोशालो, अंते समकित आवे
॥ क० २ ॥
संजति राय आहेडा करता, जनम (जामण) मरण मिटावे
॥ क० ३ ॥
चार हत्या कर चोर प्रहारी, देव विमाने जावे ॥ क० ४ ॥
"रतनचन्द" कर्मन की गतका, अनंता अनंत कहावे
॥ क० ५ ॥

२०

मानव भव पाया

(तर्ज—)

मानव को भव पाय ने मत जाय रे निरासा
आतम ज्ञान अनूपम सागर, सद्गुरु देवे दिलासा
॥ मा० १ ॥
तन धन योवन पल में पलटे, ज्यों पाणी बीच पतासा
॥ मा० २ ॥
मात, पिता, तिरिया, सुत, बन्धव, ज्यू पंखी तरु वासा
॥ मा० ३ ॥
हाथी हसम घोडा चकडोला, सजिया है महल निवासा
॥ मा० ४ ॥
क्षमा समुद्र में पस ने प्यासा, रहता है सो हासा
॥ मा० ५ ॥
सुख सागर की लहर सजीने, किम करे जमघर वासा
॥ मा० ६ ॥
"रतनचन्द" कहे धर्म आराधो, ज्यू सफल फले मन आशा
॥ मा० ७ ॥

२१

समता रस

(तर्ज—)

समता रस का प्याला, पिवे सोई जाणे ॥ टेर ॥
छाक चढी कबहू नहीं उतरे, तीन भवन सुख माने
॥ पी० ॥ १ ॥
एह सम अवर नहीं रस जग में, इम कहे वेद पुराणे
॥ पी० ॥ २ ॥
सकल क्लेश टले एक छिनमें, जो समता घट आणे
॥ पी० ॥ ३ ॥
चोर चेलापति समता रस कर, पायो अमर विमाणे
॥ पी० ॥ ४ ॥
"रतनचन्द" समता रस प्रकट्यां, लहि केवल ज्ञाने
॥ पी० ॥ ५ ॥

२२
चेतनता
(तर्ज—)

मोली जनम लीनयो थोड़ो, चेतन मनमें करिये रे
॥ मो० टेर ॥

चेत चेत रे चेत चतुर नर, आतम कारज करिये रे
॥ मो० १ ॥

कर सिणगार नार मुख आगल, बेकर जोड़ी ऊभी रे।
प्यापी पीड़ चटक्के चाल्यो, बिगड़ गई सहु खूबी रे
॥ मो० २ ॥

चढ़ चकडोल खोल वर कलकी, मोहन माला गलमें रे
भऊँ दिश महक रही सुगणपुर, पिय छोड चल्यो इक पलमें रे
॥ मो० ३ ॥

रूप स्वरूप अनूप अनोपम, कंचन वरणी काया रे
दर्पण निरख निरख सुख पावे, पिय पलमारी काया रे
॥ मो० ४ ॥

सारा कोड़ रोकड़ धन मेल्यो, कर कर कपट कमाई रे
गल दिवस दाड़ धन कारण, ए पिण भूत[1] मिठाई रे
॥ मो० ५ ॥

१–भूत की मिठाई जैसे मात्र बसने को होती है।

कर पय–पान खान रितु रितु ना, दिन दिन मांस वधायो रे
सूंख वरत पच्चखाण न दीसे, काल अचिन्तयो आयो रे
॥ ओ० ६ ॥

मोती कड़ा किलंगी ने कुंची, शीश मुकुट नग जड़ियारे
चऊं दिशी कटक खडा दे भोला, तेह अचानक पडियारे
॥ ओ० ७ ॥

"रतनचन्द" आनन्द सुधारस, प्रेम पियाला भरिये रे
अमृत जड़ी सुगुरू की सेवा, तिण सेती निसतरिये रे
॥ ओ० ८ ॥

२३

अभिमान त्यागो

तर्ज —

कर गुजरान गरीबी सुं, मगरूरी किस पर करता है ॥टेर।
ओछो रिजक अल्पसी पूंजी, क्यों पग चौड़ा धरता है
॥ कर ॥ १ ॥

चांकी पाग छिटकता छोगा, मौज करी मन हरता है,
लागी लपट निपट करमन की, घर घर दाना चुगता है
॥ कर ॥ २ ॥

लगा सुखमोय, नजर कर खोटी, नार पराई तकता है,
कर्म भान कर दीधो भोलो, जिस जिस आगल मगता है
॥ कर ॥ ३ ॥

भरी हद-सेज हेत कर सुन्दर, महल मला मन गमता है,
गिट गयो काल ठग्यो इस रासा, मिटी न माया ममता है
॥ कर ॥ ४ ॥

मोह अंग होके पद पोढ, जोबन जोर दिखाता है,
निरखे नार चपल पदी परखे, उठ अचानक चलता है
॥ कर ॥ ५ ॥

अरूप सरूप रोककर पन भेल्यो, भाया भास पर मरता है,
इसजग अस्त राव खेलेखे, हाय हाय कर मरता है
॥ कर ॥ ६ ॥

घट चकडोल करे रग रोता, मोह करी मन रचता है,
ठकुराही काल की हडिया, आप पड़े सोई पचता है
॥ कर ॥ ७ ॥

करी उपदेश जोड़ जयपुर में, भविक हर्ष कर सुनता है,
"रतनचन्द" गुरुवचन सुधारस, मेट मर्यो दुःख मिटता है
॥ कर ॥ ८ ॥

२४

परिग्रह त्याग

तर्ज—

हेरिए जग जंजाल सपन की माया, इस पर क्या गरभाणा रे
॥ टेर ॥

घट गई आयु रहन नहीं पावे, क्या राजा क्या राणा रे ॥हे॥१॥

कर में काच राख मुख निरखे, रूपदेख हरपाणा रे
सुन्दर नार खडी मुख आगल, सेवट वास मसाणा रे
॥ हे ॥ २ ॥

गादी वेस गर्व अति तोले, बोलें मगज भराणा रे,
अन्दर ज्ञान इतो नहीं सोचे, आपद निकट पयाणा रे
॥ हे ॥ ३ ॥

कर कर कपट निपट धन मेल्यो, संच संच इक दाणा रे,
मद छकियो मन में नहीं सोचे, सेवट माल विराणा रे
॥ हे ॥ ४ ॥

थोड़े दिवस कर्म बहु बांध्या, कर कर ने कमठाणा रे
पोढ़्या काल पहुँचो परभव में, टाली पड्या ठिकाणा रे
॥ हे ॥ ५ ॥

भूखा पुरुष शीस तल छाया, जाणे भवर पग भराया रे,
उड़ गई नींद सुत्ती दो आंखिया, अत छायां का छाया रे
॥ इ ॥ ६ ॥

सपन राज लह्यो सहु जग का, सिर प छत्र घराया रे,
जाग्यां पत्र छत्र की मांग्यां, मांग मांग अन खाया रे
॥ इ ॥ ७ ॥

"रतनचन्द" जग बस अस्थिरता, निजगुण मन ठहराया रे
अलख लख्यो सद्गुरु के वचने, पुद्गल भर्म मिटाया रे
॥ इ ॥ ८ ॥

२५

नश्वर काया

तर्ज

थांरी फूल सी देह पलक में पलटे क्या मगरूरी राखे रे
आतम ज्ञान अमीरस तजने, जहर यही किम चाखे रे
॥ था ॥ १ ॥

काल बली थांरे लारे पड़ियो, ज्यों पीछे त्यों ताके रे,
जरा मजारी अस कर बैठी ज्यों मूसा पर ताके रे
॥ थां ॥ २ ॥

सिर पर पाग लगा खुशबोई, तेवडा छोगा नाखे रे,
निरखे नार पार की नेणे, वचन विषय किम भाखे रे
॥ था ॥ ३ ॥

इन्द्र धनुष ज्यों पलक में पलटे, देह खेह सम दाखे रे,
इण छं मोह करे सोई मूरख, इम कहे आगम साखे रे
॥ था ॥ ४ ॥

"रतनचन्द" जग इवर्था, फंदिए कर्म विपाके रे,
शीव सुख ज्ञान दियो मोय सतगुरु तिण सुख री अभिलाखे रे
॥ था ॥ ५ ॥

२६

बलवान काल

(तर्ज—)

इण काल रो भरोसो भाइ रे को नहीं,
किण विरियां में आवेरे ॥ टेर ॥

बाल जवान गिणे नहीं, औ सर्व भणी गटकावे रे ॥ इ १ ॥

बाप दादो बैठो रहे, पोतो उठ चल जावेरे,
तो पिण ढेठा जीवने, धर्म री वात न सुहावे रे
॥ इ० २ ॥

मन्दिर महल ने मालिया, नहीं निवास न नालो रे
स्वर्ग मृत्यु पाताल में, कठेई न छोडे कालो रे ॥ इ० ३ ॥
घर नायक आशी करी, रथा करे मन गमती रें,
काल अचानक ले चल्यो, पोरयां रह गई मिलती रे
॥ इ० ४ ॥

रोगी उपचारण भणी, वैद विचक्षन आयो रे
रोगा ने ताजो करे, अपणी खबर न कायो रे ॥ इ० ५ ॥
सुन्दर जोडी सारखी, मनहर महल रसालो रे
पोढ्या ढोल्या पे प्रेम सु, आय पहुँचे कालो रे
॥ इ० ६ ॥

राम करे रलियामनों, आयो इन्द्र अनूपम दीसे रे
वैरी पकड पछाड ने, टांग पकड ने घीसे रे ॥ इ० ७ ॥
मन नम बालक देखने, मांही, मोटी आसो रे
पलक मांही परभव गयो, रह गयो आप निराशो रें
॥ इ० ८ ॥

नार निरख ने परणियो, आयो अपछरा ने अनुहारो रे
सल उठने चल दियो, उभी देखा पारे रें ॥ इ० ९ ॥
नटवो चढियो नाचवा, दाम लेवणरो कामी रे
पग छिटकी पडियो तल, ऐसा काल अकामी रे
॥ इ० १० ॥

चेजारो चित चूपसुं, करी इमारत मोटी रे
जीमण उतरतो पङ्खो, खाधर्म सकियो रोटी रे

॥ इ० ११ ॥

सुर नर इन्द्र किन्नरस, कोई न रहे निशंकारे
मुनिवर कालने जीतलिया, जे दिया मुगतमें डंकारे

॥ इ० १२ ॥

किशनगढ में सत्तसठे, आयो सेखे कालोरे
"रतनचन्द" कहे भविप्राणी, कीजे धर्म रसालोरे

॥ इ० १३ ॥

कथलो छोडो

(तर्ज—नवरसानी देसी)

कथलो मांड्यो रे साधुजी करे विकथा सुणनो छांड्यो रे

॥ टेर ॥

कोई कहे म्हारो अरट्यो भागो, हाथ अंगुलिया सुनीरे
बालक बल धोन्यो संकलीमें, कातन सकी एक पुणीरे

॥ क० १ ॥

एक कहे गोबर नहीं ल्यावी, फिर फिर आवी खाली रे,
एक कहे राते सीव सतावी, ओढन ने नहीं राली रे
|| क० २ ||

एक कहे म्हारी धरियां बिगड़ी, सूख पथेरो नाख्यो रे
एक कहे पापड़ सावधीयां, जीम न चाखे चाख्यो रे
|| क० ३ ||

एक कहे म्हारे घृत नहीं घर में, वेरणारी साम्यों टूटी रे
एक कहे अल पियो कलकल तो, कोरी मटकी फूटी रे
|| क० ४ ||

कोई कहे हन्द मिरच बिन फीकी, नीकी नहीं तरकारी रे
कोई कहे पिरंडो पड्यो खाली, मिले नहीं पणियारी रे
|| क० ५ ||

कोई कहे म्हार सिर पर न टिके, ओढनो मिसियो कठोरे
एक कहे नही कछुक सखरो, सासटो फेट्यो फटोरे
|| क० ६ ||

कोई कहे म्हारो पूत न परणयो, बहुधर पाय न लगाई रे
एक कहे म्हारी पुत्री न हुई, पुरुयो नहीं जमाई रे
|| क० ७ ||

एक कहे म्हारी बेटी मोटी, देखो अजय न परणी रे
एक कहें पइसो नहीं घर में, आई छ आगरणी रे
॥ क० ८ ॥

एक कहे हूँ पेटनी दाभी, हालरियो नहीं दीधोरे
एक कहे बहु घर में लाय ने, पूत परायो कीधोरे
॥ क० ६ ॥

एक कहे म्हारी गिल्लुडिया भागी, लंगर दीधा राली रे
कोई कहे चूंपा नहीं दांत में, नाक में सादी थाली रे
॥ क० १० ॥

कोई कहे तिमणियो नहीं पहरयो, गलो अडोलो दीसेरे
कोई कहे घर मिल्यो भाड़ारो, नितका टोकरा घॉसेरे
॥ क० ११ ॥

कोई कहे अलतो नही घरमें, मूल न मेंदी राची रे,
एक कहे छाणां नहीं घरमें, रोट्या रह गई काची रे
॥ क० १२ ॥

कोई कहे म्हारे चूड्याँ बधगई, रंग बिना चूडो नहीं सोवेरे

एंडा मारे धर्डी उर्डावे, करे अंतर-अन्तर कार्णी

॥ सु० ३ ॥

कर्मादान-अकारज करने, धन मेल्यो नवि खूटे
कुलजग फांसो सघलो लेवे, अंधा कोपांना खूटे

॥ सु० ४ ॥

निखरी खंय पहरे पण निखरो, सुख भर नींद न सोवे
नर सुखियो दीठो नहीं इणसुं, तो पिण इणने रोवे

॥ सु० ५ ॥

पीपले-पान कान कुंजर को, डाभ अणी जल जाणो
इणसुं मोह करे सो मूरख, अन्तर-ज्ञान पिछाणो

॥ सु० ६ ॥

कमला-पतनी कमल हुई, एतो गणिका-मारी
राखण काज अकाज करे नर, कर कर वात दगारी

॥ सु० ७ ॥

कोड थकी कपिल नहीं धायो, आठमो चक्री देखो
लागी लाय कदे नहीं धापे, जो मिले काठ अनेको

॥ सु० ८ ॥

दतो दान पाड़ोसी देखी, मू डो करदे कालो
उलटो दु:ख भाखे हृदय में, महो लोभ को पालो
॥ मु० ९ ॥

राजा मुदता ने मारविया, हरि हलधर महाबलिया
माया नारी कामणगारी, हुय हुय मिनख न छलिया
॥ मु० १० ॥

संसे काल कृपामय नगरे पेत महीन आया
"रतनचन्द" कहे मू ची मिनखे, सेंठी पकड़ी माया
॥ मु० ११ ॥

— —

२९

शिवनगरी और सिद्ध

[तर्ज—]

नगरी खूब बणी छेजी, जियारा सिद्ध बसी छेजी ॥ टेर।
दरशण हँस पसी छेपी, भागम वैया सुणी छेजी
॥ नगरी० १ ॥

सम भूतल थी ऊची भलगी, सात राम परमाखे

लाख पैंतालिस योजन चहुं दिश, ज्ञान विना कुण जाणे
|| न० २ ||

स्फटिक रतन हार मोत्यांरो, संख समुज्वल दाखी
अर्जुन सोना मांहि मनोहर, वीर जिणेश्वर भाखी
|| न० ३ ||

दस दरवाजा हिवड़ा जड़िया, पांच रहे नित खूटा (छूटा)
करो किल्लो कायम इक छिन में, आठ कर्म सूं छूटा
|| न० ४ ||

सुरनर असुर इन्द्रथी इधका, मुनिवर ना सुख जाणे
तिणसुं अनंत अखे[1] सुख तिणमें, कर्म हणीने माणो
|| न० ५ ||

तिरखा भूख सुख दुःख पुदगल, मूल न दीसे कोई
एक नहीं पिण रहे अनंता, नहीं बस्ती नहीं रोई
|| न० ६ ||

तिण नगरी में बसे धनवंता, चहुं दिश हुन्डियां चाले
माल खरीद लेवे चहुं गतनो, मूल न पाछो घाले
|| न० ७ ||

१—अछे पाठ भी मिलता है।

शुभ अशुभ एक नहीं दीसे, सी जग छोटो मोटो
सीते कार्य अनंत व्योपारे, नफो, न दीसे टोटो

डोले नहीं रहे जग सिरता, दाता नहीं भिक्षु-दायक
भार्षे छे पियो न आवे पाछो, सेवक नहीं कोई नायक

काया नहीं पिण अटल अवगाहना, आंख नहीं पिण देखे
धर्म पाप रो मूल न दीसे, लाग भोग नहीं एके

महिपुर में शिवपुर ने आमोद मायो परम आनंद
"रतनचन्द" कहे तिण नगरी बिन, कठे नहीं, दुःख फन्दा
॥ नं० ११॥

इकसठ साल रतलाम नगर में, मन भावरो गायो
काल अनंत रूल्यो चिहुं गत में, अब तो मारग पायो
॥ नं० १२॥

(३०)

सत संगत महिमा

तर्ज—पूर्वंत

संगत खूब मिली छे रे,
चेत चेत रे चेत, चतुर नर बात भली छे रे ॥ टेर ॥
भवसागर में भटकत भटकत, मिनखा देही पाई ।
शुद्ध आचारी सतगुरु मिलिया, प्रकटी वडी पुण्याई ॥ सं० १ ॥
हीरा, मोती, लाल, पिरोजा, वार अनंती मिलिया ।
निरलोभी गुरु अबके भेट्या, भव भव फेरा टलिया ॥ सं० २ ॥
इण जग में बहु कपट निपट है, मंडी पैस की पासी ।
सदगुरु शब्द हिये नहीं धारियो, तो ऐले जमारो जासी ॥ सं० ३ ॥
कुगुरु सुगुरु ने सम मत जाणो, बुधवंत कीजो निरखो ।
गाय दूध सुं तृपति होसी, आक दूध सुं मरखो ॥ सं० ४ ॥
वस्तर, पातर, अहार ने थानक, दोषीला आदरिया ।
बेला तेला, तप अट्ठाई, सर्व गमाई किरिया ॥ सं० ५ ॥

निरपेक्ष मोक्ष सखो कहे सावे, थापा कर्मी साव ।
उत्तराध्ययन सूत्र में देखो, मरने दुरगति जावे ॥ स० ६ ॥
मूढ़ मिथ्याती दुरगत साथी, जग में बहु पाखंडी ।
सूत्र–समाय करी भव जीवां, कुगुरू संग द्यो छांडी
॥ सं० ७ ॥
काया माया बादल छाया, एक सरीखी भाखो ।
विषय–विकार खार सम खाथी, मन में ममता नाखो
॥ सं० ८ ॥
सुध गुरू बिन सुध ज्ञान न पावे, हिये विमासी जोवो ।
साधु असाधु बरोबर गिणने, हीरो जन्म मत खोवो
॥ सं० ९ ॥
काल अनादि अनतो रुलता, समकित रतनज लाधो ।
पांच प्रमाद टाल सहु अलगा, एकण चित आराधो
॥ सं० १० ॥
एकण पाट साठ में बरसे, चोमासो कियो पाली ।
"रतनचन्द" कहे सुणो भव जीवां, सुगुरू संग ल्यो भाली
॥ सं० ११ ॥

---

(३१)

समकित स्वरूप

तर्ज—

निर्मल शुद्ध समकित जिण पाई, जाके कमी रहे नहीं कांई
॥ टेर ॥

देव निरंजन गुरू निर्लोभी, धर्म दयामय जाणो ।
ने सिद्धान्त प्रमाण गिणीजे, जिणमें निर्वद्य वाणी
॥ नि० १ ॥

रंक थकी राजा पद प्रकटे, निर्धन थी धनवंत ।
समकित सुख रे जोड़े देतां, न आवे माग अनंत
॥ नि० २ ॥

इण सम लाभ नहीं इण जग में, आगम वेद पुकारे ।
समकित विन सहुकाज अकारज, जैसो लिंपण छारे ।
॥ नि० ३ ॥

अंक विना जिम सुन्न इविरथा,[१] नाक विना जिम काया ।
शील विना जिम रूप अकारथ, दान विना जिम माया
॥ नि० ४ ॥

१—व्यर्थ

समकित सूर्य उद्योत कियां थी, मिथ्या तिमिर नसावे।
पूरब प्रीत धरे जो नरपति, रक्के नें कीर्ति मनावे
॥ नि० ५ ॥

समकित थी चारित्र होवे निर्मल, चारित्र थी सुख सारे।
केवल मोक्ष तणां सुख प्रकटे, जामण (जन्म) मरण
निवारे॥ नि० ६॥

षट खंड राज निधान रतन सीर, सहस्र गम धर नारी।
भरत निकाचित कर्मन बांध्यो, समकित नी पखिहारी
॥ नि० ७ ॥

कुंवारी कन्या सिर छेदयो, चोर चिलायति बन में।
उपसम लहयो भ्रमीसर (सबर) वचने, पार पामिया छिन में
॥ नि० ८ ॥

कियो अघोर पाप परदेशी, सुसवी पिय मन धरके।
समकित थी सुरनो पद पायो, शिव जासी अवतरके
॥ नि० ९ ॥

दस वरत पच्चखाण दीसे, श्रेणिक कृष्ण कदीता
समकित थी जिनवर पद पाया, पाप प्रमातने जीता
॥ नि० १० ॥

गो ब्राह्मण ने बाल हत्या करे, मार हत्या पिण कीधी
सम भावथी समकित फरसी, सुरनी पदवी लीधी
॥ नि० ११ ॥

एम अनेक ओपमा करने, भिन्न भिन्न वीर वखाणी
दीपक दाल समभ सुद्ध करनो, रत्न चिन्तामणि जाणी
॥ नि० १२ ॥

ऐंकण घाट सित्तरमें वरसे, हर्ष सुं शहर नगीने
"रतनचन्द" कहे समकित सेवो, जो चावो मुक्त रमणीने
॥ नि० १३ ॥

(३२)

चतुर नर चेतो

(तर्ज—हारे नाजक गाडी वाला थारी गाडी)

चेत चेत रे चेत चतुर नर मिनख जमारो पायरे ॥ टेर॥
आरज खेत-उत्तम कुल श्रावक, आयु निरोगी कायरे
॥ चे० १ ॥

जिनवर वचन अमीरस तजने, ढील कियां दुःख पायरे ।

रतन अमोलख धर्म पदारथ, आलस में न गमायरे
|| चे० २ ||

राग रीस खीजे नहीं किणपर, न करे क्रोध कषायरे ।
इत्यादिक-पर सर्व पदारथ, दस रक्षा जिनराय रे
|| चे० ३ ||

देव निरंजन अलख न लखिए, बाह्य¹-दृष्टि लगाय रे ।
मन वच काय ध्यावतां जिनवर, भवरन भावे दायरे
|| चे० ४ ||

गुरु गुरु करी जगत सहु दुबो, गुण बिन गुरु दुःख दायरे ।
धोलो बाथ भर्क पय पितों, श्रद्धा-मूल ल खायरे
|| चे० ५ ||

निव पिंड मोक्ष कदी नहीं शंका, आपा कर्मी खाय रे ।
नरक निगोद में पड्या अनंता, साधु नाम धरायरे
|| चे० ६ ||

तृष्णा टाल गाल मद माया, ह्वे बैठा मुनिराय रे ।
ते गुरु वंद छंड सहु धंधा, सो शिवपुरनी पायरे
|| चे० ७ ||

अन्यमती जीव दयी धर्म माने, खोटी मुगत लगाय रे ।

---

१ चम चक्षु से

ते कर धर्म भर्म तज सघलो, न मरे जीव छः कायरे
॥ चे० ८ ॥

केवल पुंज पदारथ घट में, प्रगटे परचे पायरे
चंचल मेट करे चितथिरता, ते तूं धर्म संभाय रे
॥ चे० ९ ॥

देव गुरु धर्म पदारथ परखो, निरखो नैण लगायरे।
या तीनां में चूक पड्यां थी, धका नरक में खायरे
॥ चे० १० ॥

कुंजर-कान पान पीपल को, इन्द्र धनुष देखायरे।
काया माया बादल छाया, पल में पलटी जायरे
॥ चे० ११ ॥

भटक्यो विविध परे सुख कारण, रंक जेम विललायरे।
अखै खजानो कृपा करीने, सतगुरु दियो बतायरे
॥ चे० १२ ॥

गमी वस्तु घर मांही मूरख, बाहिर जोवण जायरे।
ज्ञान गंगा प्रगटी घट अन्तर, राखे मेल वलायरे
॥ चे० १३ ॥

अड्सट साल पीठ पाली में, जेठ महीने आय रे।
"रतनचंद" भवियण हित कारण, दीधी ढाल बणायरे
॥ चे० १४ ॥

---

(३४)

ठगलगा तेरी लारे

तर्ज—

गाफिल केम मुसाफिर ठग लागा तेरी लार ॥ टेर ॥
एक बार ठगियो फिर न ठगावे, तूं ठगियो सौ बार
॥ गा० १ ॥

फल-विपाक विषय सुख सेवन, फांसी बहु परिवार
ठग वनिता जिम वनिता जाणो, करसी तोय खुवार
॥ गा० २ ॥

मोह महीपत महा जोरावर, चहुँगत वणीय कंतार
ज्ञान-दर्शन-चारित्र धन लूटे, समझे नहीं गिवार
॥ गा० ३ ॥

तूं सुख माने पुद्गल में, ते सुख दुःख अणुहार
निज सुख "रत्न" अमोलक घट में, झट ले खोल किमार
॥ गा० ४ ॥

(३५)

सप्तव्यसन निषेध

दोहा–श्रावक नाम धराय ने, एहवा करे अकाज
तिणने समझ सरधतां, मन में आवे लाज

तर्ज—६६ सोले जिन सोवन वरणा

अंडा मारने अड़ियां उडावे, सुपरी वद करने दिखावे
त्याग नहीं पर की नारी, ते श्रावक किम उतरे पारो ॥१॥
परनारी ने रहे तकता, जिम ग्रहस्थ मांही फिरता ममता
वचन वदे अति विकारो ॥ ते० २ ॥
छ क खाय ने पेट भर, विस्वास देयने घात करे
लाजे धरम निंदे संसारो ॥ ते० ३ ॥
नीर अणछाण्या मांही पड़े, भैंसा जिम पेस ने रोल करे
घले पीवरा रो नहीं परिहारो ॥ ते० ४ ॥
कन्द-मूल भखे ने तके मूसा, पशु बीमारी रांध करे होसा
कलि वारे भखे छट संहारो ॥ ते० ५ ॥
घले गर[१]-रम न बोले अकृता, परनारी तके रात्यु फिरता
सबल मिले तो खावे मारो ॥ ते० ६ ॥

१–होली का खेल

अछता कजिया मांहि मिले, कवड़ी साटे पेजार[1] चले
यो उत्तम रो नहीं आचारो ॥ ते० ७ ॥
हुक्को पीवे ने मनमांस भखे, रात्रि भोजन निश दिवस तके
खातां खातां पड़ जावे अधारो ॥ ते० ८ ॥
कुलरी कूडी रूढ ताणे, वलि खल गुड़ एक सयो जाणे
जिम मद छकियो कोई नरनारो ॥ ते० ९ ॥
गुरु मिल्या हीणाचारी, विरदाय[2] कियो आप इधकारी
चोर कुतिया मिल्या किणरो सारो ॥ ते० १० ॥
ग्राहक मिलियां सखरी दाखे, छल बल कर निखरी नांखे
कूडा सोंस खाय केई अण पारो ॥ ते० ११ ॥
कर्मादान करे पन्दरे, वलि पत्थर फोडायन विणज करे
वलि ऊंठ बलद रो लेवे भाडो ॥ ते० १२ ॥
चुगली खाय कहे अछती, पर घर बोवै (ले) नहीं सांच रती
जाणो धर्मी ठग बुगला कारो ॥ ते० १३ ॥
वचन आडम्बर कहे अछतो, थोथो बादल जिम गरजतो
लोक नी लाज नहीं लिगारो ॥ ते० १४ ॥

१–जूती २–बढ़ावा देकर

परदोष न देख तिल जितरो, पले अवगुण आल देवे नितरो
पर निंदा रो नहीं पारो ॥ ते० १५ ॥
नहीं वस करत पच्चखाण रती, तप मूल करे नहीं सगत छती
टट पड्यो श्रावक सारो ॥ ते० १६ ॥
देव गुरु धर्म नहीं ओलखिया, मलि श्रावक में आज मुखिया
पिण अन्तर गत मांही अन्धारो ॥ ते० १७॥
नौ तत्व तणो न कर निरख्यो, विण अवगुण मांह मेल्यो परख्यो
किम उतरे भव जल पारो ॥ ते० १८ ॥
निसरा देव देवी पूजे, पिण अन्तर गत मांही नहीं सूझे
मांहि अवगुण तरस्या हारी ॥ ते० १६ ॥
इम सुणने ममता मेटो, एक देव निरंजन सुध भेटो
ओ भव पावो निस्तारो ॥ ते० २० ॥
श्रावक सीत्तनी इकवीसी, चोमासे अजमेर में निवमी
'रतन' कहे सुणो नरनारो ॥ ते० २१ ॥

---

(३६)
सुमति विचार

तर्ज–

अब घर आवोजी

आवो आवो जी म्हारा मन-ममता[1] महाराज के

॥ अब० टेर ॥

सुमत सखी इम विनवे[1] साहिबा, लही समकित प्रस्ताव ।
राज अखण्डित देखवारे साहिबा, मो मन अधिक उच्छावके
अब घर आवो ॥ १ ॥

हू तो अलादी हो रहो रे साहिबा, देख तिहारो ढंग
दिन दिन तूं भीनो रहे रे साहिबा, कुमत कुपातर संगके
॥ अब २ ॥

पर-पुदगल रुचि मद पियोरे साहिबा, छकियो रहे दिन रात ।
कुमत लपेटा ले रही रे साहिबा, कुण सुणे सुमत की वातके
॥ अब ३ ॥

दुःख विषम सुख अल्पता रे साहिबा, जैसो किंपाक ।
मही पुत्री[2] सिर नाखने रे साहिबा, न गिणे चढियो नर छाकके
॥ अब ४ ॥

तज मुक्ता गुंजा गहेरे साहिबा, जो हुवे मनुष अबूझ ।

१—प्रिय २—धूल

ज्यों कपटी मन्त्री मिलिया रे साहिबा, नहीं पड़े नृपने सुमके
|| अब ५ ||

काल अनत ममारियो रे साहिबा, तिखरी कृपालेह सुच ।
तो पिया तू समके नहीं रे साहिबा, बिगड़ गई थारी बुधके
|| अब ६ ||

जगत सिरोमणी शिवपुरी रे साहिबा, तिण में थारो राज ।
जो अमृत सुख अनुभवे रे साहिबा जहर विषम दुःख काजके
|| अब ७ ||

जो मोह करे एकता रे साहिबा, तो भाजे सहु भ्रांत ।
निश्चल पद सुख भोगवे रे साहिबा, 'भांगे सादी अनंतके
|| अब ८ ||

सहु सुख पिंड करे एकठोर साहिबा,' वरगा वर्ग करंत ।
तो पिया थारा राज में रे साहिबा, नहीं आवे माग अनंतक
|| अब ९ ||

सुमत सखी हंस-राजनी रे साहिबा, मिलिया रूप अनुप ।
"रतनचंद" ते सुख मिलिया रे साहिबा, जग सुख आपद
रूपके || अब १० ||

१—भाग ४ हैं । १- अनादि अनंत २-अनादि सान्त ३-सादी अनंत ४-सादी सान्त

२ -४ का ४ से गुणा करने से जो संख्या होती है उस वर्ग कहते हैं वर्ग का फिर वर्ग से गुणा करने पर जो संख्या होती है उसे वर्गा वर्ग कहते हैं ।

३७

संसार असार

(तर्ज–गुजरो राग)

तू किणरो कुण थारो रे चेतनिया ॥
मात पिता तिरिया सुत बंधव मतलब केरा यारो रे
॥ चे० १ ॥
जो स्वार्थ पूरो नहीं इणको, तो तोड़े जूनो प्यारो रे
॥ चे० २ ॥
सज्जन बल्लभ न्याती गोती, है सब काल को चारो रे
॥ चे० ३ ॥
चार दिवस की है चतुराई, सेवट घोर अंधारो रे
॥ चे० ४ ॥
चेतन छोड़ चले जब काया, मिलगयो माटी में गारो रे
॥ चे० ५ ॥
"रतन" जतन कर धर्म अराधो, तो होसी निस्तारो रे
॥ चे० ६ ॥

३८

कूच का नगारा

(तर्ज-राग प्रभाती)

जोबनियां की मोजां फोजां, बाय नगारा देती रे
चेत चेत र चेत चतुरनर, चिड़ियां चुग गई खेती र
॥ जो०॥

छिनक छिनक में आयुष्य छीजे, ज्यों कड़ियाबध एतीर
ओछा जीतब कारण चेतन, पड़े मुगत सु छेती रे -
॥ जो० १ ॥

मात पिता प्रिया सुत बन्धव, मिली सम्पदा एती रे,
पलक पलक में सघली पलटे, ज्यों भरियो रेती रे
॥ जो० २ ॥

काल की फोज घणी सिर उपर, फिरे लपटा लेतीरे
अविचल सुख की चाय हुव तो, प्रीत करो प्रभु सेती रे
॥ जो० ३ ॥

जावन लहर रंग पतंग सम, कई सिराणस केती रे
जग में "रतन" दया सुख कारी, आराध्यां सुख देती रे
॥ जो० ४ ॥

३६

भ्रमवश पड्यो रे

तर्ज—प्रभाती

उलटी चाल चल्यो रे जीवड़ला ॥ उ० टेर ॥

सांची सीख सुणे नहीं सरधे, मोह पिसाच छल्यो रे ॥ उ० १ ॥

स्वर्ग नी हूँस, नरक नी करणी, कर्म रे कीच कल्यो रे ॥ उ० २ ॥

आम नी हूँस धतूरो सींचे, कैसे आम फल्योरे ॥ उ० ३ ॥

कमर बांध लाग्यो आश्रव में, संवर भाव टल्यो रे ॥ उ० ४ ॥

"रतन" जतन कर धर्म अराधो, नीठ ओ जोग मिल्यो रे ॥ उ० ५ ॥

४०

परनिन्दा निषेध

(तर्ज – चंचल चितड़ा तू गाफिल मत रह)

निंदा न करिए रे चेतन पारकी, जोवो हिए विमास ।
औगुण छंडी गुण संग्रह करे, ज्यों मृग नाम सुवास
॥ निंदा० १ ॥

पूठ न सूझे रे प्राणी आपकी, किम सूझे रे पर पूठ ।
मर्म न मोसो रे किण रो न भाखिये, लाख लहै बधीमूठ
॥ नि० २ ॥

आतम खोजीरे आपो वश करे, तो लहे ज्ञान रसाल ।
औगुण करतां रे प्राणी पारका, तो कहिए कर्म चंडाल
॥ निं० ३ ॥

पर निंदा सम पातक को नहीं, हुवे समकित नो रे नाश ।
आगम मांही जिन ओपमा कही, खावे पूठ नो मांस
॥ निंदा० ४ ॥

सांची सीख ओगुण मत बावओ, अवगुण आपरा देख ।
समकित "रतन" जतन कर राखज्यो, तो पास्यो सुख विसेख
॥ निं० ५ ॥

४१

संत महिमा

तर्ज—राग कालगडो

समझ नर साधु किनके मिन्त ॥ टेर ॥
होत सुखी जहा लहे बसेरो, कर डेरो एकन्त ।
जल सुं कमल रहे नित न्यारो, इण पर सन्त महन्त
॥ स० १ ॥

परम प्रेम धर नर नित ध्यावे, गावे गुण गुणवंत ।
तिलभर नेह धरे नहीं दिल में, सुगण सिरोमणि सन्त
॥ स० २ ॥

भगत जुगत कर जगत रिझावे, पिण नाणे मन भ्रान्त ।
परम पुरुष की प्रीत रंगाणी, जाणी शिवपुर पन्थ
॥ स० ३ ॥

"रतन" जतन कर सद्गुण सेवो, इणको एहिज तंत ।
टुकभर महर हुवे सद्गुरु की, आपे सुख अनंत
॥ स० ४ ॥

४२

वृद्धावस्था की भयानकता

तर्ज—राग धमाल

बुढ़ापो बैरी आवियो हो ॥ टेर ॥

मात पिता सुत बन्धवा हो, सगा सनेही मीत ।
परणी नारी पदमणी हो, ते पिण नहीं देव चित

॥ बु० १ ॥

बोलतां जीभ लड़थड़े हो, कानां सुणे नहीं बैण ।
नाक न आवे वासना हो, म्हर रह्या दोनों ही नैण

॥ बु० २ ॥

काया पड़गई ओमझी हो, पग पड़े नहीं ठांव ।
डांग पकड़ उभो हुए हो, आठी उठी गुड़ जाय

॥ बु० ३ ॥

दांत-सस खोसी पड़ी हो, टिर रह्या दोनूं ही होट ।
सारा सलके मुख पड्या हो, आई पड़ी मरा रुखी पोट

॥ बु० ४ ॥

सायलपस लीयो पड्यो हो, सल पड़ गया रे शरीर ।

निकली हाड री पासली हो, हो गयो धोलो पीर
॥ बु० ५ ॥

सांस खास वद्धियो घणो हो, आवे मीट अपार
देहली होगई डूंगरी हो, सौ कोसां थयो रे बजार
॥ बु० ६ ॥

वात कहै जो हित तणी हो, तो नहीं माने कोय
साठी बुध न्हाठी कहे हो, सुणावे सामो रह्यो जोय
॥ बु० ७ ॥

जरा तणां दुःख छे घणा हो, कहतां न आवे पार
"रतनचंद" कहै भविजनां हो, थे कीजो धर्म विचार
॥ बु० ८ ॥

४३

सदगुरु की सीख

तर्ज—अब घर आवो हो लश्करिया

नीठ नीठ नरभव लह्यो रे जीवडला, तू पायो समकित रयण
सीख शुद्ध मानो रे सतगुरु की ॥ टेर ॥
गुण सागर गुरु भेटियारे जीवडला, अब सुण सतगुरु का वयण
॥ सीख० १ ॥

मव मव मांही भटकियो रे जी०, जिम अरट तणी घटमाल।
जोग मिल्यो दस बोलनो रे जीवड़ला, तू अब तो सुरत संभाल
॥ सी० २ ॥
मात पितादिक मारजा रे जीवड़ला, भारो सगो सहोदर वीर।
मिल २ सघला बीछड़्या रे जीवड़ला, कोई जीम अजली नो
नीर ॥ सीख० ३ ॥
मांस मखे मद में छके रे जीवड़ला, परती कुल मर्यादा मेट।
घोर-कूप्यां में ऊपनो रे जीवड़ला, तोन विकल्यो फाण्यां हेट
॥ सीख० ४ ॥
पड़ै दिश सुगनोई खिली रे जीवड़ला, रहे सुखा में गर गांव।
रोग असाध्य अब ऊपनोरे जीवड़ला, तोने खिणमें किस्यो
खराब ॥ सीख ५ ॥
महल सहल दम्पत करे रे जीवड़ला, कोई मारी झगड़ा पहर।
काल अजाण्यो ले चाल्यो रे जीवड़ला, अब कठै कसम[1] किर्हा
पैर[2] ॥ सीख ६ ॥
आशा अधूरी कामनी रे जीवड़ला, कोई जण्यो मनोहर पूत।
पूत मरल परभव गई रे जीवड़ला, या बात बड़ी अद्भुत
॥ सीख ७ ॥

१—पति २—पत्नी—नारी

वेश बरण्यो भूषण सिरे रे जीवडला, वले दर्पण में मुख जोय।
कोढ व्याप कीड़ा पड्या रे जीवड़ला, अब रही रूप ने रोय
॥ सीख ८ ॥

परनारी प्यारी करी रे जीवड़ला, वली डोढी निजर भिडाय।
भर मेले मोजां करे रे जी०, पिण काल वली गिट जाय
॥ सीख ६ ॥

कचन वरणी कामणी रे जीवड़ला, वली भर जोड़ी भरतार।
दिवस चार को चांदणों रे जीवड़ल, सेवट घोर अंधार
॥ सीख १० ॥

वेस बरण्यो अंग ओपतो रे जी०, कांई कर कर घणी जलस।
सूल व्याप सटके चल्यो रे जी०, थांरी रही हियारी हूँस
॥ सीख ११ ॥

चढ चाल्यो सारां सिरे रे जीवड़ला, म्हे फोजा तणां किवाड़।
वैरी छल कर घेरियो रे जीवड़ला, तने मारयो पकड़ पछाड़
॥ सीख १२ ॥

जोम करी जोरे चढ्योरे जीवड़ला, मैं सघला में सिरदार।
लागी गोली गेंब की रे जीवड़ला, तरे सती हुई घर नार
॥ सीख १३ ॥

घर म्हारो हैं घर तणो रे जीवड़ला, मोने मघला द सन्मान ।
अंग मोड़ ऊभो चढ़ेरें जीवड़ला, ईई जिम घोबी नो स्वान
॥ सीख १४ ॥
गादी चढ़ मोजा करे रे जीवड़ला, चले पद गर्मे ना बोल ।
कोप्यो नरपत विगड़ियो रे जीवड़ला, अब दुर्खा मरोसर वोल
॥ सीख १५ ॥
सेज चढ़ी कमये कमी रे जीवड़ला, चले बैठी पदमय पास ।
हाव भाव विभ्रम करे रो जीवड़ला, पिय गयो चन्क दे सास
॥ सीख १६ ॥
सग सहेली सोमती रे जीवड़ला, या गावे सुरमर गीत ।
रसियाने रिमझवती रे जीवड़ला, पिय पड़ी अचानक भींत
॥ सीख १७ ॥
पर रमणी भरयी करी रे जीवड़ला, ये छोड़ सकल की लाज ।
भाव घटी नरके पड्यो रे जीवड़ला, अब कूट रह्या यमराज
॥ सीख १८ ॥
चोरी कर चोरी करी रे जी०, ते लिया हमारा कोड़ ।
कोपे नरपत विगड़ियो हो जी०, घासे मायो नाख्यो तोड़
॥ १६ ॥

निपट कपट छल बल करी रे जी०, तैं द्रव्य धरयो एक लाख।
सुख विलसण के कारणे रे जी०, थारी हुई अचिन्ती राख
॥ सीख २० ॥

मन गमता भोजन करे रे जी०, तूं खट ऋतु मधुर पियूख।
अनंत वेर मिसरी भखी रे जी०, थारी अजे न भागी भूख
॥ सीख २१ ॥

मन गमती मोजां करे रे जी०, कर शुभरमणी सूं हेत।
ज्ञानदृष्टि सुं जोवतां रे जीवडला, थारी सेवट उड़सी रेत
॥ सीख २२ ॥

इन्द्रजाल सपना सभी रे जीवड़ला, या मिली वस्तु सब झूंठ।
तो पिण तूं समझे नहीं रे जी०, थारी गई हियारी फूट
॥ सीख २३ ॥

हीणाचारी गुरु मिल्या रे जीवडला, तूं तजे न कुलरी रूढ।
कुगुरु तणे संग बेसने रे जीवडला, अे गया अनंता बूड
॥ सीख २४ ॥

सुध पाले टाले मिरखा रे जीवड़ला, तू निर्लोभी गुरु सेव।
मुक्त वधू परणावसी रे जीवड़ला, वली करे विमाणिक देव
॥ सीख २५ ॥

अष्टादस अठंतरे रे जीवड़ला, या करी पच्चीसी बेस।
"रतनचंद" नागोर में रे जीवडला, कोई दीनों यो उपदेश
॥ सीख २६ ॥

४४

काया पिंड काचो

(तर्ज—पेमाज्ञ राग)

काया पिंड काचो राज काचो, खिनक में छीजे,
पलक में पलटे, मूरख मत राचो राज ॥ टेर ॥
पलटता वार नहीं लागे पल ज्यूं, मर्क[1]-ईसको मांचो।
मोवस मतख सुपन के सौं द्रव्य, वे किम कर रास्यो सांचो
राज ॥ का० १ ॥
मकड़ी को जाल दिपाल धूम को, ज्यूं जल बीच पतासो।
माता होय गिरम इण पुट में, ए मिर्च बड़ो तमासो राज
॥ का० २ ॥
मल मूत्र दुर्गन्ध की क्यारी, दुख दावानल[2] आंचो।
सुन्दर वदन सोहे शशि ओपम, झूठ कथा मति वांचो राज
॥ का० ३ ॥
इण में "रतन" रहो दीस उत्तम, श्री जिनवरजी ने सांचो
लख चौरासी जगत जोन में, नटवा थई मत नांचो राज
॥ का० ४ ॥

१—मांकड़े की लकड़ी की ईरा २—जंगल की आग।

४५

गढ़ वांको

(तर्ज—वेलाउल राग)

ओतो गढ़ वांको राज २, कायम करने शिव सुख चाखो राज ॥ ओ० ॥

आठ करम को घाट विपमता, मोह महीपत जाको ।
मुगतपुरी कायम की विरियां, विच २ कर रह्यो साको राज ॥ ओ० १ ॥

खांडे की धार छुरी को पानो, विपम सुई को नाको ।
कायम करतां छिन नहीं लागे, जो निजमन दृढ राखो राज ॥ ओ० २ ॥

जगत जाल की लाय विपमता, पुद्‌गल को रस पाको ।
रसकुं छोड नीरस होईजावो, जगसुख सिर रंज नाखो राज ॥ ओ० ३ ॥

"रतनचन्द" शिवगढ कु' चढतां, ऊठ ऊठ मत थाको ।
अचल अक्षय सुख छोड़ विषय सुख, फिर २ मत अभिलाखो राज ॥ ओ० ४ ॥

४६

अष्ट कर्मा को आंटो

(तर्ज—राग वेलावल)

आंटो कर्मा को राज आंटो०, गाढो म्हारे पड़ियो ।
दृढ म्हारे पड़ियो सो वो अब काढ्यो राज काढ्यो ॥ आं० ॥

पुद्गल जड़ मोय संग अनादको, हूँ चेतन शुद्ध सांटो ।
राग द्वेष न्याती इनही के, निश दिन करे मासु आंटो राज
॥ आं० १ ॥

समकित ज्योत उद्योत दवाय, पंच विध कर पाटो ।
मोह मलेच्छ महा मदमातो, पेट्यो निज गुण लाठो राज ।
॥ आं० २ ॥

वसु[1] कर्म वरगणा[2] घेर लियो मोय, दाम्यो निज गुण घाटो
दिवकर प्रताप् प्रभु तुम पै, फर न रह याको फांटो राज
॥ आं० ३ ॥

षट्गुणवमांहि भम्यो चक्री जिम, निजगुण पर उपराटो ।
तिहुँ गुण "रतन" मये पर अन्दर कर्म कलंक दल माटो राज
॥ आं ४ ॥

१—आठ २—समूह

४७

कलि युग की छायां

तर्ज—

कूवे भांग पडी रे संतो भाई कूवे भांग पडी रे ॥ टेर ॥

सांची सीख सुणे नहीं सरधे, सहु में आण अडी रे
॥ सन्तो० १ ॥

कुल की कार मर्यादा लोपी, चाले मगज भरी रे
॥ सन्तो २ ॥

भला घरां री सुन्दर बाजे, वेश्यामांही मिली रे
॥ सन्तो ३ ॥

सतगुरु नाम धरावे सघला, इन्द्रियां वश न करी रे
॥ सन्तो ४ ॥

"रतनचन्द" सुध धर्म न आराध्यो, तो आगे नरक खडी रे
॥ कुवे ५ ॥

चारित्र विभाग

१

धन्ना मुनि

तर्ज–

धन्ना हूँ वारी वो थांरी देह तणी छवि निरख धन्ना मैं वारी हो
॥ टेर ॥

छट छट[1] तप कर तन थयो छीणो, तपस्या दूकरकारी हो
॥ ध० १ ॥

फिर फिर हाड, नैन करे तिक तिक, प्रभात गगन मांही ताराहो
मांस रहित तन, हाड अवि चीव्यो दुर्गत ममता मारी हो
॥ ध २ ॥

भविक चकोर ज्यूं हरषे, सूरत सुरनर प्यारी हो ।
निरखी नैन श्रेणिक नृप धन्दे, वीर वचन उरधारी हो
॥ ध. ३ ॥

आतमज्ञान सुधारस[2] पीकर, निज आतम निस्तारी हो ।
"रतनु" कहे धन धन्नों मुनिवर, क्रोड़ २ बलिहारी हो
॥ ध० ४ ॥

१—बैला की तपस्या । २—अमृत

४२

गज सुकुमाल मुनि

तर्ज

वन्दू नित गजसुकमाल मुनीस ॥ टेर ॥

संयम ले शमशाने आया, मन में अधिक जगीश ॥ व० १ ॥

सोमल आगन करी उपसर्ग्यो, परजाल्यो सिर शीश ॥ वं, २ ॥

खदबद खीच तणी पर सीज्यो, किया नाखी मन रीश ॥ वं ३ ॥

केवल लेय अमय पद पाम्या, अष्ट कर्म दल पीस ॥ वं ४ ॥

"रतन" कहे इम मन थिर कीना, वे सुख विसवावीस ॥ व ५ ॥

---

(३)

धर्मरुचि अणगार

तर्ज—

मुनिवर धर्मरुचि रिख वदूं ॥ टेर ॥
भव भव पाप निकाचित सचित, दुरमत दूर निकंदूं हो
॥ मुनि ॥

चम्पानगर निरुपम सुन्दर, उठे धर्मरूची रिख आया।
मास पारणे गुरु आज्ञा ले, गोचरियां सिधाया हो
॥ मुनि १ ॥

नीची दृष्टि धरण सूं राखे, मुनिवर गुणभंडारे।
भिक्षा अटन करतां आया, नागसिरी घर द्वारे
॥ मुनि० २ ॥

खारो तूंबो जहर हलाहल, मुनिवर ने बहरावे।
सहज उकरड़ी आई हम घर, बाहिर कहो कुण जावे हो
॥ मुनि ३ ॥

पूरण जाणने पाछा फिरिया, गुरु आगे आय धरियो।
कुण दातार मिल्यो रिख तोने, पूरण पातर भरियो हो
॥ मुनि ४ ॥

नाना करतां मुझने बहरायो, भाव उलट मन आणी।
चाखी ने गुरु निरणों कीधो, जहर हलाहल जाणी हो
॥ मुनि ५ ॥

असुज्ज[1] अमोज्ञ इल्क सम त्यागे, जो मुनिवर तू त्यागी।
निर्बल कोठों मदर हलाहल, अकाले मरजा नी हो
॥ मुनि० ६ ॥

आज्ञा से परठ्या न पाम्या, निरवद्य ठोर सिव्री आवे।
बिन्दू एक परठतां ऊपर, कीड़यां बहु मरजावे हो
॥ मुनि० ७ ॥

अन्य आहार थी एहवी हिंसा, सर्वथी अनरथ जाणी।
परम अमपरम भाव उल्लट धरी, कीड़ियां री करुणा आणी हो
॥ मुनि० ८ ॥

देह परतां दया नीपजे, तो मोटो उपकारा।
खीर खांड सम जाणी ज्ञानवर, तत्‌क्षिण करगया आहारो हो
॥ मुनि० ९ ॥

प्रबल पीड़ शरीर में साली, आपण सगति पाम्ही,।
पादोगमन[2] कियो संथारो, समता दृढता राखी हो
॥ मुनि० १० ॥

सर्वार्थ सिद्ध पहुँचा शुभ यागे, महा रमणीक विमाण।
चोसठ मण को मोती लटक, करणी न प्रमाण हो
॥ मुनि० ११ ॥

१—अकल्प्य २—वृक्ष की डाली की तरह लटकर संथारा करना

खबर करणने मुनिवर आया, गिरजी कालज कीधो ।
धिक धिक हो इण नागसिरी, ने, मुनिवर ने विष दीधो हो
॥ मुनि० १२ ॥

हुई फजीती कर्म बहु बांधी, पहुँची नरक दुवार ।
धन्य धन्य धर्म रुचि मुनिवरजी, करगया खेवोपार हो
॥ मुनि० १३ ॥

पैंसठ साल जोधाणे मांही, सुखे कियो चोमास ।
"रतनचन्द" कहे तिण मुनिवर ना, नाम थकी शिव वास हो
॥ मुनि० १४ ॥

---

(४)

भवदेव मुनि

तर्ज–

मोटी जग में मोहनी ॥ टेर ॥
भवदेव जागी मोहनी, तज आयो हो सद्गुरु के संग।
नागला आई वंदवा, रिख जाणी हो मन धरि उमग
॥ मोटी० ॥

सुण सुन्दर सुखकारिणी, मुझ नारी हो इण शहर मंझार।

असत्य वचन किम भाखिए, नहीं सुखिये हो मुनिवर ने नार
॥ मो० २ ॥

अवधारजो छोड़ायने मुझ वचन हो लज्जा में नाख।
रात दिवस हियडे वसे, हुँ भायो हो मन घर अभिलाख
॥ मो० ३ ॥

हा नहीं चाली तुम भणी, किम होसी हो इक रगी प्रीत।
मो विन सा दुःखणी होसी, हुँ जाणू हो म्हारा मन तणीरीत
॥ मो० ४ ॥

हुँ ऊभी तुम आगले, मुनिवर सी हो इम झूठ न बोल।
निष्कुष सुखांरे कारणे, थां रहता हो मनसा मत डोल
॥ मो० ५ ॥

सुरपादप तज योमतो, कुण घाले हो बांवल ने बाथ
हिरक हार तज हिये तणो, कुण घाले हो विषधर मुख हाथ।
॥ मो० ६ ॥

खीर खांड भोजन वमी, कुण दखे हो नर रांक गिवार
त्यागनकर सग्रह करे, तिण नर ने हो दीजे धिक्कार
॥ मो० ७ ॥

मगल[1] हवने मलपतो, कुण राखे हो रासभ नी आस

१—हाथी

सुर सुख तजने नरक की, कुण मूरख हो मन करे प्रयास
॥ मो० ८ ॥

मद-मातो हाथी फिरे, अंकुश थी हो जिम आवे ठाम।
वचन सुणी नागला तणां, मुनि किधा हो निश्चल परिणाम
॥ मो० ९ ॥

कर अनशन आराधना, रिख पाम्यो हो सुर नो अवतार
मव कर मुगत सिधाविया, एभाख्यो हो जिनवर विस्तार
॥ मो० १० ॥

अष्टादस वहोतरे, देवगढ में हो गाया मुनिराय
"रतन चंद" कहै मुनि तणा, पाय वन्दूं हो निज शीस नंवाय
॥ मो० ११ ॥

---

(५)

सती चन्दनबाला

तर्ज—

धन धन धन सती चन्दनबाला ॥ टेर ॥

दधिवाहन पुत्री जाणी, जिणरी माता हुई धारणी राणी,
सती भणी गुणां ने रूप रसाला ॥ धन० १ ॥

अपसरा गौर जाणे इन्द्राणी, जिणथूं पण रूप अधिको जाणी

वही दीप जिम दीपक माला ॥ धन० २ ॥
चम्पा छूटी ने सति मच गई, अठे सेठ धनावा माल लई
यह जोड़जो र कर्मसिखा चाला ॥ धन० ३ ॥
माता मस्तक मू डन दुःख दियो, सखी सु घरा माही तेलो कियो
सठ आई ने काढी तत्काला ॥ धन० ४॥
कूखे छाज र बाकला उड़द तणा,
कांई साधु आवेतो देऊ भावघणा
पणी भूख ने देही सुकमाला ॥ धन० ५ ॥
श्री वीरजिनंद निजर दीठा, सरीरे रोम रोम में लाग मीठा
सामो आपने हो रही उजमाला ॥ धन० ६ ॥
एक बोल घटतो आखी, आंखियां मांहि नहीं दीठो पाणी
वीर पाछा फिर गया तत्काला ॥ धन० ॥
मैं पूर्वभव पातक करिया, जिन आय आंगण पाछा फिरिया
नयणा नार बह जिम परनाला ॥ धन० ८ ॥
वीर पाछा फिर पारणो लीधो, अठ देवता आय मोहोत्सव कीधो
हाय कड़या गल मालिपन माला ॥ धन० ६ ॥
मूला सुन दोड़ी आइ, म्हारा रतन रखे सू टया माइ

जोयजो रे लोभ तणी झाला ।। धन० १० ।।
माजी थे तो कियो उपकारो, तरे वीरजिनद लीधो आहारो
दुःख दीठा ते तो कर्मारा चाला ।। धन० ११ ।।
पछे वीर जिनंद केवल पाया, जठे मती भणी देवता लाया
संयम ले छोड्या जंजाला ।। धन० १२ ।।
छतीसहजार री हुई गुरुणी, सती उत्कृष्टी कीधी करणी
केवल ले काट्या करम जाला ।। धन० १३ ।।
मृगावती जैवती जाणी, ज्यांरी चेल्यां हुई राजारी राणी
चेल्यां सहु रतनारी माला ।। धन० १४ ।।
कर्म खपाय सती मुगत गई, जठे जन्म जरा और मरण नहीं
मेटी मोह मिथ्यात तणी झाला ।। धन० १५ ।।
पूज्य गुमानचंदजी गुरू पाया, तरे सती तणा गुण मुख गाया
"रतनचंद" करी ढाल सुविशाला ।। धन० १६ ।।

आयुष पूरण कर गया हो, बारहवें स्वर्ग मझार ।
चवने सुगति सिधावसी हो, यो तो आवश्यक विस्तार
॥ सु० १२ ॥

त्रेसठ साल चोमास में हो, तीर्थ में धर्म नो प्रेम
"रतन चन्द" कहे श्रावकां हो, शुद्ध पौषध कीजो एम
॥ सु० १३ ॥

---

(७)

विजय सेठ—विजया सेठाणी

तर्ज—

धन धन श्रावक पुण्य प्रभाविक, विजय सेठ ने सेठाणी
॥ टेर ॥

शुक्ल-पक्ष विजया व्रत लीनो, सेठ कृष्ण पक्ष रो बाखी
॥ धन० १ ॥

सज सिणगार चढ़ी पिऊ मन्दिर, हेज भरी हिये हरखाणी
॥ धन० २ ॥

तीन दिवस शुभ व्रत तणां छे, सेठ कहे मधुरी वाणी
धन० ३ ॥

वचन सुणी नेणा नीर ढलियो, वदन कमल थई विलखाणी
॥ धन० ४ ॥

शुक्ल-पक्ष व्रत गुरु मुख लीधो, अब परणो बीजी सहाणी[1]
॥ धन० ५ ॥

अवर नार सहु बहन बरोबर, धन धीरज धारी जाणी
॥ धन० ६ ॥

हिये हार सिणगार सजा तन, काम घटा जिय उलटाणी
॥ धन० ७ ॥

एक सेज पर हेज प्रबल, तो पिण मन राख्यो ताणी
॥ धन० ८ ॥

वर्षाकाल विद्युत[2] घन[3] गाजे, चौधारा बरसे पाणी
॥ धन० ९ ॥

मन वच काय अखडित निर्मल, शील राख्यो समता आणी
॥ धन० १० ॥

षड् रितु वर्ष दुवादस निर्मल, सरस सम्बन्ध ए अधिकाणी
॥ धन० ११ ॥

१—सेठाणी २—बीजली ३—बादल

(६)

राजा चन्द्रावतसक का पौषध

तर्ज—चालियो वेला

शुद्ध पौषध प्रतिमा पालिए हो, टालीजे आगम दोष ।
जिन आगम ने वस करो हो, जो वेगी थे पावो मोष
॥ शु० १ ॥

पोतनपुरी नगरी सखो हो, चन्द्रावतंसक ईश ।
दृढधर्मी दृढ आतमा हो, जियमें पूरण गुण इकवीस
॥ शु० २ ॥

महल मनोहर सुन्दरु हो, निरवद जायगा जाण ।
पोसह धर काउस्सग कियो हो, दोय पग पर रह्यो महीराण
॥ शु० ३ ॥

दासी नाम मृणालिका हो, तन चाकर सरदार ।
दीपक कीधो महल में हो, रखे व्यापे घोर अंधार
॥ शु० ४ ॥

जहां लग ज्योत बुझ नहीं हो, मोने त्यां लग पाळवा ना नेम
दृढ कर मन तन वस कियो हो, जिम अभिग्रह कीधो एम
॥ शु० ५ ॥

पहर निशा बीती जिसे जी, बुझवाने हुयो तेयार ।
रखे तिमिर हुवे रायने, तिणसु' तेल भर गई नार
॥ शु० ६ ॥

टूटे नाड्यां पग थकी जी, छूटे छे: निज प्राण ।
ऊठे सरणा अंग में हो, पण राख्यों निश्चल ध्यान
॥ शु० ७ ॥

अर्ध निशा ने अवसरे जी, आवी फेर हजूर ।
तेल घटंतो देखने हो, वलि दीपक भर गई पूर
॥ शु० ८ ॥

व्यापी प्रबल वेदना हो, पीडित थयो शरीर ।
पग ध्रूजे धूजे नहीं हो, पण अग अंग में पीर
॥ शु० ९ ॥

तन सेवा करवा भणी जी, आई तीजा पहर समीप
भगति भाव कर तेल सू' वलि, पूरण भर गई दीव
॥ शु० १० ॥

चोथा पहर नी वेदना हो, अनंत अनंती होय ।
गिरिया[1] गिरिवर टूंक ज्यों पिण, चल-चित्त न हुयो कोय
॥ शु० ११

१--पर्वत

विमल केवली करी प्रशंसा, ए दोनां उत्तम प्राणी
॥ धन० १२ ॥
सबर हुआं दाउ संजम लीधो, मोहकर्म कियो धूल धाणी
॥ धन० १३ ॥
"रतनचंद" पाय नितप्रति वंदे, केवल ले गया निरवाणी
॥ धन० १४ ॥
पूज्य गुमानचंदजी गुरु मिलिया, सेठ कथा ज्यांरे मुख जाणी
॥ धन० १५ ॥

८

अरणक श्रावक

तर्ज—

धर्म प्रमाणिये रे, अरणक श्रावक अम ॥ टेर ॥
चम्पा नगर थी चालियो जी, सागर में चढ़ जहाज
लोक अनक लार हुवाजी, धन कमावा ने काज
॥ धर्म० १ ॥
इन्द्र प्रशंसा अति करी जी, सुर नर मिले अनेक।

तो पिण अरणक नहीं चलेजी, तब चाल्यो सुर एक
॥ धर्म० २ ॥

दातश्रेण खुरपा जिसा जी, लोयण[1] राता लाल ।
भृकुटि[2] भाल[3] अशोभती जी, मुख थी मूके झाल
॥ धर्म० ३ ॥

मस्तक माला कंठमें जी, अहि[4]काने खड़ग हाथ ।
रूप कुरूप डरावनो, जाणे अमावस्यारी रात
॥ धन० ४ ॥

दीर्घरूप आकाश में, देखे प्रवहण[5] लोक ।
छोड धर्म तूं अरणका, केह देसूं जहाज डूबाय
॥ धन० ५ ॥

माठा[6] लखणा रा धणी, तूं मान रे मूरख बात ।
हरगिज आज छोड़ू नहीं रे, करसूं थारी घात
॥ धन० ६ ॥

अरणक अणसण ऊचरे जी, दृढ़ धर्मी धर प्रेम ।
म्हारो धर्म म्हारे वसुजी, यो कहो करसी केम
॥ धन० ७ ॥

१-नेत्र २-भौंह ३-ललाट -४सर्प ५-जहाज ६-अशुभ

चरित्रे मुगत विधात्यों जी, ज्ञाता में अधिकार ।
"रतनचद" गुण गाविया जी, बीकानेर मझार

॥ धन० १४ ॥

गुण्सठ माघ शुक्ल पखेजी, पांचम ने गुरुवार ।
समकित धरम आराधजो जी, साम्भल ए अधिकार

॥ धन० १५ ॥

६

गज सुकुमाल मुनि

(तर्ज–साहिब सांभो अरनाथ अ०)

तुम पर वारी हूँ वारी जी वार हजारी, तुम पर वारी

॥ टेर ॥

देवकी नंद शिरोमणि सुन्दर, नेम तणी सुण वाणी ।
तज संसार संजम आदरियो, अतुल वैराग्य मन आणी

॥ तुम१ ॥

माता हाथ तणों कर भोजन, अन्य आहार नहीं लीधो ।
आज्ञा ले श्री नेमजिनद नी, मुगत महल मन कीधो

॥ तुम २ ॥

रूप सरूप अनूप अनोपम, सज सोलह सिणगार ।
नख चख सिख सोहे सहु सुन्दर, हिये अमोलक हार
॥ सुण० ३ ॥

मन मोहन बैठा मंडप में, ए इम प्राक्ष आचार ।
लुल लुल लटका करत बीनणी, जोगे आंख उघार
॥ सुण० ४ ॥

परणी न परणी कर लाया, पल पूरी कियो ध्यान ।
कपट करी ने धर्मी होयने, कौन सिखायो थाने ज्ञान
॥ सुण० ५ ॥

मोह वचन महिला' मन गमता, सुणया श्रवण मंझार ।
कनकाचल सम काया कीनी, धन धन जम्बुकुमार
॥ सुण० ६ ॥

प्रभवो सुन्दर सहु समझावी, भेट्या सुधर्मस्वाम ।
'रतनचन्द" कहे म मुनि वद, पाम्या अविचल धाम
॥ सुण० ७ ॥

११

जयवंती श्राविका

तर्ज--

म्हारा ज्ञानी गुरु नी वाणी हो अमृत सारखी जी ।
समझे नर उत्तम, जो होवे मानव पारखी जी ।। टेर ।।
नगर कोशाबी उदाइ महाराय,
राज जी हो चरम जिनंद समोसर्या ।
जेयंती भेल्या जिन पाय,
राज जी हो राज उज्जल निर्मल गुण भर्या ।। म्हा० १ ।।
जेवती पूछे कर जोड़ राज-जी हो,
राज-भारी हुवे किम जीवडो । म्हा० ।
सेवे पाप अठारे अघोर राज-जी हो,
राज-जिण सू न छूटे जगको छेवडो ।। म्हा० २ ।।
भव अभव दोनूं ही रास राज जी हो,
राज-किण करणी सूं जग मे गिरती । म्हा०
रास अनाद स्वभावे विमास राज जी हो,
राज-किणे न कीवी कहै शासन धणी ।। म्हा० ३ ।।

महाभयङ्कर[1] समसान भ्यास[2] मह, साल भमर दिग दीसे ।
उज्वल ज्वाल बले ये क्षिग क्षिग, तरू[3] तल रया मुनीसे
॥ तुम० ३ ॥

नेत्रदृष्टि मांडी अंगुष्ठ, श्रेष्ठ सकल विध साजे ।
राचे भावम-राम तणे रस, पूरव पातक भाजे
॥ तुम० ४ ॥

मुनिवर मेरू-शिखर जिम निश्चल, कर्म कटन महाबलियो ।
दखी गज मुनि श्वान[4] ज्यू मोमस, क्रोध करी परजलियो
॥ तुम० ५ ॥

मस्तक पाल बांधी माटी री, मुनिवर ममता मरिया ।
भग भगता खेर ना खीरा, मुनिवर ने सिर धरिया
॥ तुम० ६ ॥

खदबद खीच तणी पर सीझे, तड़ तड़ नासा टूटे ।
मुनिवर समता भाव धरी न, लाभ अनन्तो लूटे
॥ तुम० ७ ॥

अन्तसमय कवल उपराजी, त्याग उदारिक देह ।
अक्षय अन्त अवगाहन करन, अनन्त चतुष्टय लेह
॥ तुम० ८ ॥

१—भयंकर —मसान ३— वृक्ष के नीचे ४—कुत्ता

अन्यप्रव्रज्या ने अतुल परीमो, अन्तसमय गढ लीधो ।
ठाणायंग–अन्तगढ में देखो, उत्तम कारज कीधो
॥ तुम० ६ ॥

"रतनचद" कहे ते मुनिवर ना, नाम थकी निस्तारो
शहर नगीने जोड करी है, मधु–मासें गुरुवारो
॥ तुम० १० ॥

१०

जम्बुकुमार

तर्ज —

सुण सुण सुन्दरू रे, भोग पुरन्दरू रे,
वहाला, म्हारी अबलानी अरदास ॥ टेर ॥

ऋषभदत्त ने धारणी अगज, नामे जम्बूकुमार ।
सुधर्मा स्वामी तणी सुण वाणी, सयम ने हुआ तयार
॥ सुण० १ ॥

आठों वाला रूप रसाला, परणी चल्या आवास ।
ध्यान समाध लगायने बैठा, भामण रही विमास
॥ सुण० २ ॥

रूप सरूप अनूप मनोरम, सज सोलह सिणगार ।
नख चख सिख मोहे सदु सुन्दर, हिये अमोलक हार
|| सुण० ३ ||

मन मोहन बैठ्या मंडप में, पे इम प्राण आधार ।
लुल लुल लटक्या मगक बीनवां, बोवो आंख उघार
|| सुण० ४ ||

परणी न परणी घर लाया, पत्त पूरी कियो ध्यान ।
कपट कुगा न धर्मी हायो, कौन सिखायो थांन मान
|| सुण० ५ ||

माह बचन महिला' मन गमता, सुणया श्रवण मंझार ।
कनकाचल सम काया कीनी, धन धन जम्बूकुमार
|| सुण० ६ ||

प्रभवो सुन्दर सदु ममभधारी, मेल्या सुभमस्वाम ।
'रतनचन्द' कहे न मुनि तदृ, पाम्या अविचल धाम
|| सुण० ७ ||

१—स्त्री —सुमेरु पर्वत

११

जयवंती श्राविका

तर्ज--

म्हारा ज्ञानी गुरु नी वाणी हो अमृत सारखी जी ।
समझे नर उत्तम, जो होवे मानव पारखी जी ॥ टेर ॥
नगर कोशाम्बी उदाइ महाराय,
राज जी हो चरम जिनद समोसर्या ।
जेवंती भेट्या जिन पाय,
राज जी हो राज उज्जल निर्मल गुण भर्या ॥ म्हा० १ ॥
जेवती पूछे कर जोड राज-जी हो,
राज-मारी हुवे किम जीवडो । म्हा० ।
सेवे पाप अठारे अघोर राज-जी हो,
राज-जिण छू न छूटे जगको छेवडो ॥ म्हा० २ ॥
भव अभव दोनूं ही रास राज जी हो,
राज-किण करणी सूं जग में गिरती । म्हा०
रास अनाद स्वभावे विमाण राज जी हो,
राज-किणे न कीधी कहै शासन धणी ॥ म्हा० ३ ॥

सहु भवी पामसी मोष राज, श्री हो राज
भविना विरहो थासी जगत में । म्हा०
जिन कहे जीव भरया सहुलोक राज, हो राज जी,
एक प्रदेश न खाप मोष में ॥ म्हा० ४ ॥
भलो भलो क जागतो जीव राज, हो राज जी,
धर्म कमावे सो रूडो जागतो । म्हा०
विचर धार मिथ्यातरी नींद राज, हो राज जी
सूतो रूडो, नहीं पाप लगावतो ॥ म्हा० ५ ॥
आलस उद्यमी दुरबल दृढ शरीर राज, हो राज जी,
एणम रीते माहु जिया दाखिया । म्हा०
मीखे ग्रान ने टाल सहु नी पीड राज, हा राज जी,
त तो रूडा श्री जिन भाखिया ॥ म्हा० ६ ॥
सेष इन्द्रिय विषय तेवीस राज, हो राज जी,
चार कषाय सु जग मांही रूले । म्हा०
शम कर इन्द्रिय जीते रागने रीस राज, हो राज जी,
त तो नर शिव सुख मिले ॥ म्हा० ७ ॥
सुण सुरत वाणी पामी परम वेराग राज, हो राज जी,
फवल पामी च्यारो सघ में, म्हा० ।

मुगत नगर पहुँची महाभाग राज, हो राज जी,
साखी जिन दाखी भगवति अंग मे ॥ म्हा० ८ ॥
साल बयासी जोधाणे चोमास, राज हो राज जी,
"रतनचंद" गुण गाविया म्हा० ।
जैवंती नो प्रश्न विलास राज, हो राज जी,
सांभल श्रवणे सहु सुख पाविया ॥ म्हा० ६ ॥

१२

धन्ना मुनि

(तर्ज—नेण झकोले)

तुम पर वारी जी वीरजी वखाणी हो, मुनीसर करणी आपरी
॥ टेर ॥
नगरी काकंदी से मुनीश्वर आपज अवतरया, मेल्या श्री जगदीश
नार बतीसे हो मुनिश्वर अपसरसी तजी, सोनेय्या क्रोड़ बतीस
॥ तुम० १ ॥
उग्रतपस्या हो मुनिवर छट्टतप आदरयो,
आंबिल उज्झित अहार ।
समण वणीमग हो मुनीसर वंछे नहीं, धन्य थारो अवतार
॥ तुम० २ ॥

साम सु भींख्या हो मुनीश्वर मांस लोही नहीं,
तन थयो पिंजर रूप ।
आंख्यां नी कीकी हो मुनिश्वर तारा टिकटिके,
पूछे श्रेणिक भूप ।। तुम० ३ ।।
मुगति ने मारग हो जिनेश्वर सहु उद्यम करे,
इस में हुवा श्रीकार
श्री मुख भाखे हो नरवर तपस्या में सिर,
धन्य धन्ना अणगार ।। तुम० ४ ।।
सुण सुख पायो नरवर माथा शिश नमे, नीचा नमाई ग्राम ।
भग नमाई हो नरेश्वर, दी प्रदक्षिणा, मेट्या मगबाधाश
।। तुम० ५ ।।
गुण सिन्धु पूरा हो मुनीश्वर 'परमसागर'[1] जिसा,
मथाई रिखराम ।
कुमत जाईहा हो मुनीश्वर खंडी कर्म ने, सारो वंछित काज
।। तुम० ६ ।।
माम मथारो हो मुनीश्वर स्वाथ सिद्ध रूड्यो,
कर्म भरम दिया तोड़ ।
महा विदेह में हो मुनीश्वर मुगत सिधावसी,
"रतन" कहे कर जोड़ ।। तुम० ।।

---

१ स्वयं भूरमण समुद्र

१३

देवानंदा का अविचन्ह

तर्ज–

ऋषभदत्त ने देवानंदा नार, रथ पर रे२ वेगीने वंदन संचरया रे
॥ टेर ॥

दीठोरे अति मीठो वीर दिदार, नायक रे २,
सुख दायक निर्मल गुण भर्या रे ॥ १ ॥
स्फटिक सिंघासण वैठा वीर जिणन्द, अनमिखरे २,
नेणे भर निरखे वीर ने रे ।
हुलसो रे अंग उपनो परमआनन्द, फूली रे २,
सुध भूली मगन शरीर में रे ॥ २ ॥
विकस्यो रे अंग छूटी कचुक डोर, भरिया रे २,
वलि लायो खीर[1] पयोधरे[2] रे ।
पूछे रे गौतम गणधर कर जोड, बाई रे २,
- बीजी नहिं कोइ इण परे रे ॥ ३ ॥
भाखे रे वच्छ ये छे मोरी माय, पूरव रे २,
नेहावश ए परवश थई रे ।

---

१ दूध, २ स्तन में

पुग्य मत बांधी बहु अंतराय जिण कर रे २,
मुक्त सुख कर यु ही रही रे ॥ ४ ॥
नमनेर निज भवसे भीमुख वेस, पामी रे २,
दुःख स्वामी मुख सयम धकी र ।
इसड़ा रे गुन्न दायक बिलख्या' सेश, अब तोरे २,
हिवे प्रीति करू अविचल अखीरे ॥ ५ ॥
सग तज रे देहु लीधो संजम भार, पाल्यो रे २,
दु ख टालियो चउविह संघ मेंर ।
माम मंयारे पहुँची मुगत मझार, मास्यो रे २,
जिन दाख्यो भगवति अंग मे र ॥ ६ ॥
जननी वच्छल सुख दायक महावीर, पहली रे २,
शिव मही उर वासो वसी र ।
"रतनचंद" न राखो धरमा री हीर, पाली रे २,
चौमासो वरम कियो भर्मा रे ॥ ७ ॥

---

१ मिलिया पाठान्तर

१४

मंडूक श्रावक

तर्ज–

वीर वखाण्यो हो श्रावक एहवो रे ॥ टेर ॥

नगरी तो राजगृही रा बाग में रे,

हां रे काईं समोसर्‌या महावीर रे,

मड्डुवो तो श्रावक निरमल गुण धणी रे,

हां रे काईं चाल्यो भगवंत तीर रे ॥ वी० १ ॥

विच में तो मिलिया बहु अन्य तीरथी रे,

हांरे काईं बोल्या इण पर वैणरे।

पांच[१] अरूपी वीर वखाणिया रे,

हांरे काई तूं देखे निज नेण रे ॥ वी० २ ॥

अछता तो वीर कदे भाखे नहीं रे,

हांरे काईं देख्या श्री वीतराग रे।

विगर त्रिलोकी आगम वारता रे,

हांरे कांई किम भाखे महाभाग रे ॥ वी० ३ ॥

१– धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय जीवास्तिकाय और काल।

शब्द गध न दीजो बायरो रे,
हांरे कांई स्वर्ग नरक नी बात ।
सुख दु ख जीव कर्म दीसे नहीं रे,
हांरे थांन भइयां तो लागे मिथ्यात रे ॥ बी० ४ ॥
उगत न उपजी भय बोल्या दूसरा रे,
हांरे कांई किष्ट कियो मिथ्यात रे ।
धर्म दिपायो भाग्यो दरख घ रे,
हांरे कांई मेट्या श्री जगनाथ रे ॥ बी० ५ ॥
भय दीठी दीठ घदीन जो दासता रे,
हांरे कांई होतो समकित नास रे
धारू संघ में तो बस भवि पामियो रे,
हांरे कांइ श्रीमुख दी शाबास रे ॥ बी० ६ ॥
एक भव तो करने सुगत सिधावसीरे,
हांरे कांई भाख्यो वीर जिनद र ।
समत चोरासी पाली पीठ में रे,
हांरे कांई एम कहे "रतनचंद" रे ॥ बी० ७ ॥

१५

पूज्य श्री गुमानचन्द जी महाराज

दोहा–गुणवंत गुरु रा गुण कियां, समकित होय उद्योत ।
ज्ञाता में जिनवर कह्यो, लहै तीर्थंकर गोत ।। १ ।।
अदना गुण अनेक छै, कहो कुण सकै जोड ।
पिण लवलेस इहां कहूँ, पूरण मो मन कोड ।। २ ।।

चाल–ईडर आंबा आमली रे ।।

ढाल–सहर सुभट पुर शोभतो रे, मरुधर देश विख्यात ।
अखेराज कुल मेसरी रे, चैना नामे मात हो ।। १ ।।
पूज्य श्री थे गिरवा ने गुणवन्त ।। टेर ।।
बडी पुन्याई मातरी रे, जनम्यो पुत्र सुजात ।
करण मूहूर्त भल आवियो रे, हुतासन री रात हो
।। पूज्य० २ ।।
पिडत जन ने तेडिया हो, लगन लियो तिण–वार
मोटी गादी जोग छै रे, विद्या रा भंडार हो
।। पूज्य० ३ ।।
बालवै लीला करी रे, सुन्दर वरण शरीर ।

आधाकर्मी मोल तणा तज्या जी, निजर लागी एक मोष
|| ध० ३ ||

गाम नगर पुर पाटण विचरिया जी, ममता दृढता मेल ।
भविजन हरख निरखे नयन सू जी, मूरत मोहन वेल
|| धर्म० ४ ||

वचन सुधारस वरसे वदन थी जी, सुवर्णो मगल माल ।
हृदय सरोवर थी गग प्रगटी जी, आवे सागर री परनाल
|| ध ५ ||

हेतु दृष्टान्त जुगत मले घणी जी, वचन सुहावणा मीठ ।
निरखतां नयणा छके धापे नहीं जी, लोयण अमिय वैईठ
|| ध० ६ ||

वाणी गहरी गरजण मारखी जी, भविक मोर हरखाय ।
मूल मिथ्यात मेटे मन भरम रो जी, शिव पंथ शुद्ध बताय
|| ध० ७ ||

शहर मेड़ता कीधी विनती जी, आप रह्या चौमास ।
वेले वेले मोड़यो पारणो जी, आणी हरख हुलास
|| ध० ८ ||

देश देश री आई विनती जी, सहु रे दर्शन री चाय ।
केई तो आयने चरण भेटिया जी, घणा रे रही मन मांय
॥ ध० ९ ॥

तपतज व्याप्यो आण शरीर में जी, पिण दृढता अपार ।
कातिवद आठम सुरगति लही जी, च्यार पोहर संथार
॥ ध० १० ॥

मज्झ आउखो पायो महामुनि जी, उत्तम पुरुष स्वभाव ।
पिण प्रश्न पूछण देखण तणो जी, रह्यो घणा रे चाव
॥ ध० ११ ॥

श्रुतकेवली था भरत क्षेत्र में जी, मोटी पडी अन्तराय ।
कल्पवृक्ष कहो किम ठाहरे जी, मरुधर देश रे मांय
॥ ध० १२ ॥

पंडित मरण सुधार्यो महामुनि जी, कियो घणो उपकार ।
कुत्यावण री हाट समा हुआ जी, ज्ञान दान दातार

आधाकर्मी मोल तथा तज्या जी, निजर लागी एक मोष
॥ ध० ३ ॥

गाम नगर पुर पाटण विचरिया जी, समता रहता मेल ।
भविजन हरख निरखे नयन सू जी, मूरत मोहन बेल
॥ धर्म० ४ ॥

वचन सुधागम वरसे वदन थी जी, सुखठाँ मगल माल ।
हृदय सरोवर थी गंग प्रगटी जी, ज्ञान सागर री परनाल
॥ ध० ५ ॥

हेतु दृष्टान्त जुगत भले वणी जी, वचन सुहावणा मीठ ।
निरखतां नयण क्यू धापे नहीं जी, लोयण अमिय पैईठ
॥ ध० ६ ॥

वाणी गहरी गरजण मारखी जी, भविक मोर हरखाय ।
मूल मिथ्यात मेटे मन भरम रो जी, शिव पथ शुद्ध बताय
॥ ध० ७ ॥

शहर मडते कीधी विनती जी, आप रह्या चौमास ।
पल वेल मांडयो पारखो जी, भाखी हरख हुलास

देश देश री आई विनती जी, सहु रे दर्शन री चाय ।
केई तो आइने चरण भेटिया जी, घणा रे रही मन मांय
॥ ध० ६ ॥

तपतज व्याप्यो आण शरीर में जी, पिण दृढता अणपार ।
कातिवद आठम सुरगति लही जी, च्यार पोहर संथार
॥ ध० १० ॥

मज्झ आउखो पायो महामुनि जी, उत्तम पुरुष स्वभाव ।
पिण प्रश्न पूछण देखण तणो जी, रह्यो घणा रे चाव
॥ ध० ११ ॥

सूत्रकेवली था भरत क्षेत्र में जी, मोटी पड़ी अन्तराय ।
कल्पवृक्ष कहो किम ठाहरे जी, मरुधर देश रे मांय
॥ ध० १२ ॥

पंडित मरण सुधार्यो महामुनि जी, कियो घणो उपकार ।
कुत्यावण री हाट समा हुआ जी, ज्ञान दान दातार

॥ कलश ॥

इम पंडित मंडन, पाप खंडन, दीठां होय आनन्द है।
सुखम सागर, ज्ञान आगर, गिरवा गुरु गुमानचंद है ॥
शरीर सुन्दर, बुद्धि निर्मल, शुद्ध बोध आधार है।
"रतनचन्द" दिन रयण सिमर, पूज्य रो उपगार है ॥

१६

पूज्य श्री दुरगादासजी महाराज रा गुण

जिने मूल जिनधर्म छै, मर्म पचासण धार।
फल प्रगट दिन दिनकर, बोध बीज अंकूर ॥ १ ॥
तीर्थंकर पद संपजे, गुरु गिरिवा गुणवंत।
आगम अर्थ विचारतां, एह सुगत नो पंथ ॥ २ ॥

चाल—हांजी मोरा जनम मरण रा साथी० ॥

हांजी मोरा सतगुर जी उपगारी, थांरी कोड़ कोड़ बलिहारी
गुरु बिना ज्ञान ध्यान नहीं प्रगटै, मिटै न मोह विकारी।
समकित मास समापण कारजे, सतगुरजी बोपारी
॥ हांजी० १ ॥

मरुधरदेश में गांव सालरिया, अवतरिया अवतारी ।
ओस वंस सिवराज पिता तुम, सेवा दे महतारी
॥ हांजी० २ ॥

तांघर जन्म लियो पट् समते, सुभ वेला सुभ वारी ।
बाल लीला कीधी लघु वय में, मोहदसा मन धारी
॥ हांजी० ३ ॥

श्री मुख नैन नासिका सोहे, मूरत मोहनगारी ।
वर्ष चतुरदश दास दुरग रिख, होय रहे ससारी
॥ हांजी० ४ ॥

गुरु बहु निरख परख गुर भेट्या, कुल लग गुरु गुणधारी ।
सुण उपदेश रहस्य धर घट में, निज आतम निस्तारी
॥ हाजी० ५ ॥

बुद्ध अतसुद्ध कला बहु फैली, भणिया अंग इग्यारी ।
मूल छेद ने सप्त निखेपा, हुवा ज्ञान भंडारी
॥ हाजी ६ ॥

सुस्वर कठ, विशाल वचनसुं, करै राग उपचारी ।
श्रावक वर्ग सोहे मुख आगल, मानूं केसर क्यारी
॥ हांजी० ७ ॥

विचरया ग्राम नगर पुर पट्टण, प्रतिबोधत नरनारी ।
समकित ज्ञान उद्योत दिवाकर, जग कीरत विस्तारी
॥ हांजी० ८ ॥

निरखी नैन भविक जन हरखत, परसे सुद्ध आचारी ।
"रतनचंद" उपदेश सुणी नै, लियो सीस गुरु धारी
॥ हांजी० ९ ॥

१७

दोहा-जिन आज्ञा अनुसार थी, उज्वल निर्मल शुद्ध ।
गुरु गुमान के ज्ञान थी, कीधो संजम शुद्ध ॥
तर्ज—चाल—नागरवेल माहरा भावें ॥

श्री पूज्य तणा गुण भारी, नित सुमरो नर नारी रे ।
म तो दुरगत विघन सुख कारी ॥ नित ॥ श्री पू० टेर ॥
वस्त्र अरु पात्र, आहार सने थानक, निरदोषण आदरिया ।
आगम अर्थ तणें अनुसारे, पाले निरमल क्रिया रे
॥ श्री पू० १ ॥
परिसा सहन सहण वसुधा जिम, मेरु ज्यु अचल अडोले ।
कूड कपट छल छिद्र निवारी, वचन सुधारस बोले रे
॥ श्री पू० २ ॥

तप परभाव सुभावे अतसै, सन्मुख कोई नहीं मंडै ।
स्याद्वाद चरचा अनुसारे, पाखंडी मत छंडै रे
॥ श्री पू० ३ ॥

विचरे ग्राम नगर पुर पाटण, ज्ञान ध्यान का दरिया ।
निरखी नैन भविक जिन वंदे, ते भव सागर तिरिया रे
॥ श्री पू० ४ ॥

सहर सुमटपुर श्रावक सहु मिल, हित सूं करी अरदास ।
किरपा कर करुणा के सागर, आप रह्या चोमास रे
॥ श्री पूज्य० ५ ॥

वास इकांतर किया निरंतर, छट्ठ आठम बले टाणे ।
निज पिंड बल खीणो अवलोके, आप रह्या थिर थाणे रे
॥ श्री पू० ६ ॥

समत बयाली ने तणी चौमासी, सावण सुद ससि वारो ।
तिथ एकादसी अष्ट पोहर नो, कियो चोविहार सथारो रे
॥ श्री पू० ७ ॥

त्याग वैराग कियो नरनारी, काम तज्यो नर कामी ।
कीरत फैल रही सहु मुख थी, सरग विराज्या स्वामी रे
॥ श्री पू० ८ ॥

श्री गुरु वचन सुधी निज श्रवणे, ज्ञान सुधारस पीयो।
मनिजन मन मिली अति हरषे, मोक्षम इधको कीधो रे
॥ श्री पू० ६ ॥

गुरु गुण ग्रंथ सके कुण सुख थी, उपमखता कुण पाये।
मुगत महल की सहस करण नै गुरु चरणों सिर नामै रे
॥ श्री पू० १० ॥

वर्ष छिहंतर सब श्रावग्दा, पामी गिरा दूरगम।
रतनचंद" कहे गुरु सुकरपा थ, प्रगट्यो ग्यान विसेस रे
॥ श्री पूज्य० ११ ॥

चारित्र विभाग समाप्त

परिशिष्ट

कवियों की दृष्टि में आचार्य श्री

१

सेवा श्री रत्नमर पथिप संपदा आठ लाल रे
दरसम कीधा पूजरा असुभ करम जाय नाठ लालरे
॥ रतन० १ ॥

रतनमुनि महारे मन बसे, मोटो मस उपगार लालरे
काप्यो संसार क्लेश पा, मीठा वचन उच्चार लालरे
॥ रतन० २ ॥

दया मला धर्म देसणा, गरजै कहर जम लालरे
मद उतरे पाखंड नो बल न रहे गज जम, लालरे
॥ रतन० ॥

गायाँ रा टोला मध्ये, जेम भद्र क सांड लालरे ।
शोभे चतुर विध संघ में, परम देशना मांड लालरे
॥ रतन० ४ ॥

बरसे श्रीमुख मेघ ज्यूं, वचन धारा बारामास लालरे ।
फूले भविजन आपथी, जरत मिथ्या तज वास लालरे
॥ रतन ५ ॥

कृतियारत्नी दूकान मे, वस्तु चहै सो तैयार लालरे ।
तिम श्री पूजने भेटीया, पावे वंछित सार लालरे
॥ रतन० ६ ॥

महिमा देस प्रदेस मे, फैली ठामो ठाम लालरे ।
अतिसे पूज तणा इसा, पाखंडी करत प्रणाम लालरे
॥ रतन० ७ ॥

खत्री सेठ सेनापति, मुसद्दी उमराव लालरे ।
कायथ ब्राह्मण ने प्रजा, भेटे श्री पूज रा पांव लालरे ॥
॥ रतन० ८ ॥

केई वदत निदत केई, तो पिण समता भाव लालरे ।
वसुधा जिम परिसा सह्या, एक मुगत रे चाव लालरे ॥
॥ रतन० ६ ॥

चौथा आश्रम उपनी, तन चरणा में खेद लालरे ।
तो पिण थाणे रह्या नहीं, करण विहार उमेद लालरे ॥
॥ रतन० १० ॥

गांव नगर पुर विचरता, करता धरम उपदेश लालरे ।
शहर जोधाणे पधारिया, हरख्या लोग विसेस लाल रे
॥ रतन० ११ ॥

सुर पादप सम पूज री, सेवा लही सुखकार हालरे ।
कहे "हमीर" रत्नेश री, बलिहारी सोवार हालरे
। रतन० १२ ॥
—पूज्य श्री हमीरमलजी मा०

२

राग कामीरी—किण कारीपिचकारी रे।

रतनमुनि री वाणी रे, मान लागे प्यारी ॥ टेर ॥
पूज्य रतन सम भरतक्षेत्र में, बिरला छ अणगारी रे
॥ मा० १ ॥
अंग उपंग मूल उर धरिया, ये ज्ञान तणा भंडारी रे
॥ मा० २ ॥
सीतल चंदन ज्यू अति अविकल, मेटे मिथ्यात्व पधारी रे
॥ मा० ३ ॥
श्रावक वृंद करे मुख भामल, मानो भ्रमर क्यारी रे
॥ मा० ४ ॥
चहुं दिशा मांही कीरत पसरी, प्रतिबोध नरनारी रे
॥ मा० ५ ॥
हमीरमल' सदगुरु वाणी पर, पलक पलक पर वारी र
॥ मा० ६ ॥
—पूज्य श्री हम्मीरमलजी म

३

ढाल—उज्जैन गढ म्हाने ले चालो—

रतनचंद मुनि दीपता, म्हारा सारे वंछित काज जी ।।रतन०।
भवि सारे आतम काज जी ।। रतन० टेर ।।

पूज्य गुमानचन्दजी गुरु पाया, मिथ्या मत कियो दूर जी ।
जगत सुखा ने छाँड ने जी, भल हुआ सजम मैं सूर जी
।। रतन० १ ।।

स्वमति परमति सब घट भीतर, सप्त नयां चित्त धारजी ।
पाखंड मतिकुं खंडन करे है, घाले धर्म तंत सार जी
।। रतन० २ ।।

क्रोध, मान, माया, लोभ एतलो, दुति[1] पट्कर्म विडार जी ।
सप्तवीस गुण-धार शिरोमणी, मोटा मुनि अणगार जी
।। रतन० ३ ।।

नेत्र, श्रवण, नासा अतिसुन्दर, देह पुण्य की खान जी ।
देखत नयन, लोचन नहीं धापै, चन्द चकोर ज्यूं जाण जी
।। रतन० ४ ।।

१—क्राति

साधु सिरोमणि शोभे सुगुरु, जिम तारन बिच चन्द्र जी।
चतुरसंघ में दीपत स्वामी, निमशान में मेन आनन्द जी
॥ रतन० ५ ॥

संवत् अठारे वर्ष अस्सी में, नागौर शहर में आयजी।
"दौलतराम" चरणा रो चाकर, सुस सुस लाग थारे पायजी
॥ रतन० ६ ॥

—मुनि श्री दौलतरामजी मा०

४

चाल—चतुरथारे सुगण सुनार घेसर सोना की

देही दिप दिप तन दिनंद, वदन मोहे जिमचंद।
सतगुरु उपगारी ए, पूज रतन मुनि मैन ॥ सत० १ ॥

पन गरजारन बण अमोल, मैन सके गुण तोल
॥ सत० २ ॥

सावज गे कीधो परिहार, स निरदोषण आहार
॥ सत० ३ ॥

चार मत्ता कीधा निरदोष, निजर लगी ज्यांरी मोष
॥ सत० ४ ॥

पंच महाव्रत निरतिचार, सुमत गुपत सुख कार
॥ सत० ५ ॥

चाल भली गज हस्ती जेम, थांरे मुक्त रमण सुं प्रेम
॥ सत० ६ ॥

निरखत नैन धापे नहीं कोय, रतन सूरत सुख जोय
॥ सत० ७ ॥

सत गुरुजी री मेंमा विसेख, म्हारी जीभ छै एक
॥ सत० ८ ॥

समगत जोत उद्योत प्रकास, म्हारे कियो मिथ्यात रो नास
॥ सत० ६ ॥

'मंगतूला' मगनां मान मोड़, बन्दै बेकर जोड़
॥ सत० ६ ॥

समत चोरासी नागोर सहर, आप राखो अविचल महर
॥ सत० ११ ॥

—सतीजी श्री मगतुलाजी, मगनाजी

५

राग—आज नेण भर गुरमुख निरख्यो।

धन दिहाड़ो ने सुमरी घड़ी, ईं रतन मुनि रै पाय पड़ी।
पूज्य रतनचदजी गुरु भेट्या, म्हारे समगत जोत उद्योत करी
॥ धन० १ ॥

पंच महाव्रत रूड़ा राखे, सुमत गुपत चित सुध धरी।
दोष बयालीस टाल सिरोमण, इम्रत वाणी घन झरी
॥ धन० २ ॥

सांवरी सूरत मोहनी मूरत, जनम जरा रोग सोग मरी।
भव जीवां ने सतगुरु तारे, निरखत पातक दूर टरी
॥ धन० ३ ॥

भरत खेतर में पूज रतन सम, केइयक विरला साध सरी।
मुख अतिसुन्दर रूड़ा समभ्रमण, म्हारो हरखत हिवड़ो नेण ठरी
॥ धन० ४ ॥

तेज प्रताप पूज रो भारी, पाखंडी सब थरक डरी।
देश प्रदेशां सतगुरु सैमा, सिख सोमें ज्यांरी मोत्यांरी लरी
॥ धन० ५ ॥

एक जीभ सु' गुण कुण गावे, दीधी एक मंतोष जरी ।
'मंगतूला' मगना री यह विनती, सतगुरु सरणे श्रान खरी
॥ धन० ६ ॥
–सतीजी श्री मंगतूलाजी

५
तर्ज–होरी

मूसा तोय नेक लाज नहीं आइरे ॥ मूसा० आंकडी ॥
दूंद दुंदालारा वाहण उंदरा, ते आ कांई कुबद कमाइरे
॥ मूसा० १ ॥
मूसी कहे सुणों नी वालम, हूँ नहीं थारी लुगाई ।
तिरण तारण है रतन मुनीसर, ज्यांरी ते एडी चाईरे
॥ मूसा० २ ॥
मूमो तो हिवे उठ बोल्यो, सुण हे मूमी लुगाई ।
भाई बाई मेलियो छो मोकूं, जद मैं जीभ लगाई
॥ मूसा० ३ ॥
भाई बाई तो इण विधि बोल्या, सुण रे मूसा भाई
अरजी फेर करां छां म्हे तो, पूज जी जैंपुर जाई रे
॥ मूसा० ४ ॥
चोर हुवो तुरत नहीं मिरको, कोसाणा गांव रे मांई ।
सिंधुनाथ जोवत है तोकूं, पकड पूंछडी बाई रे ॥मू० ५॥

६
राग-

शुभ गति शरण तिहारो, हो रतन मुनि शुभ गति
शरण तिहारो ॥ टेर ॥
भव सागर में उरम्फ रहा हूँ, बांह पकर मोहि तारो ॥र० १॥
मैं अति दीन दया निधि तुम हो, नयन उघार निहारो ॥र०२॥
संभुनाथ कू लेरा लेलो, तो मानू हेत तिहारो ॥ र० ३ ॥

७
राग—तेईस

कब कर हो मन मेरो, ऐसो ॥ टेर ॥
छट दे छटे नेह हृदय सौं, साधन मीच बसेरो
॥ ऐसो० १ ॥
मात पिता बांधव सुत नारी, काल रह्या है घेरो ।
संभुनाथ को अपनो कलसो, रतन मुनि थांरो चेरो
॥ एसो० २ ॥

८
राग—तेईस

रहो मन, रतन मुनी के पास ॥ टेर ॥
पाव पलक की खबर न नाहीं, निकल जायगा सांस
॥ रहो १ ॥

झूठे मात पिता सब झूंठे, झूठे महल आवास ।
संभुनाथ के सांचे सतगुरु, सांची है जिन आस ॥ रहो २ ॥

९

राग-तेहीज

सतगुरु कब आवै सुनरी ।
वाणी सुणयां विना रतन सुनी री, वृथा जनम ही जावे ॥१॥
दिन नहीं चैन, रैन नहीं निद्रा, भोजन मूल न भावे ।
संभुनाथ के स्वामि देख्यां विनु, जिवडो अति दुःख पावे ॥ सत० २ ॥

१०

चाल-आजा रे घनश्याम

वारी हो रतनेम पूज, है सुखकारी,
मेटियो मिथ्यात भ्रम आपदा सारी ॥ टेर ॥
नैन वैन अैन सोभै सुरत है प्यारी,
कहा करूं गुण थोरी, बुध है जी हमारी ॥ वारी० १ ॥
अग उपंग मूल छेद, ग्यान भंडारी,
नय निखेप भंग जाल, पूरै गुणधारी ॥ वारी० २ ॥
सप्तवीस गुण अगाध, मैंमा भारी,
पाखण्ड कुं दूर करण, आये अवतारी ॥ वारी० ३ ॥
पांच सुमत तीन गुप्त, सुध ब्रह्मचारी,
रात दिवस ध्यान एक, प्रभु सूं तारी ॥ वारी० ४ ॥

वस्त्र पात्र आहार थानक, निरदोषण धारी,
बयालीस दोष टाल, लेत है आहारी ॥ धारी ५ ॥
सुमत गीमदोष बीत, गुण आचारी,
मिरख सुविनीत इमीर, थागन्यां (आज्ञा) धारी ॥ धारी ६ ॥
दरस इ एक इरख मन, गावे नर नारी,
मिहुनाथ सतगुरु री, जाऊं बलिहारी ॥ धारी ७ ॥

११

रतनमुनि है गुणधारी, ज्यांरी छो कांति अतिभारी
॥ रतन० टेर ॥
अनेक रवि जेष्ठ के ऊगे, पूज्य छ परत नहीं पूगे
॥ रतन० १ ॥
मूरत ज्यांरी मोहनी कहिये, निहारत नैन छक रहिये।
दरस्यां दुख दूर सब जाई, प्रभु की भक्ति ज्यां पाई
॥ रतन० २ ॥
देखे नहीं एसे मुनि नैना, अमी सम है ज्यांरा बैनां।
जीवन छ एसे समझावे, सुखे सोई पार होय जावे
॥ रतन ३ ॥
ज्यांरे है शिष्य सुखकारी, ज्यांरी तो बुद्ध अति भारी।
सिंहुनाथ चरन को चेरो, राखो पूज मोय अब नेरो
॥ रतन ४ ॥

पूज्य श्री रतन चन्द जी म०
के ५४ चौमासे

दोहा— कुल ब्रह्बाती श्रावगी उपना श्री रतनेश ॥
भव्य जीवां तारण तिरण, चात्रा देश विदेश ॥ १ ॥
संजम चवदे वर्ष का, लीधो जग सुख त्याग ॥
चौमासा चौपन किया, ते दाखू वर राग ॥ २ ॥

ढाल— तर्ज–मोटी हो जग में मोहनी ।
साहपुरे बडोदरे, भीलाडे हो दोय तीन चौमास ।
कीधा देश मेवाड़ में, बुद्धि निर्मल हो पढिया गुरु पास ॥ १ ॥
रतन मुनिचर मोटका, बिन मार्ग को कीधो उद्योत ॥
ऱ्या पुरुषों के प्रसाद से मैं पायी हो शुद्ध समकित ज्योत ॥ २ ॥
महामन्दिर चहलू रियां, रायपुर और जयपुर शुभ ठाम ॥
एक एक पाचों नगर में, चौमासे हो लीधो विसराम ॥ ३ ॥
चार चार अजमेर मेंडते, किशनगढ में हो दो तीन पीपाड़ ॥
दश नगिना इग्यार पाली किया, जोधाणे हो चौमासा बार ॥४॥
ए चौपन चातुर्मास में, भविजन ने हो तार्या समझाया ॥
पुर पाटन विचरिया घणा, वसु पावन हो कीधी मुनिराय ॥ ५ ॥
इनि महल नागौर में, चौमासो हो चौपनमों किधो ॥
रीया पीपाड पधारिया, तन चेष्टा हो वडा शिष्य लखि लीया । ६ ।
गढ जोधाणे नृपति तपे, हिन्दवाणी हो सूरज तप तेज ॥